राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

जून- 2026

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

www.swarnimumbai.com

साझा करने का विज्ञान

पेपर लीक का काला कारोबार

SOFAS

Comfortable seating
you can share!

FROM ₹9,500

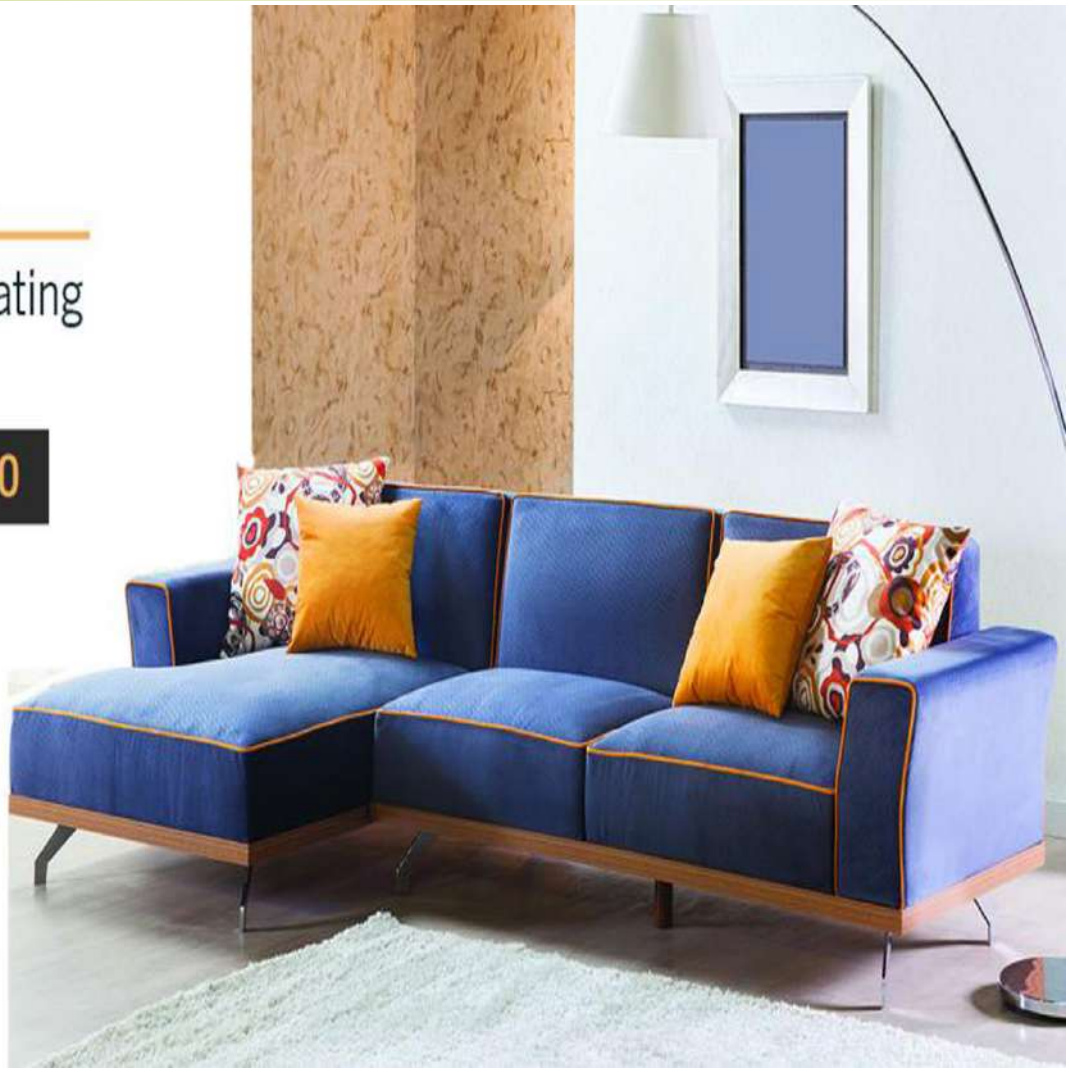

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

•वर्ष : 11 •अंक: 03 •मुंबई •जून 2026

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W), Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप. हाउसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (पश्चिम)-४२११०३, जिला ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित तथा श्री सोमेश प्रिन्टर्स, कल्याण द्वारा मुद्रित।
RNI No. : MAHHIN/2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

तुकाराम मुंढे का FDA एक्शन मोड!	05
मुंबई और उपनगरों में प्रशासन का 'हथौड़ा' ...	06
मुंबई में घर नहीं, सिर्फ EMI मिलती है	08
यूपी-बिहार में कुदरत का तांडव	14
पेपर लीक का कारोबारः करोड़ों छात्रों के भविष्य से खिलवाड़	16
पकवान	18
हिंदी के विरोध से सत्ता मिल सकती है लेकिन देश का...	20
कल्याण के २००० साल पुराने प्राचीन दुर्गाडी किले का ...	22
राशिफल	24
समंदर का 'सिकंदर': मुरुद जंजीरा दास्तान	26
सिनेमा	29
साझा करने का विज्ञान	30
ऑर्ट ऑफ गिविंग का १३वां संस्करण अन्तर्राष्ट्रीय ...	32
कीट डीम्ड विश्वविद्यालय भारत की ६वीं सर्वश्रेष्ठ यूनिवर्सिटी	34
सूखी तुलसी	36
ब्लैक रोज़	40
बर्मा का अचार	42
क्या सच में तकनीक ने बचपन छीन लिया?	49
महाराष्ट्र में ८९ हजार करोड़ का निवेश	52
अमेरिका-ईरान ऐतिहासिक समझौताः	54
अरबी की खेती	56

सुविचार :

'अगर रास्ता आसान दिख रहा है, तो संभव है कि वह आपको कहीं खास न ले जा रहा हो।'

संपादकीय

हाशिए से अधिकारों तक

भारत में सेक्स वर्क का मुद्दा हमेशा से कानूनी, सामाजिक, नैतिक और मानवीय बहसों के केंद्र में रहा है। एक ओर समाज का बड़ा वर्ग इसे नैतिकता के चश्मे से देखता है, तो दूसरी ओर मानवाधिकार कार्यकर्ता इसे आजीविका और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार से जोड़कर देखते हैं। इसी बहस के बीच जब सुप्रीम कोर्ट ने सेक्स वर्कर्स के अधिकारों को लेकर महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ और निर्देश जारी किए, तब यह सवाल और भी प्रासंगिक हो गया कि क्या यह फैसला वास्तव में उन लाखों लोगों की जिंदगी में बदलाव ला सकेगा जो वर्षों से समाज के हाशिए पर जीवन जीने को मजबूर हैं। भारत में सेक्स वर्क पूरी तरह अवैध नहीं है, लेकिन इससे जुड़ी कई गतिविधियाँ कानून के दायरे में आती हैं। यही कारण है कि इस पेशे से जुड़े लोग लंबे समय से एक कानूनी अस्पष्टता में जीवन बिता रहे हैं। उनके सामने सबसे बड़ी समस्या केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक पहचान और सम्मान की भी है। वे अक्सर पुलिस कार्रवाई, सामाजिक भेदभाव, हिंसा, स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों और कानूनी असुरक्षा का सामना करते हैं। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट का यह कहना कि 'सेक्स वर्क अपने आप में अपराध नहीं है' एक महत्वपूर्ण संवैधानिक संदेश माना गया।

अदालत ने अपने निर्देशों में स्पष्ट किया कि सेक्स वर्कर्स भी संविधान के अनुच्छेद २१ के तहत सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार रखते हैं। पुलिस को निर्देश दिया गया कि वह केवल किसी व्यक्ति के सेक्स वर्कर होने के आधार पर उसके खिलाफ कार्रवाई न करे। अदालत ने मीडिया को भी संवेदनशीलता बरतने की सलाह दी ताकि सेक्स वर्कर्स की पहचान सार्वजनिक न हो और उनकी निजता सुरक्षित रहे। यह निर्देश केवल कानूनी नहीं, बल्कि मानवीय दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि अक्सर समाज में सेक्स वर्कर्स को एक इंसान से पहले एक 'पहचान' के रूप में देखा जाता है। हालांकि सवाल यह है कि क्या अदालत के निर्देश जमीनी स्तर पर बदलाव ला पाएंगे? भारतीय समाज में किसी भी कानूनी सुधार की सफलता केवल कानून पर नहीं, बल्कि सामाजिक मानसिकता पर भी निर्भर करती है। आज भी अधिकांश सेक्स वर्कर्स अपने बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आवास जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहे हैं। कई महिलाएं अपने वास्तविक पेशे को छिपाकर जीवन बिताने के लिए मजबूर हैं क्योंकि उन्हें डर रहता है कि यदि उनकी पहचान उजागर हुई तो समाज उन्हें और उनके परिवार को बहिष्कृत कर देगा।

सेक्स वर्कर्स के जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि वे समाज के लिए अदृश्य हैं। चुनावों के दौरान राजनीतिक दल उनके अधिकारों की बात नहीं करते, नीतियों में उनकी जरूरतें प्राथमिकता नहीं बनतीं और मुख्यधारा की चर्चाओं में उनकी आवाज शायद ही कभी सुनाई देती है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले ने पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर इस समुदाय के मानवाधिकारों पर गंभीर चर्चा को जन्म दिया है। यह बदलाव अपने आप में महत्वपूर्ण है क्योंकि किसी भी सामाजिक सुधार की शुरुआत स्वीकार्यता और संवाद से होती है। लेकिन इस पूरे मुद्दे का एक दूसरा पक्ष भी है। भारत में सेक्स वर्क और मानव तस्करी को अक्सर एक ही नजर से देखा जाता है, जबकि दोनों अलग-अलग विषय हैं। कई विशेषज्ञों का मानना है कि वयस्क व्यक्ति की सहमति से किया गया सेक्स वर्क और जबरन देह व्यापार में स्पष्ट अंतर होना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश भी इसी अंतर को रेखांकित करते हैं। हालांकि यह भी सच है कि इस क्षेत्र में मानव तस्करी, नाबालिगों का शोषण और अपराधी गिरोहों की भूमिका जैसी गंभीर समस्याएँ मौजूद हैं। इसलिए केवल अधिकारों की बात करना पर्याप्त नहीं होगा; शोषण और अपराध के खिलाफ कठोर कार्रवाई भी उतनी ही आवश्यक है।

आर्थिक दृष्टि से देखें तो अधिकांश सेक्स वर्कर्स गरीबी, बेरोजगारी, घरेलू हिंसा, पारिवारिक विघटन या सामाजिक मजबूरियों के कारण इस पेशे में आते हैं। बहुत कम लोग इसे अपनी पहली पसंद के रूप में चुनते हैं। इसलिए यदि सरकार वास्तव में इस समुदाय के जीवन में बदलाव लाना चाहती है, तो उसे केवल कानूनी संरक्षण तक सीमित नहीं रहना चाहिए। शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य बीमा, आवास, बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच और वैकल्पिक रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना भी उतना ही जरूरी है। अन्यथा अदालत का फैसला सम्मान की बात तो करेगा, लेकिन आर्थिक वास्तविकताएँ जस की तस बनी रहेंगी। कोविड-१९ महामारी ने भी इस समुदाय की कमजोर स्थिति को उजागर किया था। लॉकडाउन के दौरान हजारों सेक्स वर्कर्स की आय अचानक बंद हो गई। उनके पास न सामाजिक सुरक्षा थी, न नियमित रोजगार का दर्जा और न ही पर्याप्त सरकारी सहायता। उस समय कई सामाजिक संगठनों ने मांग की थी कि सेक्स वर्कर्स को भी असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की तरह मान्यता दी जाए। सुप्रीम कोर्ट के हालिया दृष्टिकोण को उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

एक और महत्वपूर्ण प्रश्न महिलाओं की गरिमा और महिला सशक्तिकरण से जुड़ा है। कुछ नारीवादी समूह सेक्स वर्क को महिलाओं की स्वायत्तता और अपने शरीर पर अधिकार का प्रश्न मानते हैं, जबकि कुछ अन्य इसे महिलाओं के शोषण और पितृसत्तात्मक व्यवस्था का परिणाम बताते हैं। यही कारण है कि इस विषय पर सर्वसम्मति बनाना आसान नहीं है। लेकिन लगभग सभी पक्ष इस बात पर सहमत हैं कि किसी भी महिला या व्यक्ति के साथ हिंसा, उत्पीड़न और अमानवीय व्यवहार स्वीकार्य नहीं हो सकता। भारत में अक्सर कानून बदल जाते हैं, लेकिन सामाजिक व्यवहार बदलने में वर्षों लग जाते हैं। दलित अधिकार, महिला अधिकार या बाल श्रम जैसे अनेक मुद्दों पर यह अनुभव देखा गया है।

सेक्स वर्कर्स के मामले में भी यही चुनौती सामने है। सुप्रीम कोर्ट का फैसला एक कानूनी आधार तैयार करता है, लेकिन समाज में सम्मान, सुरक्षा और समान अवसर दिलाने के लिए व्यापक सामाजिक जागरूकता और सरकारी इच्छाशक्ति की आवश्यकता होगी। वास्तव में यह फैसला केवल सेक्स वर्कर्स के बारे में नहीं है; यह भारतीय लोकतंत्र की उस सोच की परीक्षा भी है जो हर नागरिक को गरिमा और समानता का अधिकार देने की बात करती है। यदि समाज और व्यवस्था इस फैसले की भावना को स्वीकार करते हैं, तो यह लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। लेकिन यदि इसे केवल एक न्यायिक टिप्पणी मानकर भुला दिया गया, तो उनकी स्थिति में बहुत बड़ा बदलाव आना मुश्किल होगा। ■

-मंगला नटराजन

भ्रामक विज्ञापनों का मायाजाल

तुकाराम मुंढे का FDA एक्शन मोड!

भ्रामक विज्ञापनों का सबसे बड़ा शिकार आम उपभोक्ता बनता है। ग्रामीण क्षेत्रों, कम शिक्षित वर्गों और बुजुर्गों पर इनका प्रभाव अधिक देखा जाता है। कई लोग स्वास्थ्य संबंधी उत्पादों के झूठे दावों पर भरोसा करके आर्थिक नुकसान उठाते हैं, तो कई बार स्वास्थ्य को भी खतरा पहुंचता है। डिजिटल युग में यह समस्या और गंभीर हो गई है। अब केवल टीवी या अखबार ही नहीं, बल्कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी 'पेड प्रमोशन' के नाम पर ऐसे उत्पादों की भरमार है जिनकी सत्यता पर सवाल उठते रहे हैं।

टीवी स्क्रीन पर मुस्कुराता फिल्म स्टार, क्रिकेट मैदान का लोकप्रिय चेहरा, सोशल मीडिया पर करोड़ों फॉलोअर्स वाला इन्फ्लुएंसर– जब ये लोग किसी उत्पाद की तारीफ करते हैं, तो आम उपभोक्ता उसे भरोसे के साथ खरीद लेता है। लेकिन सवाल यह है कि क्या हर विज्ञापन में दिखाए जाने वाले दावे सच होते हैं? क्या '१००% असरदार', 'सिर्फ सात दिन में परिणाम', 'वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित' या 'डॉक्टरों द्वारा अनुशंसित' जैसे दावे वास्तव में तथ्यों पर आधारित होते हैं? हाल के दिनों में महाराष्ट्र खाद्य एवं औषधि प्रशासन (FDA) के आयुक्त तुकाराम मुंढे द्वारा भ्रामक विज्ञापनों के खिलाफ शुरू की गई सख्त कार्रवाई ने इन सवालों को फिर से राष्ट्रीय बहस के केंद्र में ला दिया है।

भारत में विज्ञापन उद्योग हजारों करोड़ रुपये का बाजार बन चुका है। कंपनियां जानती हैं कि उपभोक्ता किसी अनजान वैज्ञानिक से ज्यादा अपने पसंदीदा अभिनेता या खिलाड़ी पर भरोसा करता है। यही कारण है कि कई बार उत्पाद की वास्तविक गुणवत्ता से अधिक महत्व उसके प्रचार को दिया जाता है। फेयरनेस क्रीम से लेकर हेल्थ सप्लीमेंट्स, आयुर्वेदिक दवाओं से लेकर वजन घटाने वाले उत्पादों तक, ऐसे अनेक उदाहरण सामने आए हैं जहां विज्ञापनों में किए गए दावे बाद में सवालों के घेरे में आए। उपभोक्ता को सपने बेचे गए, लेकिन परिणाम अक्सर उम्मीदों से बहुत दूर निकले। महाराष्ट्र FDA प्रमुख तुकाराम मुंढे ने स्पष्ट संकेत दिया है कि अब भ्रामक विज्ञापनों को केवल व्यावसायिक रणनीति मानकर नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। यदि कोई कंपनी या व्यक्ति ऐसे दावे करता है जो वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं हैं या उपभोक्ताओं को गुमराह करते हैं, तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

यह कदम केवल कंपनियों के लिए चेतावनी नहीं है, बल्कि उन प्रसिद्ध चेहरों के लिए भी संदेश है जो मोटी फीस लेकर किसी भी उत्पाद का प्रचार करने के लिए तैयार हो जाते हैं। आखिरकार, जब कोई सेलिब्रिटी किसी उत्पाद की विश्वसनीयता की गारंटी जैसा संदेश देता है, तो उसकी नैतिक जिम्मेदारी भी बनती है। यह तर्क अक्सर दिया जाता है कि सेलिब्रिटी सिर्फ विज्ञापन का हिस्सा होते हैं, उत्पाद की गुणवत्ता के लिए जिम्मेदार नहीं। कानूनी दृष्टि से यह तर्क कुछ हद तक सही हो सकता है, लेकिन नैतिक दृष्टि से सवाल फिर भी कायम रहता है। यदि कोई अभिनेता किसी दवा, हेल्थ ड्रिंक या वित्तीय योजना का प्रचार करता है और बाद में वह दावा झूठा साबित होता है, तो नुकसान केवल कंपनी की साख को नहीं होता, बल्कि उस सेलिब्रिटी की विश्वसनीयता भी प्रभावित होती है। लोकप्रियता केवल कमाई का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक प्रभाव की शक्ति भी है। इसलिए प्रभाव जितना बड़ा होगा, जिम्मेदारी भी उतनी ही बड़ी होनी चाहिए।

भ्रामक विज्ञापनों का सबसे बड़ा शिकार आम उपभोक्ता बनता है। ग्रामीण क्षेत्रों, कम शिक्षित वर्गों और बुजुर्गों पर इनका प्रभाव अधिक देखा जाता है। कई लोग स्वास्थ्य संबंधी उत्पादों के झूठे दावों पर भरोसा करके आर्थिक नुकसान उठाते हैं, तो कई बार स्वास्थ्य को भी खतरा पहुंचता है। डिजिटल युग में यह समस्या और गंभीर हो गई है। अब केवल टीवी या अखबार ही नहीं, बल्कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी 'पेड प्रमोशन' के नाम पर ऐसे उत्पादों की भरमार है जिनकी सत्यता पर सवाल उठते रहे हैं।

भारत में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम और विज्ञापन नियमन से जुड़े कई प्रावधान मौजूद हैं। विज्ञापन मानक परिषद (ASCI) भी समय-समय पर दिशा-निर्देश जारी करती है। फिर भी भ्रामक विज्ञापन लगातार सामने आते रहते हैं। इसका मुख्य कारण कमजोर निगरानी, लंबी कानूनी प्रक्रिया और उपभोक्ताओं में जागरूकता की कमी है। यही वजह है कि FDA जैसी संस्थाओं की सक्रियता महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि जांच और कार्रवाई लगातार होती रहे, तो कंपनियां और प्रचारक दोनों अपने दावों को लेकर अधिक जिम्मेदार बनेंगे। भ्रामक विज्ञापन केवल एक व्यावसायिक समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक चुनौती हैं। जब विज्ञापन भरोसे का व्यापार करने लगते हैं, तब उपभोक्ता सबसे बड़ा जोखिम उठाता है। तुकाराम मुंढे और महाराष्ट्र FDA की हालिया कार्रवाई इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, लेकिन स्थायी समाधान तभी संभव है जब कंपनियां ईमानदार हों, सेलिब्रिटी जिम्मेदार हों और उपभोक्ता जागरूक हों।

प्रश्न केवल यह नहीं है कि कौन सा विज्ञापन झूठा है। असली प्रश्न यह है कि क्या लोकप्रियता और मुनाफे की दौड़ में समाज के भरोसे को दांव पर लगाया जा सकता है? यदि जवाब 'नहीं' है, तो भ्रामक विज्ञापनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई समय की मांग ही नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक उपभोक्ता अधिकारों की रक्षा का अनिवार्य कदम है। ■

लेकिन सवाल अब भी वही – 'ये इमारतें बनी कैसे?'

मुंबई इन दिनों सिर्फ बारिश, ट्रैफिक और लोकल ट्रेन की भीड़ से नहीं जूझ रही बल्कि एक और 'पुरानी बीमारी' फिर सुर्खियों में है – अवैध निर्माण। कहीं आधी रात को बुलडोज़र चल रहे हैं...कहीं सुबह-सुबह दुकानों के शटर टूट रहे हैं...तो कहीं वर्षों से खड़ी इमारतों पर अचानक लाल निशान लगाकर नोटिस चिपकाए जा रहे हैं। बांद्रा, अंधेरी, भिवंडी, कल्याण, मीरा रोड, डोंबिवली और टिटवाला तक... प्रशासन का 'हथौड़ा अभियान' अब खुलकर दिखाई देने लगा है। लेकिन जमीन पर रहने वाले लोग पूछ रहे हैं – अगर निर्माण अवैध था, तो इतने साल तक अधिकारियों की आंखें बंद क्यों थीं? पश्चिमी मुंबई के पॉश इलाकों में गिने जाने वाले बांद्रा में हाल के दिनों में कई अवैध शेड, एक्सटेंशन और कमर्शियल स्ट्रक्चर हटाए गए। कार्रवाई के दौरान पुलिस बल, निगम अधिकारी और जेसीबी मशीनों की लंबी लाइनें देखी गईं।

एक स्थानीय दुकानदार ने कहा– 'जब दुकान बन रही थी तब कोई नहीं आया... टैक्स भी लिया गया... अब अचानक बोल रहे हैं कि अवैध है।' यही मुंबई का सबसे बड़ा विरोधाभास है। यहां अवैध निर्माण अक्सर 'खुलेआम' होते हैं...बिजली कनेक्शन मिल जाता है। पानी भी आने लगता है। कभी-कभी तो प्रॉपर्टी टैक्स तक वसूला जाता है। फिर अचानक किसी शिकायत, कोर्ट आदेश या राजनीतिक दबाव के बाद बुलडोज़र पहुंच जाता है।

टिटवाला और कल्याण में पूरा खेल 'सस्ते घर' का

मुंबई से दूर उपनगरों और ठाणे बेल्ट में कहानी थोड़ी अलग है। यहां अवैध निर्माण सिर्फ भ्रष्टाचार का मामला नहीं, बल्कि मजबूरी का भी है। टिटवाला, अंबरनाथ, बदलापुर और कल्याण जैसे इलाकों में हजारों परिवार कम कीमत में घर खरीदने के चक्कर में बिना पूरी कानूनी जांच के फ्लैट ले लेते हैं।

ब्रोकर कहता है – 'सभी पेपर क्लियर हैं।'

बिल्डर कहता है –'टेंशन मत लो, सब सेट है।' और खरीदार EMI में फंस जाता है। फिर एक दिन नोटिस आता है – 'निर्माण अवैध है।'

असलियत यह है कि मुंबई की महंगी रियल एस्टेट ने अवैध निर्माणों की पूरी 'इकोनॉमी' खड़ी कर दी है। जहां वैध घर करोड़ों में हैं। वहां गरीब और मिडिल क्लास आदमी जोखिम खरीदता है।

प्रशासन की कार्रवाई या सिर्फ दिखावा?

हर कुछ महीनों में प्रशासन 'बड़ी कार्रवाई' का दावा करता है। प्रेस रिलीज जारी होती है। फोटो खिंचते हैं। बुलडोज़र कैमरे के सामने

चलता है। लेकिन जमीनी सवाल वहीं रहता है– अवैध निर्माण शुरू ही कैसे हुआ? क्या स्थानीय अधिकारियों को जानकारी नहीं थी? क्या राजनीतिक संरक्षण नहीं था? क्या रिश्वत का नेटवर्क नहीं चलता?

मुंबई में यह आरोप नया नहीं है कि कई जगह अवैध निर्माण 'सिस्टम की मौन सहमति' से खड़े होते हैं। जब तक मामला शांत रहता है, सब चलता रहता है। जैसे ही कोर्ट, मीडिया या किसी हादसे का दबाव आता है। कार्रवाई शुरू हो जाती है। सबसे बड़ा डर – हादसे का।

मुंबई और आसपास के इलाकों में हर साल बारिश के दौरान इमारत गिरने की खबरें आती हैं। कई बार जांच में सामने आता है कि निर्माण नियमों के खिलाफ था। अतिरिक्त मंजिलें बनाई गई थीं। या घटिया सामग्री इस्तेमाल हुई थी। यानी अवैध निर्माण सिर्फ कानूनी मुद्दा नहीं। सीधा जान का खतरा है। फिर भी लोग ऐसे घरों में रहने को मजबूर हैं क्योंकि वैकल्पिक व्यवस्था नहीं है।

राजनीति भी पीछे नहीं

दिलचस्प बात यह है कि चुनाव आते ही कई नेता 'गरीबों के घर बचाने' की बात करने लगते हैं। जो निर्माण सालों तक गलत बताया जाता है। वही अचानक 'मानवीय मुद्दा' बन जाता है। यानी सिस्टम पहले निर्माण होने देता है। फिर कार्रवाई करता है। और बाद में राजनीति शुरू हो जाती है। बीच में पिसता कौन है? साधारण नागरिक।

मुंबई का असली संकट सिर्फ अवैध निर्माण नहीं। 'अनियोजित शहर' है। मुंबई लगातार फैल रही है। लेकिन प्लानिंग उसी रफ्तार से नहीं बढ़ी। लोग बढ़े। मांग बढ़ी। लेकिन सस्ते और वैध घर नहीं बढ़े। नतीजा–

बांद्रा, मुंबई
अवैध दुकानें और एक्सटेंशन तोड़े गए।

अंधेरी, मुंबई
गैरकानूनी रूप से बनाई गई अतिरिक्त मंजिलें ध्वस्त।

कल्याण, ठाणे
नालों और सरकारी जमीन पर बने निर्माण हटाए गए।

झोपड़ियां बढ़ीं
अवैध इमारतें बढ़ीं
संकरी गलियों में टॉवर खड़े हो गए
और प्रशासन 'तोड़ो अभियान' चलाता रहा।
यह समस्या सिर्फ कानून से हल नहीं होगी।

जब तक सस्ती हाउसिंग, पारदर्शी मंजूरी प्रक्रिया और भ्रष्ट अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई नहीं होगी, तब तक बुलडोज़र सिर्फ 'हेडलाइन' बनाते रहेंगे। मुंबई में अवैध निर्माणों पर चल रहा प्रशासन का हथौड़ा क्या सच में शहर को सुरक्षित बना रहा है। या फिर यह सिर्फ उस सिस्टम की सफाई है जिसने सालों तक आंखें बंद रखीं? क्योंकि सच यह है–

अवैध इमारतें रातोंरात नहीं बनतीं।
वे धीरे-धीरे बनती हैं। और अक्सर सिस्टम की नजरों के सामने ही बनती हैं। ■

विशेषज्ञ क्या कहते हैं?

• शहर में सस्ती और वैध हाउसिंग की कमी के कारण लोग अवैध निर्माणों की तरफ जाते हैं।
– शहरी विकास विशेषज्ञ

• भ्रष्टाचार और मिलीभगत पर सख्त कार्रवाई के बिना यह समस्या खत्म नहीं होगी।
– पूर्व नगर नियोजक

• कार्रवाई जरूरी है, लेकिन पुनर्वास और विकल्प देना भी उतना ही जरूरी है।
– सामाजिक कार्यकर्ता

मुंबई में घर नहीं, सिर्फ EMI मिलती है ३०० स्क्वायर फीट के लिए पूरी जिंदगी गिरवी

मुंबई आज भी लोगों को बुलाती है। हर दिन हजारों लोग इस शहर में उतरते हैं – कंधे पर बैग लेकर, जेब में रिज्यूमे लेकर और आंखों में वही पुराना सपना लेकर – 'एक दिन अपना घर होगा।' लेकिन मुंबई अब सपनों का शहर कम। और किस्तों का शहर ज्यादा बन चुका है।यहां नौकरी मिलने से पहले लोग PG ढूंढते हैं। और शादी से पहले home loan eligibility check करते हैं। कभी इस शहर में 'घर' सुरक्षा का प्रतीक था। अब तनाव का दूसरा नाम बन गया है। सुबह ७ बजे ठाणे, कल्याण, विरार, मीरा रोड, डोंबिवली, पनवेल और अंबरनाथ से लाखों लोग लोकल ट्रेन में लटककर निकलते हैं। कंधे पर लैपटॉप होता है। चेहरे पर नींद अधूरी होती है। लेकिन दिमाग में सिर्फ एक calculation चलती रहती है–

'इस महीने EMI, maintenance और school fees कैसे manage होगी?'

मुंबई में अब आदमी नौकरी नहीं करता, बल्कि EMI बचाने के लिए भागता है। शहर के बाहर से देखने वाले लोगों को लगता है कि मुंबई में रहने वाला हर इंसान 'सेटल' होगा। क्योंकि उसके पास नौकरी है।

AC office है…

High-rise building है…

लेकिन उन्हीं towers के अंदर हजारों लोग ऐसे हैं जो अपने ही फ्लैट में चैन से नहीं सो पाते।

क्योंकि वह घर उनका कम… बैंक का ज्यादा होता है।

२५-३० साल का home loan अब मुंबई में सामान्य बात हो चुकी है।

यानी एक इंसान अपनी जवानी बैंक को देकर ५०० या ६०० स्क्वायर फीट खरीदता है।

और irony देखिए –

इतनी बड़ी कीमत देने के बाद भी उसे space नहीं मिलता।

मुंबई में 'spacious flat' अब advertisement का शब्द है…

जमीन की सच्चाई नहीं।

यह शहर धीरे-धीरे इंसानों को डिब्बों में बदल रहा है।

एक कमरे में parents…

एक कोने में बच्चे…

work-from-home करने वाला employee balcony में laptop लगाकर बैठा है… और kitchen के ऊपर तक सामान भरा पड़ा है।

लेकिन builder brochure क्या कहता है?

'Luxury Lifestyle.'

'Sky Living.'

'Premium Experience.'

असलियत यह है कि मुंबई में middle class अब घर नहीं खरीदता…

वह सिर्फ location खरीदता है।

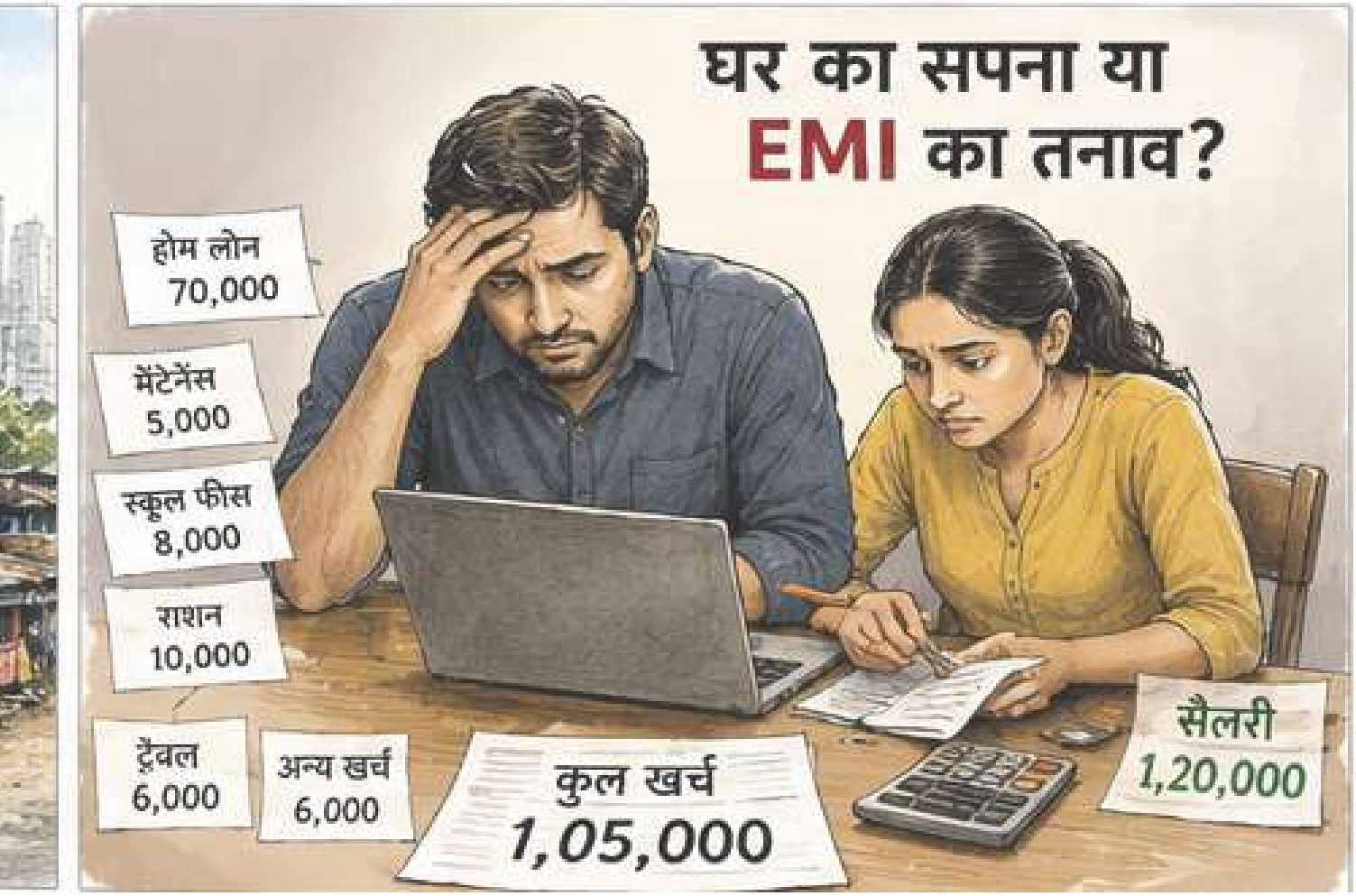

मुंबई में ३०० से ४०० स्क्वायर फीट के एक छोटे से 1BHK या वन-रूम-किचन (1RK) की कीमत आज कई इलाकों में ६० लाख से लेकर १.५ करोड़ रुपये तक छू रही है। आम आदमी जब इस 'माचिस की डिब्बी' जैसे घर को खरीदने का सपन ा देखता है, तो बैंक उसे २० से ३० साल का होम लोन थमा देता है। इसका सीधा मतलब यह है कि इंसान अपनी जवानी से लेकर रिटायरमेंट तक सिर्फ एक ही काम करता है–हर महीने की ५ तारीख को बैंक की EMI चुकाना।

क्योंकि घर के अंदर की जिंदगी तो लगातार छोटी होती जा रही है।

बांद्रा, अंधेरी, लोअर परेल और पवई जैसे इलाकों में towers आसमान छू रहे हैं...

लेकिन उन्हीं towers के नीचे taxi driver, delivery boy, security guard और office कर्मचारी अपने लिए किराए का कमरा भी मुश्किल से ढूंढ पाते हैं।

मुंबई की सबसे बड़ी क्रूरता यही है –

जो शहर चलाते हैं, वही इस शहर में ठीक से रह नहीं पाते।

एक delivery boy दिनभर उन luxury apartments में खाना पहुंचाता है जहां एक flat की कीमत ८-१० करोड़ है...

और रात में खुद ६ लोगों के साथ एक छोटे कमरे में लौटता है।एक corporate employee Instagram पर sea-facing café की photo डालता है...

लेकिन हर महीने salary आते ही उसका आधा पैसा loan और rent में गायब हो जाता है।

यानी मुंबई बाहर से glamorous दिखती

है…

लेकिन अंदर से लगातार लोगों को निचोड़ती रहती है।

और सबसे खतरनाक बात यह है कि अब लोगों ने इसे 'normal' मान लिया है।

४०-५० लाख का 1RK…

७० हजार monthly EMI…

२ घंटे का रोज travel…

No personal life…

No savings…

फिर भी लोग खुद को समझाते हैं–

'मुंबई में ऐसा ही होता है।'

असल में यह शहर धीरे-धीरे survival machine बन चुका है।

जहां आदमी कमाता कम है…

और बचाने की कोशिश ज्यादा करता है।

किराए पर रहने वालों की हालत और अजीब है। मुंबई में किराएदार होना मतलब हर ११ महीने में अपनी जिंदगी पैक करने के लिए तैयार रहना।

कहीं bachelors allowed नहीं…

कहीं बच्चों से दिक्कत…

कहीं pets से problem…

कहीं brokerage इतना कि लगता है घर नहीं, auction चल रहा हो।

और अगर किसी तरह घर मिल भी जाए…

तो deposit इतना कि middle class की आधी savings वहीं खत्म।

इसी desperation का फायदा builders और brokers की पूरी industry उठाती है।

मुंबई में property सिर्फ जरूरत नहीं…

एक psychological trap बन चुकी है।

लोगों को लगातार डर दिखाया जाता है–

'अभी नहीं लिया तो कभी नहीं मिलेगा…'

'Rates फिर बढ़ जाएंगे…'

'Last few units left…'

और आदमी जिंदगी की सबसे बड़ी financial commitment कर देता है।

फिर शुरू होती है असली कहानी।

Possession late…

OC pending…

Parking dispute…

Water issue…

Society maintenance अलग…

लेकिन तब तक buyer फंस चुका होता है।

मुंबई में हजारों लोग ऐसे हैं जिनकी salary बढ़ने से पहले उनकी EMI बढ़ जाती है।

यही कारण है कि इस शहर में अब couples बच्चे प्लान करने से पहले loan calculator देखते हैं।

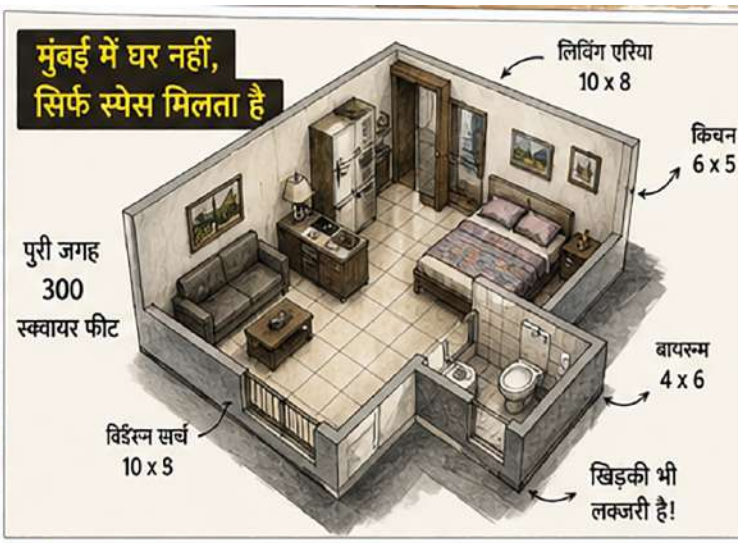

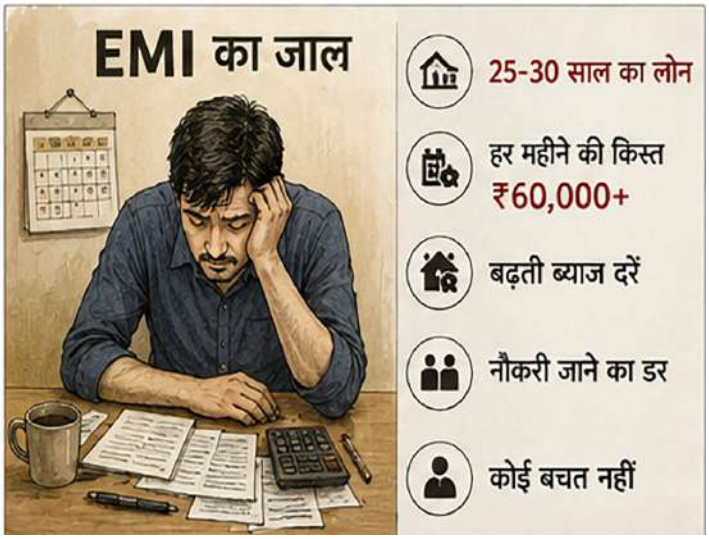

लोग नौकरी बदलने से डरते हैं...

Risk लेने से डरते हैं...

क्योंकि EMI किसी invisible हथकड़ी की तरह जिंदगी से बंध चुकी है।

और दूसरी तरफ शहर का दूसरा चेहरा भी है। एक तरफ करोड़ों के glass towers...

दूसरी तरफ धारावी, गोवंडी, मलाड, भांडुप और कुर्ला की तंग बस्तियां।

एक तरफ infinity pool...

दूसरी तरफ पानी भरने के लिए लाइन।

लेकिन सबसे बड़ा irony यह है कि कई बार झोपड़पट्टी में रहने वाला आदमी उस salaried employee से ज्यादा आजाद दिखता है जो ३० साल के loan में दबा है।

क्योंकि गरीब के पास कम से कम यह डर नहीं कि

'अगर नौकरी गई तो बैंक घर ले जाएगा।'

मुंबई अब सिर्फ economic divide नहीं दिखाती...

यह emotional divide भी दिखाती है।

यह शहर लोगों को धीरे-धीरे अकेला कर रहा है।

पहले घर परिवार का केंद्र होता था।

अब घर investment asset बन चुका है।

लोग square feet में जिंदगी माप रहे हैं।

बालकनी status symbol बन चुकी है।

और sunlight भी 'premium feature' कहलाने लगी है।

सबसे बड़ा सवाल यह नहीं कि मुंबई इतनी महंगी क्यों है।

असल सवाल यह है कि क्या यह शहर अब आम आदमी के रहने लायक बच भी रहा है?

क्योंकि अगर एक middle class परिवार को पूरी जिंदगी सिर्फ EMI भरने में निकालनी पड़े...

अगर बच्चे अपने parents को हमेशा तनाव में देखें...

अगर आदमी घर खरीदने के बाद भी खुद को सुरक्षित महसूस न करे...

तो फिर यह 'dream city' आखिर किसके लिए बची है?

मुंबई आज भी लोगों को मौका देती है।

लेकिन अब वह मौका बहुत महंगा हो चुका है। इतना महंगा...

कि यहां लोग घर खरीद लेते हैं...

लेकिन जिंदगी किराए पर चली जाती है।

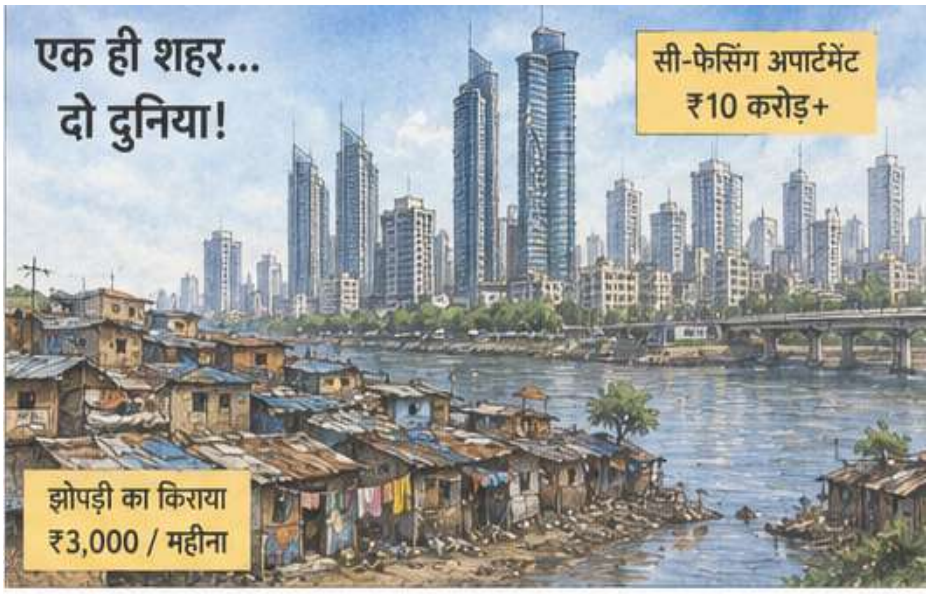

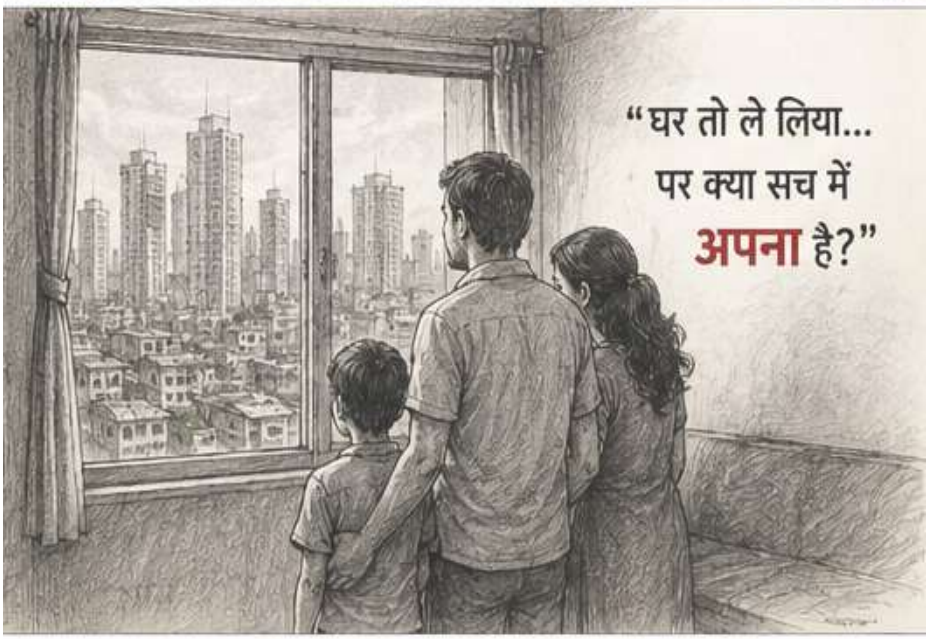

मुंबई में किराएदार होना मतलब हर ११ महीने में अपनी जिंदगी पैक करने के लिए तैयार रहना।

कहीं bachelors allowed नहीं...

कहीं बच्चों से दिक्कत...

कहीं pets से problem...

कहीं brokerage इतना कि लगता है घर नहीं, auction चल रहा हो। और अगर किसी तरह घर मिल भी जाए...

तो deposit इतना कि middle class की आधी savings वहीं खत्म।

मुंबई सपनों का शहर कहलाता है। लेकिन यहां सपनों से पहले EMI आती है। यह शहर लोगों को नौकरी देता है। पहचान देता है। लेकिन घर? घर यहां अब जरूरत नहीं, 'लक्ज़री' बन चुका है।

दादर में 1BHK करोड़ के पार...

मीरा रोड में ४०० स्क्वायर फीट के लिए ४५ लाख...

नवी मुंबई में किराया अलग...

मेंटेनेंस अलग...

पार्किंग अलग...

और salary?

वही पुरानी।

मुंबई में अब लोग घर नहीं खरीदते। वे २५-३० साल की किस्त खरीदते हैं। सुबह लोकल में सफर। रात EMI का डर

कुर्ला से चर्चगेट जाने वाला २९ साल का एक private employee कहता है–

'घर लेने के बाद जिंदगी नहीं बदली। सिर्फ तनाव बढ़ गया।'

यह अकेले उसकी कहानी नहीं।

मुंबई में लाखों लोग 'घर के मालिक' कम।

और 'बैंक के किरायेदार' ज्यादा हैं।

मुंबई का सबसे बड़ा झूठ – 'Own House = Success'

यह शहर लोगों को बचपन से सिखाता है–

खुद का घर लो

EMI भरो

फिर जिंदगी सेट

लेकिन सच क्या है?

३० साल का loan

नौकरी जाने का डर

बच्चों की फीस

मेडिकल खर्च

maintenance charges

society politics

यानी घर नहीं... financial trap।

मुंबई में आज 'स्पेस' सबसे महंगी चीज बन चुकी है।

जहां कभी परिवार 2BHK का सपना देखता था...

अब लोग 1RK को भी 'opportunity' बोलते हैं। Builder brochure में लिखा होता है:

luxury living

smart lifestyle

premium tower

असलियत?

खिड़की खोलो तो सामने दूसरी दीवार

बच्चों के खेलने की जगह नहीं

parking युद्ध

और society में भीड़

किराए पर रहने वालों की हालत और खराब

घर खरीदना मुश्किल है...

लेकिन किराए पर रहना भी सस्ता नहीं।

Problem:

५० हजार deposit

brokerage

yearly rent hike

'family only' rules

bachelors को मना

यानी मुंबई में किराएदार होना भी 'temporary citizen' जैसा हो गया है।

बिल्डर, ब्रोकर और सपनों का बाजार

मुंबई की real estate सिर्फ property market नहीं...

पूरी psychology है।

ब्रोकर पहले डर बेचता है–

'अभी नहीं लिया तो बाद में नहीं मिलेगा...'

फिर urgency बेचता है–

'Last few flats left...'

और buyer EMI में फंस जाता है।

कई projects में:

possession late

amenities अधूरी

legal issues

OC pending

लेकिन middle class के पास लड़ने का समय नहीं।

सबसे बड़ा सवाल – आखिर मुंबई इतनी महंगी क्यों?

कारण साफ हैं, जमीन कम

population ज्यादा

builder-politician nexus

redevelopment politics

निवेशकों की खरीदारी

black money

luxury projects पर ज्यादा focus

यानी शहर आम आदमी के लिए नहीं...

investment asset बनता जा रहा है। ■

-नीता सैनी, संजू सिंह

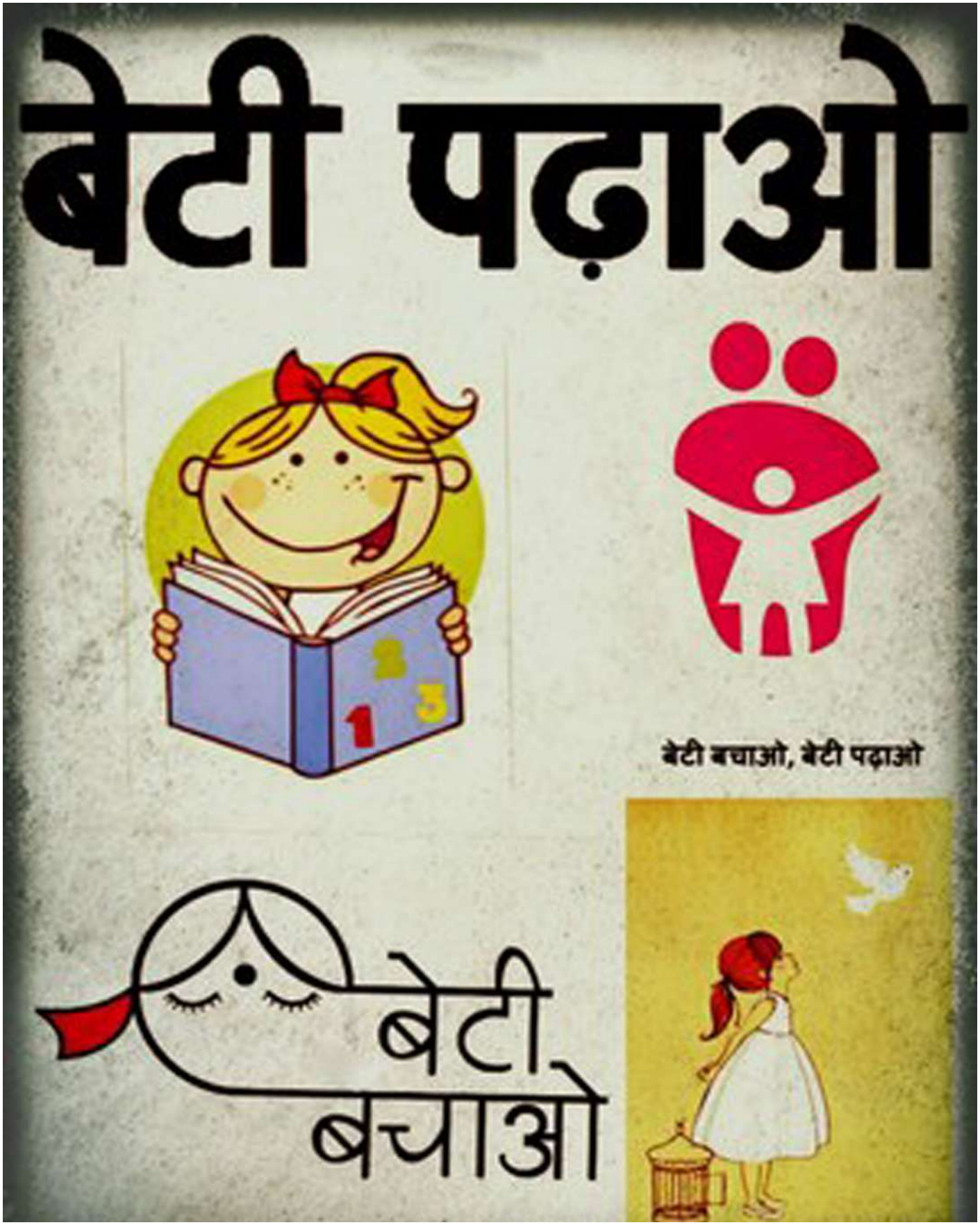
बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी
बचाओ

यूपी-बिहार में कुदरत का तांडवः आंधी और बारिश से भारी तबाही, ४८ की मौत

उत्तर प्रदेश में हाहाकारः सहारनपुर में गाड़ियां बहीं और हमीरपुर में पुल गिरा
बिहार में थमी रफ्तारः १०७ किमी की स्पीड से चली हवाएं, हवाई सेवाएं ठप
पंजाब में ओलावृष्टि से फसलों को नुकसान और सरकारों का एक्शन

उत्तर और पूर्वी भारत में सक्रिय हुए मजबूत पश्चिमी विक्षोभ (Western DistuRance) ने भीषण तबाही मचाई है। कई दिनों से जारी जानलेवा गर्मी और लू के बीच अचानक बदले इस मौसम ने जहां एक तरफ तापमान में भारी गिरावट दर्ज की है, वहीं दूसरी तरफ आंधी, मूसलाधार बारिश और आकाशीय बिजली गिरने से उत्तर प्रदेश और बिहार में भारी तबाही हुई है। इस प्राकृतिक आपदा के कारण दोनों राज्यों में अब तक कुल ४८ लोगों की जान जा चुकी है, जबकि पंजाब, हरियाणा और दिल्ली-एँ समेत उत्तर भारत के कई अन्य राज्य भी इसकी चपेट में हैं। मौसम विभाग ने स्थिति को देखते हुए कई जिलों के लिए रेड और ऑरेंज अलर्ट जारी कर दिया है। उत्तर प्रदेश में चक्रवाती तूफान ने सबसे ज्यादा कहर ढहाया है, जहां अलग-अलग हादसों में ३४ लोगों की मौत हो चुकी है। सहारनपुर के प्रसिद्ध सिद्धपीठ शाकंभरी देवी मंदिर क्षेत्र में पहाड़ों पर हुई मूसलाधार बारिश के कारण पहाड़ी नदी में अचानक भयंकर बाढ़ आ गई। पानी की रफ्तार इतनी तेज थी कि श्रद्धालुओं के बीच भगदड़ मच गई, जिसमें दो महिला श्रद्धालुओं की डूबने से मौत हो गई और वहां खड़ी १० से अधिक गाड़ियां और ट्रैक्टर पानी के तेज बहाव में बह गए। इसके अलावा, हमीरपुर के ललपुरा इलाके में बेतवा नदी पर बन रहा ९० करोड़ की लागत का एक निर्माणाधीन पुल तेज आंधी के दबाव को झेल नहीं सका और उसका एक हिस्सा भरभरा कर गिर गया, जिसके मलबे में दबने से ६ मजदूरों की दर्दनाक मौत हो गई। राज्य के अन्य जिलों जैसे प्रयागराज, फतेहपुर और बांदा में भी बिजली गिरने और दीवारें ढहने से कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है।

पड़ोसी राज्य बिहार में भी शुक्रवार को आए इस तूफान ने जनजीवन को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया। राजधानी पटना समेत राज्य के कई हिस्सों में १०७ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तूफानी हवाएं चलीं, जिससे वज्रपात और पेड़ गिरने के कारण १४ लोगों की मौत हो गई। इस खराब मौसम और बेहद कम विजिबिलिटी का सबसे बुरा असर हवाई यातायात पर पड़ा। पटना के जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आने वाली ४ फ्लाइट्स को आपातकालीन स्थिति में वाराणसी और कोलकाता जैसे नजदीकी एयरपोर्ट्स पर डायवर्ट करना पड़ा, जबकि १८ से अधिक उड़ानें अपने तय समय से घंटों लेट रहीं। शहर के वीवीआईपी इलाकों में दशकों पुराने विशाल पेड़ उखड़कर सड़कों और गाड़ियों पर गिर गए, जिससे घंटों तक ट्रैफिक जाम की स्थिति बनी रही। इस मौसमी सिस्टम का असर पंजाब और हरियाणा में भी देखा गया, जहां बठिंडा और लुधियाना जैसे क्षेत्रों में भारी ओलावृष्टि हुई। अचानक गिरे ओलों के कारण खेतों में खड़ी और मंडियों में रखी किसानों की फसलों को भारी नुकसान पहुंचा है। दिल्ली-एँ में भी धूल भरी आंधी के साथ हुई बारिश ने लोगों को गर्मी से राहत तो दी, लेकिन कई जगह बिजली के खंभे उखड़ने से बत्ती गुल रही। इस आपदा पर संज्ञान लेते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने गहरा दुख व्यक्त किया है। यूपी सरकार ने मृतकों के परिवारों को ५-५ लाख रुपये और बिहार सरकार ने ४-४ लाख रुपये की तत्काल आर्थिक सहायता देने का एलान किया है। मौसम विभाग का अनुमान है कि यह मौसमी सिस्टम अगले ४८ घंटों तक सक्रिय रह सकता है, इसलिए लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है। ■

JOB VACANCY

ADVERTISING & SALES EXECUTIVE

PRINT & DIGITAL MAGAZINE

Location: Mumbal (Field + Office)

Employment Type: Full-time / Part-time

ROLE & RESPONSIBILITIES

- Identify and approach potential advertisers across sectors (corpotates, SMEs, Government, Institutions)
- Present advertising options and packages for the magazine (print & digital)
- Maintain strongrelationships with existing and new clients to ensure repeat business

SALARY & BENEFITS

- Base salary- high commission structure
- Potential earnings ₹40,000–50.000/mont for achieving targets
- Performance-based incentives and bonuses

HOW TO APPLY:

Send a **swarnim mmbai@yahoo.in**

To: **9082391833**

SWARNIM MUMBAI

पेपर लीक का कारोबार:

करोड़ों छात्रों के भविष्य से खिलवाड़

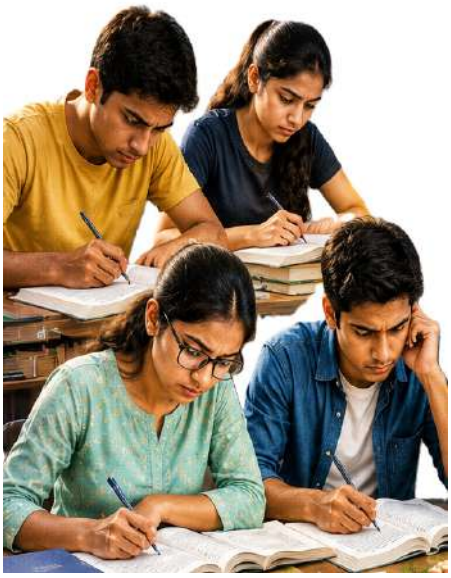

भारत दुनिया की सबसे युवा आबादी वाले देशों में से एक है। यह युवा शक्ति ही देश की सबसे बड़ी पूंजी है। लेकिन यदि यही युवा अपनी मेहनत और प्रतिभा पर विश्वास खोने लगे, तो यह किसी भी आर्थिक या राजनीतिक संकट से अधिक गंभीर स्थिति होगी। नीट और यूपीएससी जैसी परीक्षाओं से जुड़े विवाद केवल समाचार नहीं हैं। वे हमें चेतावनी दे रहे हैं कि यदि परीक्षा प्रणाली की पारदर्शिता और विश्वसनीयता को तुरंत मजबूत नहीं किया गया, तो आने वाले वर्षों में प्रतिभा और परिश्रम की जगह अविश्वास और निराशा ले सकती है। प्रश्न केवल इतना नहीं है कि पेपर किसने लीक किया। असली प्रश्न यह है कि क्या हम अपने युवाओं का विश्वास बचा पाएंगे? क्योंकि किसी राष्ट्र का भविष्य प्रश्नपत्रों में नहीं, बल्कि उन युवाओं के विश्वास में छिपा होता है जो उन्हें हल करने बैठते हैं।

भारत को युवाओं का देश कहा जाता है। हर वर्ष करोड़ों छात्र अपने सपनों को साकार करने के लिए विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल होते हैं। कोई डॉक्टर बनना चाहता है, कोई प्रशासनिक अधिकारी, तो कोई इंजीनियर। इन युवाओं के लिए परीक्षा केवल एक टेस्ट नहीं होती, बल्कि वर्षों की मेहनत, त्याग, उम्मीद और संघर्ष का परिणाम होती है। लेकिन जब इन्हीं परीक्षाओं के प्रश्नपत्र परीक्षा से पहले बाजार में बिकने लगें, जब मेहनत की जगह पैसे और पहुंच सफलता की कुंजी बन जाए, तब केवल एक परीक्षा नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र का भविष्य खतरे में पड़ जाता है।

हाल ही में देश की दो सबसे प्रतिष्ठित परीक्षाओं–नीट (NEET), यूपीएससी (UPSC)–व अन्य परीक्षाओं से जुड़ी पेपर लीक की खबरों ने पूरे देश को झकझोर दिया है। लाखों छात्रों और उनके परिवारों के मन में एक ही सवाल है–क्या अब मेहनत का कोई मूल्य नहीं रह गया है? पेपर लीक विवाद के बीच शिक्षा मंत्रालय के शास्त्री भवन में लगी आग ने मामले को और रहस्यमय बना दिया। कई समाचार रिपोर्टों और सोशल मीडिया पोस्टों में यह दावा किया गया कि आग में महत्वपूर्ण परीक्षा संबंधी दस्तावेज और रिकॉर्ड नष्ट हो गए। हालांकि सरकार और संबंधित अधिकारियों ने ऐसे दावों की पुष्टि नहीं की, लेकिन समय और परिस्थितियों ने लोगों के मन में संदेह अवश्य पैदा किया। पहले से ही परीक्षा प्रणाली की पारदर्शिता पर सवाल उठ रहे थे, ऐसे में इस घटना ने अविश्वास की भावना को और गहरा कर दिया। आम नागरिकों और छात्रों के बीच यह चर्चा तेज हो गई कि आखिर बार-बार ऐसी घटनाएं क्यों हो रही हैं और क्या व्यवस्था सचमुच पूरी तरह सुरक्षित है।

किसी परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक होना केवल एक प्रशासनिक गलती नहीं है। यह उन लाखों विद्यार्थियों के सपनों की चोरी है, जिन्होंने दिन-रात मेहनत कर अपनी तैयारी की होती है। कल्पना कीजिए, एक छात्र गांव के छोटे से कमरे में बिजली कटौती के बीच पढ़ाई करता है। उसके माता-पिता अपनी जरूरतें कम करके उसकी कोचिंग और किताबों का खर्च उठाते हैं। दूसरी ओर कोई व्यक्ति लाखों रुपये देकर प्रश्नपत्र पहले ही प्राप्त कर लेता है। ऐसे में परीक्षा का परिणाम प्रतिभा का नहीं, बल्कि भ्रष्ट व्यवस्था का प्रतीक बन जाता है।

१.सिर्फ एक पेपर नहीं, करोड़ों सपनों की चोरी
२.यूपीएससी पर उठे सवाल और बढ़ी चिंता
३.आखिर बार-बार क्यों हो रहे हैं पेपर लीक?
४.सबसे बड़ा नुकसान मानसिक स्तर पर
५.शिक्षा नहीं, भरोसे का संकट

नीट परीक्षा में हर वर्ष २० लाख से अधिक विद्यार्थी शामिल होते हैं। इनमें से अधिकांश मध्यमवर्गीय और ग्रामीण परिवारों से आते हैं। उनके लिए मेडिकल कॉलेज में प्रवेश केवल करियर नहीं, बल्कि पूरे परिवार के सामाजिक और आर्थिक उत्थान का सपना होता है। ऐसे में पेपर लीक की खबर उनके विश्वास को गहरी चोट पहुंचाती है। यूपीएससी को देश की सबसे विश्वसनीय और पारदर्शी परीक्षा माना जाता रहा है। इसी परीक्षा के माध्यम से आईएएस, आईपीएस और अन्य शीर्ष प्रशासनिक अधिकारी चुने जाते हैं। यदि इस स्तर की परीक्षा की सुरक्षा पर भी सवाल उठने लगें, तो यह केवल शिक्षा व्यवस्था का नहीं, बल्कि शासन-प्रशासन की विश्वसनीयता का भी संकट है।

यूपीएससी की साख दशकों की पारदर्शिता और कठोर प्रक्रिया से बनी है। इसलिए इससे जुड़ी किसी भी अनियमितता की खबर देश के नागरिकों के मन में गंभीर चिंता पैदा करती है। लोग पूछने लगे हैं कि यदि भविष्य के प्रशासकों के चयन की प्रक्रिया ही संदिग्ध हो जाए तो फिर व्यवस्था पर विश्वास कैसे कायम रहेगा?

सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि इतनी तकनीकी प्रगति के बावजूद प्रश्नपत्र सुरक्षित क्यों नहीं रह पा रहे? इसके पीछे कई कारण दिखाई देते हैं–

पहला, परीक्षा प्रणाली में शामिल कुछ लोगों की मिलीभगत। बिना अंदरूनी सहयोग के बड़े स्तर पर पेपर लीक होना लगभग असंभव माना जाता है।

दूसरा, करोड़ों रुपये के अवैध कारोबार का विकसित हो जाना। कई राज्यों में पेपर लीक अब संगठित अपराध का रूप ले चुका है, जहां दलाल, कोचिंग नेटवर्क और तकनीकी विशेषज्ञ मिलकर पूरे गिरोह का संचालन करते हैं।

तीसरा, जवाबदेही की कमी। अधिकांश मामलों में छोटे कर्मचारियों पर कार्रवाई होती है, लेकिन बड़े नेटवर्क तक जांच शायद ही पहुंच पाती है।

चौथा, तकनीकी सुरक्षा का अपर्याप्त उपयोग। कई जगह अभी भी प्रश्नपत्रों के प्रबंधन में पुरानी प्रक्रियाओं पर अत्यधिक निर्भरता दिखाई देती है।

पेपर लीक का प्रभाव केवल परीक्षा परिणाम तक सीमित नहीं रहता। इसका सबसे गंभीर असर छात्रों के मनोबल पर पड़ता है।

जब बार-बार परीक्षाएं रद्द होती हैं, जांच बैठती है, परिणाम विवादों में घिरते हैं, तब युवाओं में निराशा बढ़ने लगती है। उन्हें लगने लगता है कि उनकी मेहनत का कोई मूल्य नहीं है। कई विद्यार्थी अवसाद, तनाव और मानसिक दबाव का सामना करते हैं। देश में पहले से ही प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव बहुत अधिक है। ऐसे में पेपर लीक जैसी घटनाएं युवाओं के आत्मविश्वास को और कमजोर करती हैं। यह स्थिति किसी भी लोकतांत्रिक समाज के लिए चिंताजनक है।

वास्तव में यह केवल शिक्षा व्यवस्था का संकट नहीं है, बल्कि भरोसे का संकट है। जब किसी परीक्षा पर विश्वास खत्म होता है, तो युवाओं का व्यवस्था पर विश्वास भी कमजोर होने लगता है। वे सोचने लगते हैं कि सफलता का रास्ता मेहनत नहीं, बल्कि पैसे, संपर्क और भ्रष्टाचार से होकर गुजरता है। यह सोच किसी भी राष्ट्र के लिए अत्यंत खतरनाक है। एक देश की प्रगति उसकी प्रतिभा पर निर्भर करती है। यदि प्रतिभाशाली युवाओं को यह महसूस होने लगे कि व्यवस्था निष्पक्ष नहीं है, तो देश की सामाजिक और आर्थिक उन्नति भी प्रभावित होती है।

केवल जांच समितियां बनाना या कुछ गिरफ्तारियां कर देना पर्याप्त नहीं होगा। आवश्यकता है व्यापक सुधारों की। प्रश्नपत्र निर्माण से लेकर वितरण तक पूरी प्रक्रिया को अत्याधुनिक डिजिटल सुरक्षा से जोड़ना होगा। संवेदनशील चरणों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित निगरानी प्रणाली लागू की जा सकती है। पेपर लीक को सामान्य अपराध नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर के आर्थिक और सामाजिक अपराध की श्रेणी में रखा जाना चाहिए। दोषियों के लिए कठोर दंड और त्वरित न्याय सुनिश्चित होना चाहिए। इसके साथ ही परीक्षा एजेंसियों की जवाबदेही तय करनी होगी। यदि किसी परीक्षा में सुरक्षा चूक होती है तो संबंधित अधिकारियों की जिम्मेदारी भी निर्धारित होनी चाहिए। ■

-एम. पाठारे

मिर्ची वडा

सामग्रीः
४ बड़े आलू उबले हुए
६-८ बड़ी हरी मिर्च (भजिया वाली)
१ छोटा चम्मच राई
१/२ छोटा चम्मच जीरा
१ छोटा चम्मच सौंफ
१/२ छोटा चम्मच हल्दी
१ छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर
१ छोटा चम्मच धनिया पाउडर
नमक स्वादानुसार
हरा धनिया
१ कप बेसन
२ बड़े चम्मच चावल का आटा
१/४ छोटा चम्मच हल्दी
१/२ छोटा चम्मच अजवाइन
नमक स्वादानुसार
पानी आवश्यकतानुसार
तेल

विधिः

आलू मसाला तैयार करें। कढ़ाई में थोड़ा तेल गरम करें। राई, जीरा और सौंफ डालें।अब मसाले डालकर उबले आलू मिलाएं। अच्छी तरह मैश करें और हरा धनिया डालें।मिश्रण ठंडा होने दें। मिर्च तैयार करें। बड़ी हरी मिर्च को बीच से चीरा लगाएं। बीज निकाल दें ताकि तीखापन कम हो जाए।

आलू मसाला भर दें। बैटर बनाएं। बेसन, चावल का आटा, नमक, हल्दी और अजवाइन मिलाएं। थोड़ा-थोड़ा पानी डालकर गाढ़ा घोल तैयार करें। कढ़ाई में तेल गरम करें।भरी हुई मिर्च को बैटर में डुबोकर तेल में डालें। मध्यम आंच पर सुनहरा और कुरकुरा होने तक तलें।

परोसने का सही तरीकाः शेजवान फ्राइड राइस को मंचूरियन या चिली पनीर के साथ परोस सकते हैं। मिर्ची वडा को हरी चटनी, इमली की चटनी और गरम चाय के साथ खाएं।

शेजवान फ्राइड राइस

सामग्रीः
२ कप पके हुए ठंडे चावल
१ बड़ा चम्मच तेल
१/२ कप बारीक कटी पत्ता गोभी
१/४ कप गाजर
१/४ कप शिमला मिर्च
२ हरी प्याज (स्प्रिंग अनियन)
१ छोटा प्याज बारीक कटा
२ बड़े चम्मच शेजवान सॉस
१ बड़ा चम्मच सोया सॉस
१ छोटा चम्मच रेड चिली सॉस
१/२ छोटा चम्मच काली मिर्च
स्वादानुसार नमक
१ छोटा चम्मच सिरका
१ बड़ा चम्मच लहसुन बारीक कटा
१ छोटा चम्मच अदरक कटा
२ बड़े चम्मच तेल

विधिः कढ़ाई या वोक को तेज आंच पर गरम करें। तेल डालें और उसमें लहसुन व अदरक भूनें। अब प्याज डालकर हल्का क्रंच रहने तक पकाएं। सारी सब्जियां डालें और तेज आंच पर २-३ मिनट चलाएं। अब शेजवान सॉस, सोया सॉस, रेड चिली सॉस और सिरका डालें। मसाले मिलाने के बाद ठंडे चावल डालें। तेज आंच पर अच्छे से टॉस करें ताकि सॉस हर दाने पर चढ़ जाए। ऊपर से स्प्रिंग अनियन डालकर गरमागरम परोसें।

पोहा कटलेट

सामग्री :
पोहा - ०१ कप,
ब्रेड का चूरा - ०१ कप,
मैदा - ०३ बड़े चम्मच,
आलू - ०२ नग (उबले हुए),
प्याज - ०१ नग (बारीक कटा हुआ,)
लाल मिर्च - ०१ छोटा चम्मच,
अदरक - ०१ इंच टुकड़ा (कद्दूकस किया हुआ),
हरी मिर्च - ०१ नग (बारीक कटी हुई),
हरी धनिया - ०२ बड़े चम्मच (बारीक कटी हुई),
काली मिर्च - १/४ छोटा चम्मच,
नमक- स्वादानुसार।
विधि :

सबसे पहले पोहा को एक बर्तन में लेकर धो लें। उसके बाद उसका पानी पूरी तरह से निकाल दें और रख दे। अब उबले हुए आलू को छील कर अच्छी तरह से मैस कर लें। साथ ही अब १/४ कप पानी में मैदा डाल कर अच्छी तरह से घोल लें। आलू और पोहा को आपस में मिला लें। उसमें प्याज, अदरक, हरी मिर्च, लाल मिर्च पाउडर, नमक और हरी धनिया डालें और आटे की तरह गूंथ लें। थोड़ा सा मिश्रण लेकर उसे कटलेट के आकार का बना लें। इसके बाद उसे मैदा के घोल में डिप करें और फिर उस पर ब्रेड का चूरा लपेट लें। इसके बाद कटलेट को हाथों से चारों ओर से दबा दें, जिससे ब्रेड का चूरा उसमें अच्छी तरह से चिपक जाए। इसी तरह से सारे कटलेट तैयार कर लें और फिर उन्हें २० मिनट के लिए ढक कर रख दें। अब एक नॉन स्टिक पैन लें और उसमें एक चम्मच तेल डाल कर गर्म करें। उसके बाद पैन में कटलेट डालें और धीमी आंच में उलट-पुलट कर गोल्डेन ब्राउन होने तक सेंक लें। आपके स्वादिष्ट और क्रिस्पी पोहा कटलेट तैयार है। इन्हें हरी धनिया की चटनी और इमली की मीठी चटनी के साथ सर्व करें।

वेज बर्गर

सामग्री
पाव - ०४ नग,
मैदा - ०१ कप,
ब्रेड का चूरा - ०१ कप,
आलू- ०३ नग (उबले हुए),
टमाटर - ०१ मध्यम
खीरा - ०१ मध्यम
प्याज - ०१ मध्यम
पत्तागोभी - ०१ कप
हरी मिर्च - २-३ नग
अदरक - ०१ चम्मच
मक्खन - आवश्यकतानुसार,
तेल - आवश्यकतानुसार,
नमक - स्वादानुसार।
विधि :

सबसे पहले एक बर्तन में पानी डालकर उसमें पत्तागोभी को उबाल लें। उबलने के बाद का इसका पानी निकाल दें और अलग रख दें। अब उबले आलू और पत्ता गोभी को मैश कर लें। मिश्रण में हरी मिर्च, अदरक और नमक डालें और अच्छी तरह मिला लें। तैयार मिश्रण को ४ भागों में बांट लें और हथेली की मदद से इसकी गोल टिक्की बना लें। साथ ही मैदा को छान कर पानी की मदद से उसका गाढ़ा घोल तैयार कर लें। अब कड़ाही में तेल गर्म करें।

आलू की टिक्कियों को मैदे के घोल में डुबोकर ब्रेड के चूरे में लपेट लें। तेल गर्म होने पर और टिक्कियों को तेल में डालें और मीडियम आंच पर ब्राउन होने तक तल लें। अब चाकू की मदद से पाव/बन को बीच से काटकर दो भाग कर लें। दोनों टुकड़ों पर अंदर की ओर मक्खन लगा लें। फिर नीचे वाले टुकडे के ऊपर टोमैटो सॉस की एक पर्त लगायें। उसके ऊपर आलू की एक टिक्की रख दें। टिक्की के ऊपर १ टमाटर की स्लाइस, २ खीरे की स्लाइस और २ प्याज की स्लाइस रखें। उसके ऊपर थोड़ा सा टोमैटो सॉस डालें और फिर ऊपर से पाव/बन का दूसरा हिस्सा रख दें। इसी तरह से सारे बर्गर तैयार कर लें। स्वादिष्ट वेज बर्गर तैयार है।

हिंदी के विरोध से सत्ता मिल सकती है लेकिन देश का ज्ञान समाप्त हो जाएगाः मुख्यमंत्री फडणवीस

हिंदी पत्रकारिता के २०० वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर मुंबई हिंदी पत्रकार संघ द्वारा २ जून को आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि भाषा विवाद का माध्यम नहीं हो सकती। हिंदी इस देश की संपर्क सूत्र है। भाषाओं के नाम पर विवाद पैदा कर वोट और सत्ता तो हासिल की जा सकती है लेकिन इससे देश का ज्ञान समाप्त हो जाएगा और इसे हम आने वाली पीढ़ियों तक नहीं पहुंचा पाएंगे। इसलिए विशेष रूप से हिंदी जैसी भाषा का सम्मान होना चाहिए जिसने हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई में बहुत बड़ा योगदान दिया है। बहुभाषी होना एक योग्यता है। हमें अपनी भाषा तो सीखनी ही चाहिए, क्योंकि मातृभाषा छोड़ने पर हम एक बहुत ही नैसर्गिक ज्ञान प्रक्रिया से बाहर हो जाते हैं। लेकिन अगर मातृभाषा के अलावा अगर हम देश की कोई और भाषा सीखेंगे तो देश का ज्ञान बटोर पाएंगे। साथ ही उन्होंने कहा कि दुनिया के जिन देशों ने विकास किया है उन्होंने अपनी मातृभाषाओं में ही पढ़ाई की है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि पत्रकारिता के सामने आज बड़ी चुनौतियां हैं क्योंकि खबरों की विश्वसनीयता को लेकर संकट है। खासकर डिजिटल मीडिया आने के बाद हालात चुनौती पूर्ण हुए हैं।

पत्रकारिता के बदलते स्वरूप पर टिप्पणी करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, डिजिटल और सोशल मीडिया के विस्तार के कारण सूचना प्रसारण का स्वरूप बदल गया है। हालांकि, कोई समाचार कितनी तेजी से प्रसारित हुआ, इससे अधिक महत्वपूर्ण उसकी सत्यता और विश्वसनीयता है। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में पत्रकारिता की भूमिका महत्वपूर्ण है। समाज जीवन में मूल्यों के संरक्षण तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं को सशक्त बनाने का कार्य पत्रकारिता करती है। बदलते समय में भी पत्रकारिता को अपने मूलभूत मूल्यों को संरक्षित रखते हुए समाजहित की भूमिका निभाते रहना चाहिए।

कार्यक्रम में बतौर विशेष अतिथि मौजूद उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि हिंदी और देश की दूसरी भाषाओ में कोई टकराव नहीं है और हिंदी तभी आगे बढ़ेगी जब क्षेत्रीय भाषाएं आगे बढ़ेगी। उन्होंने भी मातृभाषा में पढ़ाई की वकालत की। मुंबई भाजपा अध्यक्ष और विधायक अमित साटम ने कहा कि हिंदी एक धागा है जो पूरे देश को बांधता है, लेकिन इसका विरोध कुछ लोगों के लिए फैशन बन

विश्व के अधिकांश विकसित देशों में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से ज्ञान को अधिक प्रभावी ढंग से आत्मसात किया जा सकता है। इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मातृभाषा को प्राथमिकता देने की नीति देश के विकास के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। उन्होंने सभी से अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं का भी ज्ञान अर्जित करने का आह्वान किया।

गया है जबकि उनके बच्चे फ्रेंच, जर्मन जैसी भाषाएं पढ़ते हैं। मंत्री और विधायक मंगलप्रभात लोढ़ा ने कहा कि अब मुंबई के किसी भी कोने में खड़े होकर हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान का नारा लगाया का सकता है। हिंदी जोड़ने वाली भाषा है तोड़ना हमारे संस्कारों में नहीं है। कार्यक्रम में सम्मानित किए गए अभिनेता विनीत कुमार सिंह ने कहा कि जब माला बनती है तो उसमें एक सूत्र लगता है मुझे लगता है कि भारत के लिए यह सूत्र हिंदी भाषा ही हो सकती है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र का रिश्ता बहुत पुराना है। फिल्म छावा में मैंने जिस कवि कलश की भूमिका निभाई थी वे भी उत्तर प्रदेश के थे। उन्होंने कवि कलश की कविता भी लोगों के सामने प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के प्रमुख वक्ता प्रोफेसर राम मोहन पाठक ने कहा कि एआई भले ही चुनौतीपूर्ण लगती है लेकिन यह संपादक जैसा दिमाग नहीं चला सकती। मुंबई हिंदी पत्रकार संघ के महासचिव विजय सिंह कौशिक ने कहा कि हिंदी की पहला समाचार पत्र एक गैर हिंदी भाषा प्रदेश कोलकाता से शुरू हुआ और हम इस उपलब्धि के २०० साल पूरे होने का समारोह एक मराठी भाषी राज्य में मना रहे हैं यह विविधता में एकता की हमारी परंपरा बयान करता है। उन्होंने पत्रकारिता के शुरुआती दौर में मराठी भाषा पत्रकारों के योगदान को भी याद किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री फडणवीस के हाथों हिंदी पत्रकारिता में योगदान देने वाले वरिष्ठ पत्रकार गंगाधर ढोबळे, हेमंत तिवारी, कुमुद संघवी चावरे, विनीत कुमार सिंह और अवधेश व्यास का सम्मान किया गया। साथ ही प्रो. राममोहन पाठक तथा गायक सुरेश शुक्ला का भी विशेष सम्मान किया गया। प्रभादेवी स्थित रविंद्र नाट्यमंदिर में आयोजित समारोह में हिंदी भाषा, पत्रकारिता और जनसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उत्तर प्रदेश मान्यता प्राप्त समिति, लखनऊ के अध्यक्ष हेमंत तिवारी, सुप्रसिद्ध अभिनेता विनीत कुमार सिंह, वरिष्ठ पत्रकार अवधेश व्यास, गंगाधर ढोबले और कुमुद संघवी चावरे को सम्मानित किया गया। इस मौके पर पत्रकारों, शिक्षाविदों, साहित्यकारों और सामाजिक क्षेत्र से जुड़े गई गणमान्यों ने हाजिरी लगाई।

कार्यक्रम में मुंबई भाजपा अध्यक्ष अमित साटम, विधायक राजहंस सिंह, संजय उपाध्याय, मुरजी पटेल, सिद्धविनायक मंदिर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष आर्चाय पवन त्रिपाठी, योगायतन ग्रुप ऑफ कंपनी के अध्यक्ष डॉक्टर राजेंद्र प्रताप सिंह, उद्योगपति ज्ञान प्रकाश सिंह, प्रदेश भाजपा उत्तर भारतीय मोर्चा के अध्यक्ष संजय पांडेय, उत्तर भारतीय संघ के अध्यक्ष संतोष आर एन सिंह, मुंबई हिंदी पत्रकार संघ के अध्यक्ष आदित्य दुबे, उपाध्यक्ष राजकुमार सिंह, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र मिश्र, कार्यकारणी सदस्य हरीगोविन्द विश्वकर्मा, अखिलेश मिश्र, अखिलेश तिवारी, अशोक शुक्ला, सैयद सलमान आदि मौजूद थे। ■

विवाद

कल्याण के २००० साल पुराने प्राचीन दुर्गाडी किले का इतिहास और वर्तमान विवाद?

कल्याण (महाराष्ट्र) के दुर्गाडी किले (Durgadi Fort) को लेकर उपजा विवाद वर्तमान राजनीति और प्राचीन इतिहास के टकराव से जुड़ा हुआ है। हाल ही में (२७ मई को बकरी ईद के मौके पर) कल्याण के दुर्गाडी किले पर सुरक्षा व्यवस्था और कानून-व्यवस्था (Law and Order) को बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन ने एक आदेश जारी किया है, जिसके बाद यह खबर चर्चा में आई।

प्रवेश पर अस्थायी रोकः बकरी ईद के दिन दुर्गाडी किले परिसर में स्थित ईदगाह पर मुस्लिम समुदाय द्वारा नमाज अदा की जाती है। पुलिस और प्रशासन ने सुरक्षा कारणों और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए नमाज के समय कुछ घंटों के लिए किले पर स्थित दुर्गा देवी मंदिर में हिंदू श्रद्धालुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध (पाबंदी) लगा दिया है।

साल भर का नियमः प्रशासन के नए आदेश के अनुसार, केवल बकरी ईद और रमजान ईद के दिन ही वहां नमाज की अनुमति है। साल के बाकी दिनों में किला परिसर में किसी भी प्रकार की इस्लामिक धार्मिक गतिविधि (उपासना) पर पूरी तरह से रोक है।

राजनीतिक घमासानः इस फैसले के बाद बीजेपी, शिवसेना (शिंदे गुट) और शिवसेना (उद्धव गुट - UBT) समेत कई हिंदूवादी संगठन आक्रामक हो गए हैं। उनका कहना है कि ईद के दिन भी हिंदुओं को मंदिर में जाने की अनुमति मिलनी चाहिए। इस मुद्दे पर वहां पिछले ४० सालों से (दिवंगत नेता आनंद दिघे के समय से) 'घंटानाद आंदोलन' भी होता आया है।

कल्याण का २००० साल पुराना प्राचीन इतिहास क्या कहता है?

इस विवाद के बीच 'कल्याण' के जिस २००० साल पुराने समृद्ध इतिहास का हवाला दिया जा रहा है, वह बेहद गौरवशाली हैः

१. सातवाहन कालः वैश्विक व्यापार का सबसे बड़ा केंद्र (इसा पूर्व दूसरी सदी)

इतिहासकारों के अनुसार, कल्याण का इतिहास ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी (सातवाहन साम्राज्य के उदय) से शुरू होता है। प्राचीन समय में कल्याण भारत का एक बेहद महत्वपूर्ण और अंतरराष्ट्रीय समुद्री बंदरगाह (Port) था।

पैठण, नासिक, जुन्नर और नाणेघाट जैसे व्यापारिक केंद्रों से आने वाला कीमती सामान (मसाले, कपड़े आदि) कल्याण बंदरगाह के जरिए रोम और मिस्र जैसे देशों में निर्यात (Export) किया जाता था। इतिहास की कुछ प्राचीन डायरियों में दर्ज है कि इस क्षेत्र पर शिर्के-सातवाहन राजाओं का शासन था।

२. दुर्गाडी किले की पौराणिक और ऐतिहासिक मान्यता

ऐसा माना जाता है कि सातवाहन राजाओं ने ही इस तटीय क्षेत्र की सुरक्षा के लिए पहली बार यहाँ एक सैन्य चौकी या संरचना तैयार की थी।

दुर्गा माता का प्राकट्यः लोक मान्यताओं के अनुसार, इसी स्थान पर सदियों पहले मां दुर्गा प्रकट हुई थीं, जिसके बाद यहाँ देवी के मंदिर की स्थापना हुई और इसका नाम 'दुर्गाडी' पड़ा।

समय-समय पर यह क्षेत्र सातवाहनों के बाद शिलाहार, यादव राजवंश और फिर बहमनी सुल्तानों के नियंत्रण में गया।

३. छत्रपति शिवाजी महाराज और मराठा नौसेना (आरमार) का उदय

१६५४ में छत्रपति शिवाजी महाराज ने आदिलशाही को हराकर कल्याण और भिवंडी के इस क्षेत्र को अपने नियंत्रण में लिया था। दुर्गाडी किले का आधुनिक इतिहास यहीं से सबसे मजबूत बनता हैः

भारतीय नौसेना की नींवः शिवाजी महाराज ने कल्याण बंदरगाह की भौगोलिक स्थिति को भांपते हुए दुर्गाडी किले की देखरेख में मराठा साम्राज्य के पहले 'आरमार' (स्वतंत्र नौसेना - Navy) की नींव रखी। यहीं पर मराठा सेना के जहाजों का निर्माण शुरू हुआ था।

मस्जिद और मंदिर का सह-अस्तित्वः इसके बाद के मुगलों (शाहजहाँ और औरंगज़ेब के शासनकाल) के दौर में किले के कुछ हिस्सों का पुनर्निर्माण हुआ और वहाँ एक ईदगाह/मस्जिद नुमा ढांचा भी बना। यही वजह है कि आज इस किले पर मंदिर और ईदगाह दोनों ही मौजूद हैं, जो दशकों से इस विवाद का मुख्य कारण बने हुए हैं।

एक तरफ जहाँ इतिहासकार कल्याण और दुर्गाडी को भारत के प्राचीनतम व्यापारिक गौरव और छत्रपति शिवाजी महाराज की नौसेना के जन्मस्थान के रूप में देखते हैं, वहीं दूसरी तरफ वर्तमान समय में यह स्थल हर साल ईद और नवरात्रि के दौरान बेहद संवेदनशील धार्मिक और राजनीतिक अखाड़ा बन जाता है। वर्तमान में पुलिस प्रशासन दोनों पक्षों में शांति बनाए रखने के लिए यहां कड़े सुरक्षा इंतजाम रखता है।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

१. मेष (Aries): मेष राशि वालों के लिए जून काफी सक्रिय और भागदौड़ वाला रहेगा। लंबे समय से रुके कामों में अचानक तेजी आ सकती है। नौकरी में नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं और कई लोगों को अपनी क्षमता साबित करने का मौका मिलेगा। लेकिन यहां सबसे बड़ा खतरा रहेगा – अधीरता। आप कई बार बिना पूरी जानकारी के निर्णय ले सकते हैं और बाद में पछताना पड़ सकता है। व्यापार करने वालों के लिए नए संपर्क फायदेमंद रहेंगे, लेकिन पार्टनरशिप में आंख बंद करके भरोसा करना नुकसान पहुंचा सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं, लेकिन खर्च भी उसी गति से बढ़ सकते हैं। खासकर दिखावे, यात्रा या ऑनलाइन खरीदारी पर पैसा ज्यादा खर्च हो सकता है। प्रेम संबंधों में अहंकार टकराव बढ़ा सकता है। परिवार में पुरानी बातों को लेकर बहस संभव है। स्वास्थ्य की बात करें तो तनाव, सिरदर्द और नींद की कमी परेशानी बढ़ा सकती है। इस महीने शरीर से ज्यादा दिमाग थक सकता है।

२. वृषभ (Taurus): वृषभ राशि वालों के लिए जून धैर्य का महीना रहेगा। कई लोग चाहेंगे कि चीजें जल्दी बदलें, लेकिन इस महीने सफलता धीरे-धीरे मिलेगी। नौकरी में मेहनत बढ़ेगी और कुछ लोग खुद को नजरअंदाज किया गया महसूस कर सकते हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि आपकी मेहनत भविष्य की मजबूत नींव तैयार करेगी। व्यापार में स्थिर लाभ मिल सकता है। संपत्ति और जमीन से जुड़े मामलों में सावधानी जरूरी होगी। आर्थिक रूप से यह महीना पिछले महीनों की तुलना में बेहतर रह सकता है। बचत बढ़ाने का मौका मिलेगा, लेकिन उधार देने से बचना जरूरी होगा। परिवार में स्थिरता बनी रहेगी। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। प्रेम संबंधों में भरोसा मजबूत होगा, लेकिन जिद रिश्तों को कमजोर कर सकती है। स्वास्थ्य में पेट, वजन और सुस्ती से जुड़ी समस्याएं परेशान कर सकती हैं। खानपान पर नियंत्रण रखना जरूरी होगा।

३. मिथुन (Gemini): मिथुन राशि वालों के लिए जून अवसरों का महीना है, लेकिन एक समस्या लगातार बनी रहेगी – एक साथ कई दिशाओं में भागना। यही आदत कई अच्छे मौके कमजोर कर सकती है। करियर में बदलाव के संकेत हैं। नौकरी बदलने का विचार आ सकता है। मीडिया, सोशल मीडिया, मार्केटिंग, लेखन और संचार क्षेत्र से जुड़े लोगों को फायदा मिल सकता है। व्यापार में नए प्रयोग सफल हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है, लेकिन खर्च नियंत्रण में रखना जरूरी होगा। कई लोग इस महीने 'कमाई से ज्यादा लाइफस्टाइल' पर ध्यान देंगे और बाद में तनाव महसूस करेंगे। रिश्तों में गलतफहमियां बढ़ सकती हैं क्योंकि आप कई बार बिना पूरी बात समझे प्रतिक्रिया दे सकते हैं। प्रेम संबंधों में स्पष्ट संवाद जरूरी रहेगा। स्वास्थ्य में एलर्जी, थकान, गले और त्वचा संबंधी परेशानी हो सकती है।

४. कर्क (Cancer): कर्क राशि वालों के लिए जून मानसिक और भावनात्मक उतार-चढ़ाव लेकर आएगा। कई बार आपको लगेगा कि लोग आपकी भावनाओं या मेहनत की कीमत नहीं समझ रहे। नौकरी में मेहनत ज्यादा और पहचान कम मिलने की शिकायत रह सकती है। व्यापार में पुराने ग्राहक और पुराने संपर्क फायदा दिला सकते हैं। आर्थिक स्थिति नियंत्रित रहेगी, लेकिन घर और परिवार पर खर्च बढ़ सकता है। कुछ लोगों को वाहन या घर से जुड़ा बड़ा खर्च करना पड़ सकता है। रिश्तों में भावुकता नुकसान पहुंचा सकती है। हर बात दिल पर लेने की आदत मानसिक तनाव बढ़ाएगी। परिवार में जिम्मेदारियां बढ़ेंगी और किसी सदस्य की सेहत चिंता का कारण बन सकती है। स्वास्थ्य में मानसिक थकान, कमजोरी और नींद की कमी प्रमुख समस्या बन सकती है।

५. सिंह (Leo): सिंह राशि वालों के लिए जून प्रभाव और नेतृत्व बढ़ाने वाला महीना रहेगा। लोग आपकी बात सुनेंगे और कई जगह आपकी सलाह को महत्व मिलेगा। नौकरी में प्रमोशन, नई भूमिका या नई जिम्मेदारी मिलने की संभावना बन

रही है। व्यापार में बड़ा निर्णय लेने का मन बन सकता है। लेकिन सिर्फ आत्मविश्वास के आधार पर जोखिम लेना सही नहीं होगा। बाजार और परिस्थितियों की सही समझ जरूरी होगी। आर्थिक रूप से लाभ के अवसर मिलेंगे। लेकिन दिखावा और प्रतिष्ठा बनाए रखने के चक्कर में खर्च बढ़ सकता है। प्रेम संबंध मजबूत होंगे, लेकिन नियंत्रण रखने की आदत रिश्तों में दूरी भी ला सकती है। परिवार में आपका प्रभाव बढ़ेगा। स्वास्थ्य में ब्लड प्रेशर, गर्मी और थकावट से जुड़ी समस्याएं परेशान कर सकती हैं।

६. कन्या (Virgo): कन्या राशि वालों के लिए जून का सबसे बड़ा संघर्ष रहेगा – हर चीज का जरूरत से ज्यादा विश्लेषण करना। कई बार अवसर सामने होंगे, लेकिन निर्णय लेने में देरी नुकसान पहुंचा सकती है। नौकरी में आपकी मेहनत और परफेक्शन सराही जाएगी, लेकिन मानसिक दबाव भी बढ़ेगा। सरकारी कामों में देरी संभव है। व्यापार में सावधानी से लिया गया निर्णय लाभ देगा। आर्थिक स्थिति बेहतर रह सकती है। पुराने निवेश फायदा दे सकते हैं। लेकिन छोटी-छोटी बचत को लेकर जरूरत से ज्यादा चिंता मानसिक तनाव बढ़ा सकती है। रिश्तों में आलोचनात्मक रवैया नुकसान करेगा। हर छोटी गलती पकड़ना संबंधों को कमजोर बना सकता है। स्वास्थ्य में पाचन, गैस और पेट संबंधी समस्याएं परेशान कर सकती हैं।

७. तुला (Libra): तुला राशि वालों के लिए जून रिश्तों, करियर और खर्चों के बीच संतुलन बनाए रखने का महीना रहेगा। कई लोग दूसरों को खुश करने के चक्कर में खुद को नजरअंदाज कर सकते हैं। नौकरी और व्यवसाय में नए अवसर मिल सकते हैं। कला, फैशन, डिजाइन और मीडिया क्षेत्र से जुड़े लोगों को फायदा होगा। आर्थिक रूप से आय ठीक रहेगी, लेकिन खर्च भी तेजी से बढ़ सकते हैं। प्रेम संबंधों में सुधार होगा। परिवार में किसी शुभ कार्य की चर्चा हो सकती है। लेकिन निर्णय लेने में अस्थिरता नुकसान पहुंचा सकती है। स्वास्थ्य में कमजोरी, त्वचा और हार्मोन संबंधी समस्याएं परेशान कर सकती हैं।

८. वृश्चिक (Scorpio): वृश्चिक राशि वालों के लिए जून परीक्षा लेने वाला महीना रहेगा। ऑफिस में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी और कई लोग आपकी सफलता से असहज दिख सकते हैं। लेकिन अगर आप शांत रहे तो धीरे-धीरे स्थिति आपके पक्ष में जाएगी। व्यापार में नए अवसर मिलेंगे, लेकिन धोखे और कानूनी मामलों से सावधान रहना होगा। आर्थिक रूप से अचानक लाभ संभव है। रिश्तों में शक और गुस्सा सबसे बड़ा दुश्मन बन सकता है। परिवार में किसी सदस्य की चिंता मानसिक दबाव बढ़ा सकती है। स्वास्थ्य में पीठ दर्द, तनाव और थकावट परेशान कर सकती है।

९. धनु (Sagittarius): धनु राशि वालों के लिए जून यात्रा, सीखने और नए अवसरों का महीना रहेगा। कई लोगों को दूरस्थ क्षेत्रों या विदेश से लाभ मिल सकता है। नौकरी और व्यापार दोनों में नई संभावनाएं बनेंगी। लेकिन एक समस्या लगातार नुकसान पहुंचा सकती है – अधूरे काम छोड़ना। अगर आपने अनुशासन नहीं रखा तो अवसर हाथ से निकल सकते हैं। आर्थिक स्थिति बेहतर हो सकती है। लेकिन अनियोजित यात्राएं और खर्च बजट बिगाड़ सकते हैं। प्रेम संबंधों में ईमानदारी जरूरी होगी। परिवार के साथ समय कम बिताने पर शिकायतें बढ़ सकती हैं। स्वास्थ्य में घुटनों और थकान से जुड़ी परेशानी हो सकती है।

१०. मकर (Capricorn): मकर राशि वालों के लिए जून मेहनत का परिणाम देने वाला महीना रहेगा। नौकरी में वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा और लंबे समय से रुके कार्य पूरे हो सकते हैं। व्यापार में स्थिर लाभ मिलेगा। आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है और संपत्ति निवेश लाभकारी साबित हो सकता है। परिवार में जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। रिश्तों में भावनाओं से ज्यादा व्यवहारिक सोच रखनी होगी। स्वास्थ्य में जोड़ों का दर्द, थकावट और कमजोरी परेशान कर सकती है।

११. कुंभ (Aquarius): कुंभ राशि वालों के लिए जून अप्रत्याशित घटनाओं का महीना रहेगा। नौकरी बदलने, नया काम शुरू करने या नई दिशा में जाने का विचार मजबूत हो सकता है। तकनीक, डिजिटल और ऑनलाइन क्षेत्र से जुड़े लोगों को फायदा होगा। आर्थिक रूप से आय बढ़ सकती है, लेकिन खर्च नियंत्रण से बाहर जा सकते हैं। रिश्तों में दूरी बढ़ सकती है क्योंकि आप अपनी दुनिया में ज्यादा व्यस्त रहेंगे। दोस्तों और परिवार के बीच संतुलन बनाना जरूरी होगा। स्वास्थ्य में मानसिक थकान, अनिद्रा और तनाव बढ़ सकता है।

१२. मीन (Pisces): मीन राशि वालों के लिए जून आत्ममंथन और भावनात्मक गहराई का महीना रहेगा। कई पुराने मुद्दे फिर सामने आ सकते हैं। कुछ लोग पुराने रिश्तों या यादों में उलझ सकते हैं। नौकरी में नई जिम्मेदारी मिलेगी। रचनात्मक क्षेत्र से जुड़े लोगों को फायदा होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी, लेकिन बचत कम हो सकती है। प्रेम संबंधों में संवेदनशीलता ज्यादा रहेगी। परिवार का सहयोग मिलेगा, लेकिन छोटी बातों को लेकर मन जल्दी दुखी हो सकता है। स्वास्थ्य में कमजोरी, सर्दी-जुकाम और मानसिक थकान परेशान कर सकती है।

समंदर का 'सिकंदर': मुरुद जंजीरा दास्तान

मुंबई के कोलाहल से करीब १५० किलोमीटर दूर, कोंकण के नीले समंदर में एक ऐसी चट्टान है जो सदियों से महाशक्तियों की छाती पर मूंग दल रही है। नाम है–मुरुद जंजीरा। यह सिर्फ पत्थरों का किला नहीं है, बल्कि समंदर की छाती पर लिखा गया इतिहास का वो जिद्दी पन्ना है, जिसे वक्त की लहरें और दुश्मनों के बारूद भी मिटा नहीं पाए।अगर आप इतिहास के शौकीन हैं, या बस एक ऐसी जगह की तलाश में हैं जहाँ रोमांच और रहस्य का कॉकटेल मिले, तो अपनी गाड़ी की चाबी उठाइए; क्योंकि मुरुद जंजीरा आपको बुला रहा है!

भारत के पश्चिमी तट पर कोंकण के नीले समंदर में एक ऐसी चट्टान खड़ी है, जो सदियों से अजेयता का प्रतीक बनी हुई है। हम बात कर रहे हैं महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में स्थित मुरुद जंजीरा (Murud Janjira) किले की। यह सिर्फ पत्थरों का ढांचा नहीं, बल्कि भारत का सबसे शक्तिशाली जलदुर्ग (Sea Fort) है, जिस पर करीब २२ बार बड़े हमले हुए, लेकिन हर बार हमलावर खाली हाथ लौटे। अगर आप इस वीकेंड किसी बेहतरीन टूरिस्ट प्लेस (Best Tourist Places near Mumbai) की तलाश में हैं, तो मुरुद जंजीरा किला आपकी ट्रैवल लिस्ट में जरूर होना चाहिए। आइए जानते हैं इस रहस्यमयी किले का इतिहास और इससे जुड़े कुछ रोमांचक तथ्य।

मुरुद जंजीरा किले का छिपा हुआ दरवाजा

मुरुद जंजीरा किले की वास्तुकला (Architecture) का सबसे बड़ा चमत्कार इसका मुख्य प्रवेश द्वार है। जब आप राजपुरी जेट्टी से पारंपरिक नाव (Boat Ride) के जरिए किले की तरफ बढ़ते हैं, तो आपको दूर से सिर्फ एक विशाल काली दीवार दिखाई देती है। इस दरवाजे को इस तरह से 'अदृश्य' (Hidden) डिजाइन किया गया है कि जब तक आपकी नाव दीवार के बिल्कुल पास (लगभग २० मीटर) नहीं पहुंच जाती, तब तक दरवाजा दिखाई ही नहीं देता। दुश्मन की फौजें इसी भूलभुलैया में उलझ जाती थीं और ऊपर बुर्ज पर तैनात सैनिक उन पर हमला कर देते थे।

मुरुद जंजीरा किले का इतिहास (Murud Janjira Fort History)

इस किले पर सिद्दी राजवंश (Siddis of Janjira) का शासन था, जो मूल रूप से अफ्रीका के एबिसिनिया से आए थे। समुद्री युद्ध कला में माहिर होने के कारण उन्होंने इस किले को एक अभेद्य किला बना दिया था। इतिहास गवाह है कि मुगलों, अंग्रेजों और पुर्तगालियों की आधुनिक नौसेना भी इसकी ४० फीट ऊंची दीवारों को भेद नहीं पाई। छत्रपति शिवाजी महाराज और छत्रपति संभाजी महाराज ने भी इस मोर्चे पर अपनी रणनीतिक ताकत का परिचय दिया था। संभाजी महाराज ने तो इस किले को टक्कर देने के लिए समंदर के बीचों-बीच 'पद्मदुर्ग' (Padmadurg) नाम का एक और जलदुर्ग खड़ा कर दिया था।

मुरुद जंजीरा किले के मुख्य आकर्षण

अगर आप मुरुद जंजीरा घूमने जा रहे हैं, तो इन ३ चमत्कारों को देखना बिल्कुल न भूलें:

१. समंदर के बीच मीठे पानी की झील

इस किले का सबसे बड़ा रहस्य यह है कि इसके चारों तरफ अरब सागर का लाखों गैलन खारा पानी है, लेकिन किले के अंदर मीठे पानी के दो बड़े तालाब हैं। सदियों से वैज्ञानिक भी हैरान हैं कि समंदर के बीचों-बीच पीने योग्य मीठे पानी का यह स्रोत कहाँ से आता है। इसी पानी की बदौलत किले के सैनिक महीनों की घेराबंदी में भी डटे रहते थे।

२. 'कलाल बांगड़ी' और ऐतिहासिक तोपें
किले की सुरक्षा के लिए कभी यहाँ ५७२ तोपें तैनात थीं। आज भी यहाँ भारत की तीसरी सबसे बड़ी तोप 'कलाल बांगड़ी' मौजूद है। पंचधातु (५ Metals) से बनी यह तोप भीषण गर्मी में भी एकदम ठंडी रहती है और इसकी मारक क्षमता कई किलोमीटर दूर तक थी।

३. शाही महल के अवशेष
किले के भीतर सिद्दी राजाओं के पाँच मंजिला महल और शाही दरबार के खंडहर मौजूद हैं, जो उस दौर के वैभवशाली इतिहास की गवाही देते हैं।

जेट्टी पर उतरते ही एक लोकल गाइड (उल्ग) को साथ ले लें। बिना गाइड के यह किला सिर्फ पत्थरों का ढेर लगेगा, लेकिन एक गाइड के साथ यह इतिहास की चलती-फिरती सस्पेंस थ्रिलर फिल्म बन जाएगा!

शाम के वक्त जब सूरज इस अजेय किले के पीछे अरब सागर में डूबता है, तो इसकी परछाई पानी पर तैरती है। उस वक्त मुरुद जंजीरा को देखना एक ऐसा अनुभव है जो आपकी रूह में बस जाएगा। तो फिर देर किस बात की? इस वीकेंड इतिहास के इस सबसे बड़े रहस्य को अपनी आंखों से बयां होते देखिए!

ट्रैवल गाइडः मुरुद जंजीरा कैसे जाएँ? (How to Reach Murud Janjira)

पैरामीटर	विवरण (Travel Tips)
सबसे अच्छा समय	अक्टूबर से मार्च (सर्दियों का मौसम घूमने के लिए सबसे मुफीद है)।
मानसून अलर्ट	जून से सितंबर के दौरान भारी बारिश के कारण समंदर में नावें बंद रहती हैं।
दूरी (Distance)	मुंबई से लगभग १५० किमी और पुणे से १८० किमी (रोड ट्रिप के लिए बेस्ट)।
समय (Timings)	सुबह ७:०० बजे से शाम ४:४५ बजे तक (शुक्रवार को दोपहर में कुछ देर बंद)।

Don 3' से रणवीर बाहरः ₹४५ करोड़ के नुकसान का दावा और FWICE का 'बैन'

अभिनेता रणवीर सिंह और फेडरेशन ऑफ वेस्टर्न इंडिया सिने एम्प्लॉइज (FWICE) के बीच छिड़ा विवाद इस समय बॉलीवुड का सबसे बड़ा हॉट टॉपिक बना हुआ है।'Don ३' से रणवीर बाहरः ₹४५ करोड़ के नुकसान का दावा और FWICE का 'बैन' यह विवाद तब शुरू हुआ जब रणवीर सिंह ने फरहान अख्तर की मोस्ट अवेटेड फिल्म ३दह ३ से अचानक वॉकआउट कर लिया। रणवीर के करीबी सूत्रों का कहना है कि वह दो साल बाद भी फिल्म की स्क्रिप्ट फाइनल न होने और इसके क्रिएटिव डायरेक्शन से संतुष्ट नहीं थे। दूसरी तरफ, फिल्म के मेकर्स (एक्सेल एंटरटेनमेंट) का आरोप है कि रणवीर के इस फैसले से उन्हें प्री-प्रोडक्शन में लगभग ₹४५ करोड़ का भारी-भरकम नुकसान हुआ है। इस मामले के बढ़ने पर FWICE ने रणवीर को नोटिस भेजे, लेकिन कोई जवाब न मिलने पर उनके खिलाफ 'नॉन-कोऑपरेशन डायरेक्टिव' (असहयोग निर्देश) जारी कर दिया, जिसके तहत फेडरेशन के क्रू मेंबर्स रणवीर के प्रोजेक्ट्स पर काम नहीं करेंगे। हालांकि, रणवीर की लीगल टीम ने इसे पूरी तरह से सिविल और कमर्शियल कॉन्ट्रैक्ट का मामला बताते हुए फेडरेशन के अधिकार क्षेत्र से बाहर बताया है। इस बीच, फिल्म इंडस्ट्री से रणवीर को तगड़ा सपोर्ट मिल रहा है; फिल्ममेकर राम गोपाल वर्मा ने इसे 'कंगारू कोर्ट' बताते हुए इसकी आलोचना की है और कलाकारों के संगठन CINTAA ने भी खुलकर रणवीर का साथ दिया है। वहीं, चर्चा है कि सुपरस्टार सलमान खान दोनों पक्षों के बीच मध्यस्थता कराकर इस विवाद को शांति से सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं।

फिल्मों से ज्यादा किराए से कमाई! रियल एस्टेट से हर महीने करोड़ों छापते हैं ये बॉलीवुड सितारे!

बॉलीवुड के सितारे अपनी फिल्मों और विज्ञापनों से तो करोड़ों रुपये कमाते ही हैं, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि इनकी कमाई का एक बहुत बड़ा जरिया रियल एस्टेट निवेश (Real Estate Investment) है। सदी के महानायक अमिताभ बच्चन इस लिस्ट में सबसे ऊपर हैं। उन्होंने जुहू में स्थित अपने दो बंगलों–'अम्मू' और 'वत्स'–के ग्राउंड फ्लोर को स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) को १५ साल की लीज पर दे रखा है। इसके अलावा, उन्होंने मुंबई के ओशिवारा में अपनी ४ कमर्शियल प्रॉपर्टीज एक बड़ी म्यूजिक कंपनी को किराए पर दी हैं, जिससे उन्हें सालाना ₹२ करोड़ से ज्यादा की कमाई होती है। यही नहीं, उन्होंने अंधेरी का अपना एक डुप्लेक्स अपार्टमेंट एक्ट्रेस कृति सेनन को किराए पर दिया हुआ है, जिसका किराया ₹१० लाख महीना है।

अजय देवगन और काजोल का रियल एस्टेट पोर्टफोलियो काफी मजबूत है। काजोल ने मुंबई के गोरेगांव में एक बड़ा ऑफिस स्पेस किराए पर दे रखा है, जिससे उन्हें हर महीने लगभग ₹७ लाख मिलते हैं। इसके अलावा, इस स्टार कपल का गोवा में एक आलीशान 5-BHK विला है। इस विला को वे हॉलिडे रेंटल के रूप में किराए पर देते हैं, जिसका सिर्फ एक दिन का किराया ₹५०,००० है। अपनी फिटनेस और एक्शन फिल्मों के लिए मशहूर जॉन अब्राहम भी रियल एस्टेट के उस्ताद हैं। जॉन को हर महीने करीब ₹७.५० लाख की रेंटल इनकम होती है। ९० के दशक की ब्लॉकबस्टर एक्ट्रेस करिश्मा कपूर भी किराए से मोटी रकम कमाती हैं। उन्होंने बांद्रा में अपना २२०० वर्ग फुट का एक फ्लैट किराए पर उठा रखा है। इस आलीशान घर और इसके साथ मिलने वाली ३ कार पार्किंग स्पेस के बदले करिश्मा को हर महीने ₹५.५१ लाख का रेंट मिलता है।

पटौदी खानदान के नवाब सैफ अली खान के पास कई संपत्तियां हैं। बांद्रा में फॉर्च्यून हाइट्स (जहां वे पहले करीना कपूर के साथ रहते थे) में उनके पास कई अपार्टमेंट्स हैं। बॉलीवुड स्टार्स के लिए प्रॉपर्टी में निवेश करना सिर्फ एक शौक नहीं, बल्कि बिजनेस का एक बड़ा जरिया बन चुका है। कार्तिक आर्यन, सारा अली खान और मनोज बाजपेयी जैसे नए दौर के सितारे भी अब मुंबई में कमर्शियल प्रॉपर्टीज खरीदकर इसी 'रेंटल बिजनेस मॉडल' पर आगे बढ़ रहे हैं।

साझा करने का विज्ञान

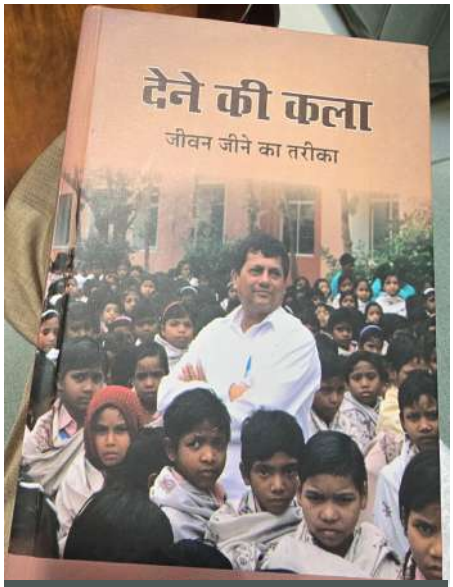

डॉ. अच्युत सामंत

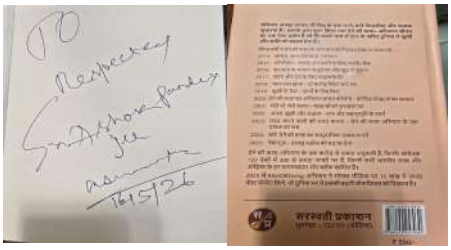

एक प्रश्न है जिसने सदियों से दार्शनिकों, संतों और वैज्ञानिकों को समान रूप से सोचने पर मजबूर किया है। प्रश्न इतना सरल है कि कोई बच्चा भी पूछ सकता है–आखिर देने से अच्छा क्यों लगता है? यह अच्छा लगना वैसा नहीं है जैसा कुछ पाने पर होता है। पाने का सुख क्षणिक होता है–वस्तु मिलते ही उसका आकर्षण धीरे-धीरे कम होने लगता है। लेकिन देने से जो अनुभूति होती है, वह बिल्कुल अलग होती है। वह एक शांत, स्थायी और गहरी ऊष्मा होती है, जो लंबे समय तक मन में बनी रहती है। ऐसा संतोष जो बदले में कुछ नहीं मांगता, और आश्चर्य यह कि जो हमें खाली नहीं बल्कि और अधिक पूर्ण बना देता है।

हर सभ्यता ने इस प्रश्न का उत्तर खोजने की कोशिश की है, और लगभग हर सभ्यता एक ही निष्कर्ष पर पहुँची है। भागवत गीता इसे निष्काम कर्म कहती है–फल की इच्छा के बिना कर्म करना। दो, और फिर उसे छोड़ दो। इस अपेक्षा से मत दो कि बदले में कुछ मिलेगा या लोग तुम्हें देखेंगे और सराहेंगे। दो, क्योंकि देना उस आत्मा का स्वाभाविक गुण है जिसने ब्रह्मांड में अपना स्थान समझ लिया है। श्रीकृष्ण कहते हैं–फल तुम्हारा अधिकार नहीं, कर्म तुम्हारा अधिकार है। और देने का कर्म अपने आप में पूर्ण है।

गौतम बुद्ध ने तो उदारता यानी दान को ध्यान, अनुशासन और ज्ञान से भी पहले रखा। क्योंकि जो हाथ केवल संग्रह करना जानते हैं, वे ध्यान नहीं कर सकते। जो हृदय हर चीज़ से चिपका रहता है, वह कभी शांत नहीं हो सकता। उदारता कोई ऐसा गुण नहीं जो ज्ञान प्राप्ति के बाद आता हो; वह तो वह द्वार है जिससे ज्ञान भीतर प्रवेश करता है। कुरान में सदक़ा को केवल दान नहीं बल्कि आत्मशुद्धि कहा गया है। जो तुम देते हो वह पवित्र नहीं होता, बल्कि उसे छोड़कर तुम स्वयं अधिक निर्मल हो जाते हो।

यहूदी परंपरा में त्ज़ेदकाह दया नहीं बल्कि न्याय है। साझा करना कोई विशेष उदारता नहीं; यह उस संतुलन की पुनर्स्थापना है जिसे संग्रह करने की प्रवृत्ति ने बिगाड़ दिया है। और अब, इन शिक्षाओं के लगभग ढाई हजार वर्ष बाद, आधुनिक विज्ञान भी उसी निष्कर्ष तक पहुँच गया है। अमेरिका के नेशनल इंस्टीट्यूट्स ऑफ हेल्थ के शोध बताते हैं कि जब कोई व्यक्ति दूसरों को कुछ देता है, तो मस्तिष्क का वही भाग सक्रिय हो जाता है जो भोजन, संगीत या प्रिय व्यक्ति के चेहरे को देखकर सक्रिय होता है। शरीर में ऑक्सीटोसिन और एंडोर्फिन जैसे रसायन बढ़ते हैं, जबकि तनाव का हार्मोन कॉर्टिसोल घटता है। अर्थात् देने वाला व्यक्ति केवल मानसिक रूप से नहीं, बल्कि शारीरिक रूप से भी अधिक स्वस्थ होता है।

मार्टिन सेलिंगमैन ने अपने शोध में पाया कि उदारता मानव जीवन की स्थायी प्रसन्नता का सबसे विश्वसनीय आधार है।

प्राचीन लोग यह सब बिना प्रयोगशालाओं के जानते थे। उन्होंने जीवन को देखा और समझा। उन्होंने उस किसान को देखा जो अपना अनाज बाँटता था और पाया कि उसके खेत कभी सूखे नहीं। उन्होंने उस माँ को देखा जो पूरे मोहल्ले के बच्चों को खिलाती थी और पाया कि उसके अपने बच्चे कभी भूखे नहीं रहे। उन्होंने उस साधु को देखा जिसके पास कुछ नहीं था, फिर भी उसे किसी चीज़ की कमी नहीं थी। और उन्होंने निष्कर्ष निकाला–साझा करने से कुछ घटता नहीं, बल्कि बढ़ता है।

हर सभ्यता ने इस प्रश्न का उत्तर खोजने की कोशिश की है, और लगभग हर सभ्यता एक ही निष्कर्ष पर पहुँची है। भागवत गीता इसे निष्काम कर्म कहती है–फल की इच्छा के बिना कर्म करना। दो, और फिर उसे छोड़ दो। इस अपेक्षा से मत दो कि बदले में कुछ मिलेगा या लोग तुम्हें देखेंगे और सराहेंगे। दो, क्योंकि देना उस आत्मा का स्वाभाविक गुण है जिसने ब्रह्मांड में अपना स्थान समझ लिया है। श्रीकृष्ण कहते हैं–फल तुम्हारा अधिकार नहीं, कर्म तुम्हारा अधिकार है। और देने का कर्म अपने आप में पूर्ण है।

मैंने यह शिक्षा न शास्त्रों से सीखी, न विज्ञान से। मैंने इसे एक कप चाय से सीखा।

कलराबंक गाँव में मेरा बचपन अत्यंत गरीबी में बीता। चार वर्ष की आयु में पिता का निधन

हो गया। माँ ने सात बच्चों को पाला। कई दिन ऐसे होते थे जब खाने को भी कुछ नहीं होता था। पाँच वर्ष की आयु से मैंने छोटे-मोटे काम करने शुरू किए। जो कुछ कमाता, उसे दोस्तों के साथ बाँट देता–चाय, नाश्ता, कभी फिल्म का टिकट।

तब मुझे निष्काम कर्म शब्द नहीं पता था। मैंने गीता नहीं पढ़ी थी। पर एक बच्चे की सहज समझ से इतना जानता था कि बाँटने से चाय का स्वाद बेहतर हो जाता है, साथ चलने से रास्ता हल्का लगता है, और गरीबी भी कम भारी प्रतीत होती है। वही भावना आगे चलकर कीट बनी–पाँच हजार रुपये और दो किराए के कमरों से शुरू हुआ एक विश्वविद्यालय।

वही भावना कीस बनी–अस्सी हजार आदिवासी बच्चों का घर और विद्यालय। और २०१३ में वही भावना Art of Giving बन गई। Art of Giving कोई संगठन नहीं, बल्कि एक अनुभूति है। यह समझ कि देने की इच्छा हर मनुष्य के भीतर पहले से मौजूद है। वह उस दादी में है जो सुबह पक्षियों को दाना खिलाती है। उस ऑटो चालक में है जो बुजुर्ग यात्री से किराया नहीं लेता। उस छात्र में है जो अपने कमजोर सहपाठी को पढ़ाने के लिए रुक जाता है। यह भावना हर जगह है; उसे केवल अभिव्यक्ति की अनुमति चाहिए।

आज, तेरह वर्षों बाद, Art of Giving को दुनिया के २२० देशों में दो करोड़ से अधिक लोग मनाते हैं। वर्ष २०२६ को संयुक्त राष्ट्र ने सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए स्वयंसेवा का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया है, और Art of Giving को इस अभियान में सहयोगी बनने का गौरव प्राप्त हुआ है।

इस वर्ष का विषय है–'Share to Shine'।

इसका अर्थ केवल धन देना नहीं है। इसका अर्थ है–जो तुम हो, उसे साझा करना। अपना समय, अपना ज्ञान, अपनी शांति, अपना ध्यान, अपनी उपस्थिति। किसी ऐसे व्यक्ति के साथ जो शायद चुपचाप उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो।

उपनिषदों की एक पंक्ति मुझे वर्षों से प्रेरित करती रही है–

'पूर्णमदः पूर्णमिदम्।'

वह पूर्ण है, यह पूर्ण है। पूर्ण में से पूर्ण निकाल लेने पर भी पूर्ण ही शेष रहता है।

साझा करने का इससे सुंदर वर्णन शायद कभी नहीं लिखा गया। जब आप पूर्णता से देते हैं, तब कुछ कम नहीं होता। दीपक दूसरे दीपक को जलाता है, पर उसकी लौ कम नहीं होती। कमरा केवल अधिक प्रकाशमय हो जाता है।

यह केवल दर्शन नहीं है। यह विज्ञान है। यह जीवविज्ञान है। और यह हर उस मनुष्य का अनुभव है जिसने बिना गिने, बिना अपेक्षा के कुछ दिया और आश्चर्य से पाया कि उसके पास पहले से अधिक बचा है।

कीस के विद्यार्थियों ने +२ परीक्षा में शानदार सफलता हासिल की

विश्व के सबसे बड़े आदिवासी आवासीय विद्यालय,कीस के विद्यार्थियों ने इस वर्ष आयोजित +२ परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। बुधवार को Council of Higher Secondary Education (CHSE) द्वारा घोषित परीक्षा परिणामों में KISS के छात्रों ने सभी संकायों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

इस वर्ष KISS के कुल १,८४७ विद्यार्थियों ने +2 परीक्षा में भाग लिया। राज्य में जहाँ कला संकाय का उत्तीर्ण प्रतिशत ८४.५०%, विज्ञान का ८८.८०% तथा वाणिज्य का ८८.०७% रहा, वहीं KISS के विद्यार्थियों ने भी उत्साहजनक प्रदर्शन करते हुए संस्था का नाम गौरवान्वित किया।

पिछले वर्षों की तरह इस बार भी KISS की छात्राओं ने छात्रों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया। ५० प्रतिशत से अधिक विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी में सफलता प्राप्त की। कला और वाणिज्य संकाय में पाँच-पाँच विद्यार्थियों ने ९० प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए, जबकि विज्ञान संकाय में सात विद्यार्थियों ने ९० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए।

कला संकाय में नेहा कुजूर ने ९१ प्रतिशत अंक प्राप्त कर कॉलेज टॉपर बनने का गौरव हासिल किया। विज्ञान संकाय में सरिबाला मुंडा ने ९६ प्रतिशत अंक प्राप्त कर शीर्ष स्थान प्राप्त किया, जबकि वाणिज्य संकाय में शशिमणि माझी ने ९१ प्रतिशत अंक लेकर टॉप किया।

इस सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए संस्थापक डॉ.अच्युत सामंत ने सभी विद्यार्थियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि कीस कॉलेज के शिक्षकों की निष्ठा, विद्यार्थियों को निरंतर मार्गदर्शन तथा छात्रों की अथक मेहनत ने संस्था को यह गौरवपूर्ण सफलता दिलाई है।

सुप्रभात। खुशियों के साथ जागिए। जीवन हमें बहुत शांत तरीके से यह याद दिलाता है कि कोई भी भावना हमेशा एक जैसी नहीं रहती। जिन दिनों मन भारी लगे, एक पल ठहरिए और बस ऊपर देखिए – खुले आकाश को, सुबह की धूप को, लहराते पेड़ों को, अपने आसपास की शांत सुंदरता को। फिर उम्मीद के साथ आगे देखिए और स्वयं से कहिए, 'अगर आज नहीं, तो कल बेहतर होगा। मैं बेहतर महसूस करूंगा।' उम्मीद की एक छोटी-सी किरण भी धीरे-धीरे मन को रोशन कर सकती है और आत्मा को सुकून दे सकती है। बेहतर दिनों पर विश्वास बनाए रखिए, क्योंकि वे सचमुच आते हैं – हर सूर्योदय के साथ, चुपचाप और सुंदर ढंग से। ईश्वर हम सभी पर अपनी कृपा बनाए रखें।

ऑर्ट ऑफ गिविंग का १३वां संस्करण अन्तर्राष्ट्रीय ऑर्ट ऑफ गिविंग दिवस के रुप में विश्व के १९० देशों और छह महाद्वीपों में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

भुवनेश्वर में आयोजित कार्यक्रम में ऑर्ट ऑफ गिविंग हीरो अवार्ड से सम्मानित हुए प्रसिद्ध चिकित्सा विशेषज्ञ डॉक्टर बिद्युत दास, रोटेरियन अजय अग्रवाल तथा कीट के प्रोफेसर कुमार देवदत्त, प्रत्येक पुरस्कार विजेता को मानपत्र, शॉल, पुष्पगुच्छ के साथ ₹१ लाख की नकद राशि दी गई

स्थानीय मेफेयर कंवेंशन में सायंकाल कीट-कीस-कीम्स के प्राणप्रतिष्ठाता तथा भूतपूर्व सांसद राज्यसभा और लोकसभा प्रोफेसर अच्युत सामंत का वास्तविक जीवन दर्शन : ऑर्ट ऑफ गिविंग का १३वां दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि के रुप में जाजपुर लोकसभा सांसद रवींद्र नारायण बेहरा तथा सम्मानित अतिथि के रुप में बाबा रामनारायण दास जी महाराज, भारतीय टेनिस दिग्गज लेंडर पेस, तिब्बती बौद्ध गुरु गेट्ठुल जिग्मे रीनपोचे तथा निकिता पोड़वाल आदि मंचासीन थे। परम्परागत दीपप्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्रोफेसर अच्युत सामंत ने मुख्य अतिथि तथा सम्मानित अतिथियों को पुष्पगुच्छ, शॉल तथा स्मृतिचिह्न भेंटकर सम्मानित किया।

प्रोफेसर सामंत ने अपने स्वागत भाषण में बताया कि देने की कला स्वतः उनको बाल्याकाल के घोर आर्थिक संकटों ने दिया जिसकी शुरुआत उन्होंने १७ मई, २०१३ को किया। आज वही ऑर्ट ऑफ गिविंग दिवस एक सामाजिक आंदोलन बनकर तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप पाकर उनके लाखों अनुयायियों और शुभचिंतकों के द्वारा दुनिया भर के लगभग ५०,००० स्थानों पर इस वर्ष मनाया गया। इसमें एफआईवीबी के सभी २२२ सदस्य देश, भारत के सभी २८ राज्य और ८ केंद्र शासित प्रदेश, देश के प्रत्येक शहर और कस्बे तथा ओडिशा के सभी जिला मुख्यालय, ब्लॉक और पंचायत आदि शामिल रहे। गौरतलब है कि केवल ओडिशा में ही यह दिवस २०,००० स्थानों पर मनाया गया।

१३वें अंतर्राष्ट्रीय आर्ट ऑफ गिविंग डे के अवसर पर इस आंदोलन से प्रत्यक्ष रूप से लगभग २.५ करोड़ लोग जुड़े, जिनमें प्रोफेसर अच्युत सामंत के अनुयायी, शुभचिंतक और समर्थक आदि शामिल थे। पिछले एक सप्ताह से दुनिया भर और भारत के विभिन्न शहरों में आर्ट ऑफ गिविंग कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें समाज के सभी वर्गों के लोगों ने भाग लिया। हर वर्ष अंतरराष्ट्रीय आर्ट ऑफ गिविंग डे एक विशेष थीम के साथ मनाया जाता है।

इस वर्ष की थीम 'शेयर टू शाइन' थी, जिसका अर्थ है कि दूसरों के साथ खुशियाँ साझा करने से स्वयं का भी विकास और प्रगति होती है। इस वर्ष के आयोजन के तहत ओडिशा के ३,००० से अधिक स्थानों पर वॉलीबॉल और नेट वितरित किए गए। खेलों के विकास तथा युवाओं में सौहार्द और मित्रता को बढ़ावा देने के लिए अच्युत सामंत की प्रेरणा से इस वर्ष ९,१०० वॉलीबॉल वितरित किए गए।

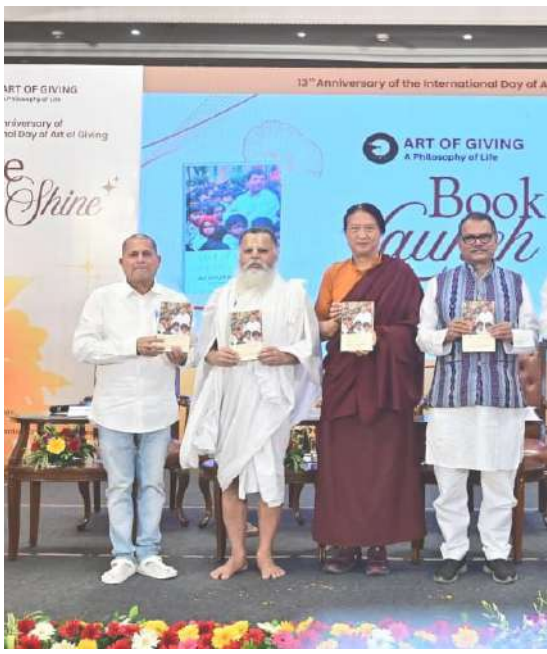

१३वें अंतर्राष्ट्रीय आर्ट ऑफ गिविंग डे के अवसर पर इस आंदोलन से प्रत्यक्ष रूप से लगभग २.५ करोड़ लोग जुड़े, जिनमें प्रोफेसर अच्युत सामंत के अनुयायी, शुभचिंतक और समर्थक आदि शामिल थे। पिछले एक सप्ताह से दुनिया भर और भारत के विभिन्न शहरों में आर्ट ऑफ गिविंग कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें समाज के सभी वर्गों के लोगों ने भाग लिया। हर वर्ष अंतरराष्ट्रीय आर्ट ऑफ गिविंग डे एक विशेष थीम के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष के आयोजन के तहत ओडिशा के ३,००० से अधिक स्थानों पर वॉलीबॉल और नेट वितरित किए गए।

डॉ. सामंत ने कहा, 'आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह 'आर्ट ऑफ गिविंग' की अवधारणा के कारण हूँ। इस आंदोलन के माध्यम से मुझे लोगों का स्नेह, प्रेम और अपनापन मिला है।'

भुवनेश्वर में आयोजित कार्यक्रम में प्रसिद्ध हिंदी पार्श्व गायक शान द्वारा गाया गया आर्ट ऑफ गिविंग थीम सॉन्ग भी जारी किया गया। साथ ही साथ प्रोफेसर अच्युत सामंत की पुस्तक ऑर्ट ऑफ गिविंग का अंग्रेजी तथा हिन्दी संस्करण भी लोकार्पित हुआ जिसका हिन्दी अनुवाद ओड़िशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर चक्रधरत्रिपाठी ने किया है। अवसर पर ऑर्ट ऑफ गिविंग त्रैमासिक पत्रिका भी लोकार्पित हुई।

विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी प्रतिष्ठित ऑर्ट ऑफ गिविंग हीरो अवार्ड से सम्मानित हुए प्रसिद्ध चिकित्सा विशेषज्ञ डॉक्टर बिद्युत दास, रोटेरियन अजय अग्रवाल तथा कीट के प्रोफेसर कुमार देवदत्त।प्रत्येक पुरस्कार विजेता को ₹१ लाख की नकद राशि दी गई। इस कार्यक्रम में कीट और कीस के कुलपति प्रो. सरनजीत सिंह सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा प्रोफेसर सामंत के लगभग एक हजार शुभचिंतक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनमुन दास ने किया। **- अशोक पाण्डेय**

प्रोफेसर अच्युत सामंत को University of Craiova द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि मिली

भुवनेश्वर, २३ मईः प्रख्यात शिक्षाविद, समाज सुधारक तथा कीट एवं कीस के संस्थापक प्रोफेसर अच्युत सामंत को रोमानिया के सबसे पुराने सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में से एक University of Craiova द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया। यह मानद उपाधि आज विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान की गई। यह डॉ. सामंत को प्राप्त होने वाली ७३वीं मानद डॉक्टरेट है। उन्हें शिक्षा के माध्यम से समाज के विकास में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए यह सम्मान दिया गया।

यह मानद उपाधि क्रायोवा सीनेट के अध्यक्ष प्रोफेसर लियोनार्डो जियो मेनेस्कू की उपस्थिति में प्रदान की गई। समारोह में कई शिक्षाविद, छात्र एवं विशिष्ट अतिथि भी उपस्थित थे।

सन् १९४७ में स्थापित University of Craiova रोमानिया के सबसे पुराने सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में से एक है। विश्वविद्यालय सीनेट ने लागू कानूनों के तहत अपनी संवैधानिक जिम्मेदारियों के अनुरूप प्रोफेसर डॉ. सामंत के नाम की अनुशंसा की थी। पिछले महीने आयोजित पूर्ण सीनेट बैठक में विश्वविद्यालय ने उन्हें मानद डॉक्टरेट प्रदान करने का प्रस्ताव पारित किया था।

इस सम्मान के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए डॉ. सामंत ने कहा कि वे पिछले तीन दशकों से अधिक समय से शिक्षा और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मान उन्हें शिक्षा एवं सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में और अधिक समर्पण के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा। डॉ. सामंत ने कहा कि यह सम्मान कीट और कीस के सभी कर्मचारियों की निष्ठा और कड़ी मेहनत का परिणाम है। उन्होंने यह सम्मान दोनों संस्थानों के सभी कर्मियों को समर्पित किया।

भुवनेश्वर, १४ मईः प्रख्यात शिक्षाविद्, समाजसेवी तथा मानवता सेवा डॉ. अच्युत सामंत को अमेरिका के Montana State University के नेटिव अमेरिकन स्टडीज़ विभाग द्वारा विशेष सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें कीस के माध्यम से जनजातीय सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए प्रदान किया गया। डॉ. सामंत इस सम्मान को प्राप्त करने वाले पहले भारतीय तथा पहले गैर-अमेरिकी व्यक्ति बने हैं।

यह सम्मान विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित विशेष समारोह 'A Legacy of Compassion: Honoring Achyut Samanta and the Art of Giving' के दौरान प्रदान किया गया। इस अवसर पर मोंटाना के गवर्नर Greg Gianforte, भारत के कॉन्सुल जनरल Prakash Gupta, Montana World Affairs Council की कार्यकारी निदेशक Nikki Geisler तथा विश्वविद्यालय की अध्यक्ष Waded Cruzado सहित अनेक गणमान्य विभूतियों की उपस्थिति में उन्हें सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि इसी वर्ष मोंटाना के कई विद्वानों और बुद्धिजीवियों ने कीट एवं कीस का दौरा किया था और डॉ. सामंत के कार्यों की अत्यधिक सराहना की थी। लौटने के बाद उन्होंने डॉ. सामंत को राज्य के सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित करने की अनुशंसा की।

इसी प्रकार, शिक्षा और आदिवासी सशक्तिकरण के माध्यम से आदिवासी युवाओं के विकास, भारतीय दर्शन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के प्रसार तथा भारत और अमेरिका (मोंटाना) के बीच सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संबंधों को मजबूत करने में योगदान के लिए Montana World Affairs Council ने डॉ. अच्युत सामंत को 'Global Visionary Award' से भी सम्मानित किया। समारोह में डॉ. सामंत के उस कार्य की विशेष प्रशंसा की गई, जिसके माध्यम से उन्होंने शिक्षा और सशक्तिकरण द्वारा हजारों आदिवासी युवाओं के जीवन में परिवर्तन लाया है। अपने संबोधन में डॉ. सामंत ने Montana State University तथा Montana World Affairs Council के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान उन्हें भारत के आदिवासी समुदायों के विकास के लिए और अधिक समर्पण के साथ कार्य करने की प्रेरणा देगा।

Montana State University का नेटिव अमेरिकन स्टडीज़ विभाग अमेरिका में मूल निवासियों पर शोध के लिए अग्रणी संस्थानों में गिना जाता है। मोंटाना अमेरिका का एक प्रमुख जनजातीय राज्य है, और वहां डॉ. सामंत का पारंपरिक जनजातीय रीति-रिवाजों के अनुसार सम्मान किया गया। नेटिव अमेरिकन समुदाय ने उन्हें अपनी पवित्र जनजातीय चादरें भेंट कर आध्यात्मिक सम्मान प्रदान किया, जो उनकी परंपरा में अत्यंत प्रतिष्ठित माना जाता है।

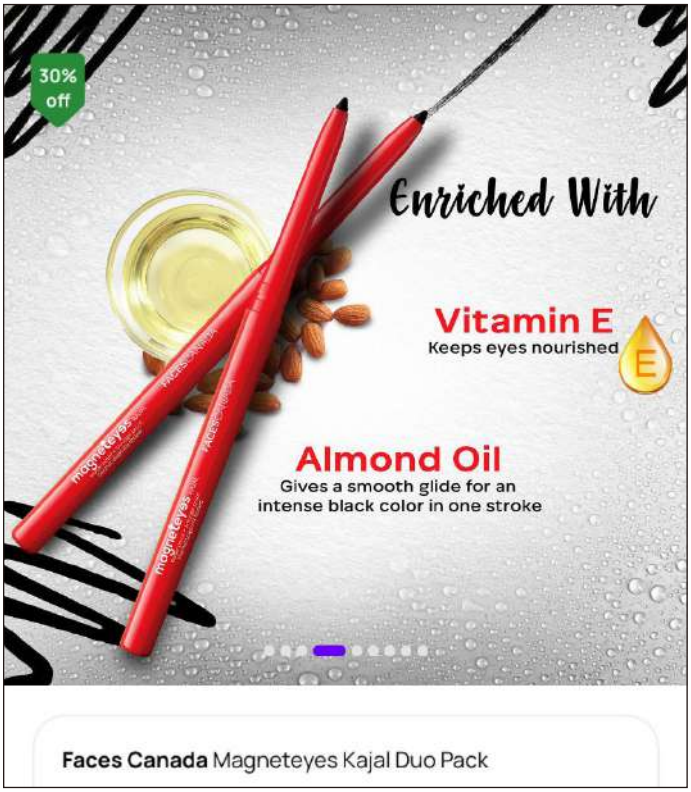

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

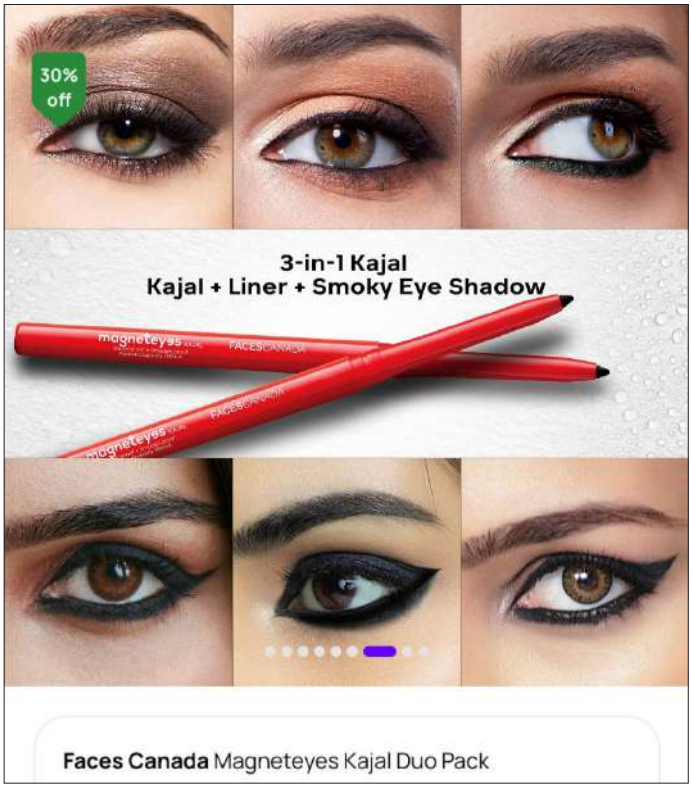

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

सूखी तुलसी

धूप की एक पतली सी लकीर पुराने मकान के ओसारे को पार कर आंगन में लगे तुलसी के चौरे पर ठहर गई थी। तुलसी की पत्तियां अब हरी नहीं रहीं थीं, वे मटमैली होकर सूखने लगी थीं, ठीक उसी तरह जैसे उस घर की दीवारें और वहां रहने वाले रामशरण बाबू की जिंदगी।

७५ वर्षीय सेवानिवृत्त शिक्षक रामशरण बाबू का दिन हर रोज एक ही ढर्रे पर शुरू होता था। हाथ में चाय का कुल्हड़ और निगाहें सड़क के उस मोड़ पर, जहाँ से हर दोपहर डाकिया बंसी अपनी साइकिल की घंटी बजाता हुआ गुजरता था। आज भी बंसी की साइकिल रुकी, लेकिन उसने रामशरण बाबू की तरफ देखने के बजाय सीधे आगे बढ़ने की कोशिश की।

'क्यों बंसी! आज भी थैले में मेरे नाम का कोई कागद नहीं है क्या?' रामशरण बाबू की कांपती आवाज ने बंसी के पांवों में जैसे ब्रेक लगा दिए।

वह बंसी को कैसे बताते कि उनके पास जो पुराना, धुंधली स्क्रीन वाला कीपैड फोन है, उसकी घंटी हफ़्तों नहीं बजती। और जब कभी बजती भी है, तो दूसरी तरफ से अमित की औपचारिक आवाज आती है–'हाँ बाबूजी, ठीक हूँ। बस एक मीटिंग में जा रहा हूँ, बाद में बात करता हूँ।' वह 'बाद' कभी नहीं आता था। स्मृतियों के झरोखे हमेशा खुले रहते हैं। रामशरण बाबू जब भी अकेले होते, अतीत की पगडंडियों पर चल पड़ते। उन्हें याद आता कि कैसे अपनी इस सूखी छाती से लगाकर उन्होंने अमित को पाला था, जब उसकी माँ उसे बचपन में ही छोड़ कर चली गई थी। अपनी ईमानदारी की पूरी कमाई, ट्यूशन के पैसे, यहाँ तक कि भविष्य के लिए बचाई गई भविष्य निधि भी उन्होंने अमित को शहर के बड़े कॉलेज में पढ़ाने के लिए झोंक दी थी। अमित काबिल बना, शहर गया, और फिर... वहीं का होकर रह गया।

बंसी ने साइकिल रोकी, अंगोछे से माथे का पसीना पोंछा और थोड़ा झेंपते हुए बोला, 'मास्टर साहब, अब तो पूरा गाँव जानता है कि चिट्ठियों का जमाना गया। आपके बेटे अमित बाबू के पास बड़ा वाला फोन है, शहर में बड़ी नौकरी है उनकी। वे चिट्ठी क्यों लिखेंगे? आप ही उनके नंबर पर घंटी मार लिया करिए।'

रामशरण बाबू ने एक फीकी मुस्कान के साथ सिर हिला दिया। वह बंसी को कैसे बताते कि उनके पास जो पुराना, धुंधली स्क्रीन वाला कीपैड फोन है, उसकी घंटी हफ़्तों नहीं बजती। और जब कभी बजती भी है, तो दूसरी तरफ से अमित की औपचारिक आवाज आती है–'हाँ बाबूजी, ठीक हूँ। बस एक मीटिंग में जा रहा हूँ, बाद में बात करता हूँ।' वह 'बाद' कभी नहीं आता था।

स्मृतियों के झरोखे हमेशा खुले रहते हैं। रामशरण बाबू जब भी अकेले होते, अतीत की पगडंडियों पर चल पड़ते। उन्हें याद आता कि कैसे अपनी इस सूखी छाती से लगाकर उन्होंने अमित को पाला था, जब उसकी माँ उसे बचपन में ही छोड़ कर चली गई थी। अपनी ईमानदारी की पूरी कमाई, ट्यूशन के पैसे, यहाँ तक कि भविष्य के लिए बचाई गई भविष्य निधि भी उन्होंने अमित को शहर के बड़े कॉलेज में पढ़ाने के लिए झोंक दी थी। अमित काबिल बना, शहर गया, और फिर... वहीं का होकर रह गया।

शहर का वह २४वां माला। कांच की खिड़कियां, जहां से बाहर देखने पर इंसान नहीं, सिर्फ रेंगती हुई गाड़ियां दिखती थीं। अमित का घर किसी फाइव-स्टार होटल जैसा था। रामशरण बाबू के लिए एक अलग, हवादार कमरा तय किया गया। समय पर दवा देने के लिए एक अटेंडेंट रख दिया गया। सुबह-शाम मेज पर नाश्ता और खाना आ जाता। शुरुआती तीन दिन तो ठीक कटे, पर चौथे दिन से सन्नाटा काटने को दौड़ने लगा। अमित सुबह आठ बजे अपनी चमचमाती कार से निकल जाता और रात ग्यारह बजे थका-हारा लौटता। बहू अपनी किटी पार्टियों और एनजीओ के दौरों में व्यस्त थी। पोता, जो अब बड़ा हो गया था, कान में लीड लगाए अपने कंप्यूटर की स्क्रीन में खोया रहता। वह दादाजी के कमरे के आगे से ऐसे गुजर जाता जैसे वहां कोई इंसान नहीं, लकड़ी का कोई पुराना फर्नीचर रखा हो।

उस रात नियति ने एक नया मोड़ लिया। आधी रात को रामशरण बाबू के सीने में एक भयानक दर्द उठा। वह कराहते हुए फर्श पर गिर पड़े। गनीमत थी कि पास के पड़ोसी सुखदेव ने उनके कराहने की आवाज सुन ली। अस्पताल के आईसीयू के बाहर जब सुखदेव ने अमित को फोन किया, तो शहर से कड़कड़ाती आवाज आई, 'मैं सुबह की पहली फ्लाइट से आ रहा हूँ। पैसों की चिंता मत करना, डॉक्टर से कहो सबसे अच्छा इलाज करें।'

अमित आया। महंगे डॉक्टरों की फीस चुकाई गई, दवाइयाँ आईं। वह पिता के सिरहाने बैठा, तो रामशरण बाबू की आँखों में जैसे सावन उतर आया। उन्होंने अमित का हाथ थामना चाहा, पर अमित की नजरें बार-बार अपनी कलाई की महंगी घड़ी पर टिकी थीं। 'बाबूजी,' अमित ने गंभीर होकर कहा, 'अब आपका अकेले इस गाँव में रहना नामुमकिन है। मैं आपको इस तरह लावारिस नहीं छोड़ सकता। आप मेरे साथ शहर चल रहे हैं, बस।'

रामशरण बाबू का स्वाभिमान डगमगाया, पर बेटे की आँखों में दिखते अधिकार (या शायद जिम्मेदारी के बोझ) के आगे उन्होंने घुटने टेक दिए। मकान पर ताला लटका, और वह तुलसी का चौरा, जो उनकी पत्नी की आखिरी निशानी था, अकेला छोड़ दिया गया।

शहर का वह २४वां माला। कांच की खिड़कियां, जहां से बाहर देखने पर इंसान नहीं, सिर्फ रेंगती हुई गाड़ियां दिखती थीं। अमित का घर किसी फाइव-स्टार होटल जैसा था। रामशरण बाबू के लिए एक अलग, हवादार कमरा तय किया गया। समय पर दवा देने के लिए एक अटेंडेंट रख दिया गया। सुबह-शाम मेज पर नाश्ता और खाना आ जाता।

शुरुआती तीन दिन तो ठीक कटे, पर चौथे दिन से सन्नाटा काटने को दौड़ने लगा। अमित सुबह आठ बजे अपनी चमचमाती कार से निकल जाता और रात ग्यारह बजे थका-हारा लौटता। बहू अपनी किटी पार्टियों और एनजीओ के दौरों में व्यस्त थी। पोता, जो अब बड़ा हो गया था, कान में लीड लगाए अपने कंप्यूटर की स्क्रीन में खोया रहता। वह दादाजी के कमरे के आगे से ऐसे गुजर जाता जैसे वहां कोई इंसान नहीं, लकड़ी का कोई पुराना फर्नीचर रखा हो।

मकान की उस कृत्रिम ठंडक में रामशरण बाबू का दम घुटने लगा। एक दिन दोपहर को, जब घर में कोई नहीं था, वे टहलते हुए अमित के अध्ययन कक्ष (स्टडी रूम) में चले गए। वहाँ सन्नाटा और गहरा था। मेज पर एक बेहद खूबसूरत, चमड़े की जिल्द वाली डायरी और एक कीमती पेन रखा था। रामशरण बाबू ने उस खाली डायरी को छुआ। बरसों से छूटा हुआ शिक्षक का हाथ अचानक कांप उठा। उन्होंने पेन उठाया और डायरी के पन्नों पर अपने दिल का लहू उड़ेलने लगे।

...और फिर एक सुबह, जब अमित सोकर उठा, तो रामशरण बाबू के कमरे का दरवाजा खुला था। बिस्तर सलीके से लगा हुआ था, लेकिन रामशरण बाबू वहाँ नहीं थे। मेज पर एक छोटा सा नोट था–'मैं गाँव जा रहा हूँ। तुम्हारी गृहस्थी में विघ्न नहीं डालना चाहता।' अमित को गुस्सा आया। उसने फोन लगाया, तो वह बंद था। उसने झिझलाकर कहा, 'बूढ़े लोग भी न, अपनी जिद के आगे किसी की परवाह नहीं करते।' छह महीने और गुजर गए। गाँव से सुखदेव का फोन

दोबारा आया, पर इस बार खबर अस्पताल जाने की नहीं, श्मशान जाने की थी। रामशरण बाबू सोते-सोते ही शांत हो गए थे।

अमित जब गाँव पहुँचा, तो धूप वैसे ही ओसारे पर पसरी थी। गाँव वालों की भीड़ थी, पर उस भीड़ में भी एक अजीब सा खालीपन था। मुखाग्नि देने के बाद, जब सब औपचारिकताएं पूरी हो गईं, तो अमित भारी कदमों से पिता के उस शांत कमरे में गया। अलमारी खुली थी, जिसमें उनके कुछ गिने-चुने सूती कुर्ते टंगे थे। तकिये के नीचे कुछ उभरा हुआ सा था।

अमित ने हाथ बढ़ाकर देखा। वह वही चमड़े की जिल्द वाली कीमती डायरी थी, जो वह अपने शहर के घर से गायब समझ रहा था। अमित ने कांपते हाथों से डायरी का पहला पन्ना पलटा। रामशरण बाबू के जाने-पहचाने, सधे हुए अक्षरों में एक 'आखरी चिट्ठी' लिखी थीः

'प्रिय अमित,

दीर्घायु हो। तुम मुझे शहर ले गए, तुमने मुझ पर लाखों खर्च किए, इसके लिए तुम्हारा आभार। लोग कहते हैं कि तुमने बेटे का फर्ज निभाया। लेकिन बेटा, तुम्हारी उस गगनचुंबी हवेली में सब कुछ था, बस संवाद नहीं था। रोटी समय पर मिलती थी, पर उसमें अपनत्व का स्वाद नहीं था। मुझे तुम्हारी दौलत या उस वातानुकूलित कमरे की जरूरत नहीं थी, मुझे तो बस तुम्हारा वह आधा घंटा चाहिए था, जो कभी बचपन में तुम मेरी गोदी में बैठकर बिताते थे। वहाँ कोई मुझसे बात करने वाला नहीं था। मैं उस घर में एक लाश की तरह था, जिसे बस जिंदा रखने की दवाइयाँ दी जा रही थीं। मैं उस आंगन की तुलसी जैसा हूँ बेटा, जिसे कांक्रीट के गमले में आलीशान फ्लैट में तो रख दिया गया, लेकिन उसे अपनी मिट्टी की धूप और खुली हवा नसीब नहीं हुई। अपना ख्याल रखना...'

अमित के हाथ से डायरी छूटकर फर्श पर गिर पड़ी। उसकी आँखों के बांध टूट चुके थे। एक अजीब सी छटपटाहट के साथ वह कमरे से बाहर भागा और सीधे आंगन के उस तुलसी के चौरे के पास जाकर घुटनों के बल बैठ गया। उसने सूखी, बेजान तुलसी के तने को अपनी हथेलियों में थाम लिया।

तेज हवा का एक झोंका आया, जिससे सूखे पत्ते चरमराए। अमित रो रहा था, फूट-फूटकर। लेकिन अब उस आंगन में उसकी सिसकियों को सुनने वाला कोई नहीं था, सिवाय उस सूखी तुलसी के, जो शायद अब हमेशा के लिए मौन हो चुकी थी।

-मीना झा

रेलवे स्टेशन पर खाने की कीमत बढ़ाने का फैसला वापस यात्रियों के विरोध के बाद मध्य रेलवे ने लिया यू-टर्न

मुंबई सहित मध्य रेलवे के कई स्टेशनों पर खाद्य पदार्थों की कीमत बढ़ाने का फैसला फिलहाल टाल दिया गया है। यात्रियों और सामाजिक संगठनों के विरोध के बाद मध्य रेलवे प्रशासन ने दरवृद्धि संबंधी परिपत्र वापस ले लिया। दरअसल, रेलवे प्रशासन ने १ जून से स्टेशन पर मिलने वाले वड़ा पाव, समोसा, सैंडविच, पफ, फ्रैंकी और साबूदाना वडा जैसे खाद्य पदार्थों के दाम बढ़ाने की तैयारी की थी। प्रस्तावित नए दरों के अनुसार ₹१३ में मिलने वाला वड़ा पाव ₹२० तक पहुंचने वाला था, जबकि समोसे और अन्य स्नैक्स की कीमतों में भी भारी बढ़ोतरी तय की गई थी। जैसे ही यह खबर सामने आई, मुंबई लोकल यात्रियों में नाराजगी फैल गई। यात्रियों का कहना था कि रेलवे स्टेशन पर पहले से ही खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता और सफाई को लेकर शिकायतें रहती हैं, ऐसे में सीधे कीमतें बढ़ाना आम यात्रियों पर अतिरिक्त बोझ डालने जैसा है।

कई यात्री संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी इस फैसले का विरोध किया। उनका कहना था कि रोज लाखों लोग लोकल ट्रेन से सफर करते हैं और स्टेशन पर मिलने वाला सस्ता नाश्ता उनके लिए जरूरी सुविधा है। महंगाई के दौर में इस तरह की दरवृद्धि आम लोगों के बजट पर सीधा असर डालती। विरोध बढ़ने के बाद मध्य रेलवे ने यू-टर्न लेते हुए दरवृद्धि का परिपत्र वापस ले लिया। रेलवे प्रशासन ने स्पष्ट किया कि फिलहाल पुराने दर ही लागू रहेंगे और नए प्रस्ताव पर दोबारा विचार किया जाएगा। हालांकि इस पूरे मामले ने रेलवे स्टेशनों पर खानपान व्यवस्था को लेकर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। यात्रियों का कहना है कि रेलवे को पहले खाने की गुणवत्ता, सफाई और तय कीमतों का पालन सुनिश्चित करना चाहिए, उसके बाद ही किसी प्रकार की दरवृद्धि पर फैसला लेना चाहिए।

वेदांता ग्रुप के दिल्ली-मुंबई दफ्तरों पर ED की छापेमारी, पैरेंट कंपनी को रॉयल्टी भुगतान पर बढ़ा विवाद

देश के दिग्गज उद्योगपति अनिल अग्रवाल के नेतृत्व वाले 'वेदांता ग्रुप' पर केंद्रीय जांच एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय (ED) का बड़ा शिकंजा कसा है। विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (FEMA) के नियमों के कथित उल्लंघन के मामले में ED ने मंगलवार को कंपनी के दिल्ली और मुंबई स्थित मुख्य कॉर्पोरेट कार्यालयों पर छापेमारी की। जांच एजेंसी की यह कार्रवाई ऐसे संवेदनशील समय पर हुई है, जब समूह अपने पूरे बिजनेस को पांच अलग-अलग लिस्टेड कंपनियों में विभाजित (डिमर्जर) करने की प्रक्रिया के अंतिम दौर में है।

इस हाई-प्रोफाइल कार्रवाई का सीधा संबंध भारतीय यूनिट 'वेदांता लिमिटेड' द्वारा अपनी विदेशी मूल (पैरेंट) कंपनी 'वेदांता रिसोर्सेज' को किए गए भारी-भरकम रॉयल्टी भुगतान से है। ब्रिटेन (UK) में स्थित पैरेंट कंपनी इस समय करीब ₹७४,००० करोड़ के विशालकाय कर्ज संकट से जूझ रही है। जांच एजेंसी को संदेह है कि इस कर्ज को चुकाने और फंड का प्रबंधन करने के लिए भारतीय इकाई से विदेश भेजे गए मोटे रॉयल्टी फंड के लेन-देन में विदेशी मुद्रा कानूनों व नियमों को ताक पर रखा गया।

इस अचानक हुई कार्रवाई पर वेदांता समूह के प्रवक्ता ने आधिकारिक बयान जारी कर अपनी स्थिति स्पष्ट की है। कंपनी का कहना है कि वे जांच अधिकारियों के साथ पूरा सहयोग कर रहे हैं और मांगे गए सभी वित्तीय दस्तावेज व जानकारियां उपलब्ध कराई जा रही हैं। प्रवक्ता ने दोहराया कि वेदांता देश के सभी लागू कानूनों का पालन करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है, हालांकि मामला अभी रेगुलेटरी प्रक्रिया के अधीन होने के कारण वे इस स्तर पर अधिक टिप्पणी नहीं कर सकते।

ED के इस कड़े एक्शन की खबर आम होते ही घरेलू शेयर बाजार में वेदांता लिमिटेड के शेयरों में गिरावट दर्ज की गई, जहां दोपहर के कारोबार में स्टॉक ०.७% टूटकर ₹३३४.६ के स्तर पर आ गया। उल्लेखनीय है कि ₹१.३ लाख करोड़ के मार्केट कैप वाली इस कंपनी को इसी साल मई में अपने डिमर्जर के लिए आवश्यक मंजूरियां मिली थीं, जिसके तहत इसके बिजनेस को पांच वर्टिकल्स में बांटकर चार नई कंपनियों को बाजार में लिस्ट कराने की योजना है।

ब्लैक रोज़

'मैंने उस 'ब्लैक रोज़' का सुराग ढूंढ लिया है,' कबीर ने कहा। 'ब्लैक रोज़'–यह उस शातिर ठग (फ्रॉडस्टर) का कोडनेम था, जिसने पिछले दो सालों में देश के पांच बड़े बिजनेसमैन को अपनी खूबसूरती और झूठी कंपनियों के जाल में फंसाकर करीब दो सौ करोड़ रुपये का चूना लगाया था। पुलिस और खुफिया एजेंसियां उसके पीछे थीं, और कबीर को भी एक बड़ी फर्म ने इसी केस को सुलझाने का जिम्मा सौंपा था।

उस रात मुंबई की बारिश थपने का नाम नहीं ले रही थी। 'द कैफे लाउंज' के कोने वाली टेबल पर बैठी कबीर की नजरें बार-बार अपनी कलाई पर बंधी घड़ी और कैफे के कांच वाले दरवाजे पर टिक जाती थीं। कबीर, जो शहर का एक जाना-माना प्राइवेट कॉर्पोरेट इनवेस्टिगेटर था, आज पहली बार किसी अपराधी को पकड़ने के लिए नहीं, बल्कि किसी के इंतजार में बेचैन था।

तभी दरवाजे पर लगी घंटी बजी। एक लड़की अंदर आई–गीले सुनहरे बाल, गहरे नीले रंग का ट्रेंच कोट और आँखों में एक अजीब सा सम्मोहन। वह अहाना थी। वही अहाना, जिससे कबीर को पिछले छह महीनों में बेपनाह मोहब्बत हो चुकी थी।

'सॉरी कबीर, थोड़ा लेट हो गई,' अहाना ने कबीर के सामने बैठते हुए अपनी जादुई मुस्कान बिखेरी।

कबीर ने उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया। उसकी उंगलियां ठंडी थीं। 'तुम्हारे लिए तो मैं पूरी जिंदगी इंतजार कर सकता हूँ, अहाना। लेकिन आज मुझे तुम्हें कुछ बताना है।' कबीर की आवाज में गंभीरता थी।

'क्या?' अहाना ने कॉफी का सिप लेते हुए पूछा।

'मैंने उस 'ब्लैक रोज़' का सुराग ढूंढ लिया है,' कबीर ने कहा। 'ब्लैक रोज़'–यह उस शातिर ठग (फ्रॉडस्टर) का कोडनेम था, जिसने पिछले दो सालों में देश के पांच बड़े बिजनेसमैन को अपनी खूबसूरती और झूठी कंपनियों के जाल में फंसाकर करीब दो सौ करोड़ रुपये का चूना लगाया था। पुलिस और खुफिया एजेंसियां उसके पीछे थीं, और कबीर को भी एक बड़ी फर्म ने इसी केस को सुलझाने का जिम्मा सौंपा था।

अहाना के हाथ में पकड़ा हुआ कॉफी का कप थोड़ा सा डगमगाया, पर उसने फौरन खुद को संभाल लिया। 'सच में? कौन है वह?' उसने बेहद सहजता से पूछा।

'वह कोई लड़का नहीं, एक लड़की है। वह इतनी शातिर है कि हर फ्रॉड के बाद अपना चेहरा, पहचान और शहर बदल लेती है। लेकिन उसने एक गलती कर दी,' कबीर ने अहाना की आँखों में देखते हुए कहा, 'उसने अपने आखिरी शिकार, सिंघानिया ग्रुप के लॉकर से एक कीमती हीरा चुराया था, जिसे कल रात मुंबई के एक ब्लैक मार्केट डीलर को बेचा गया है। और उस डीलर ने मुझे उस लड़की का असली पता दे दिया है।'

अहाना की आँखें थोड़ी सुकड़ीं। उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'वाह कबीर! तुम सच में जीनियस हो। तो कब पकड़ रहे हो उसे?'

'आज रात ठीक बारह बजे। पुलिस के साथ मैं उसके ठिकाने पर जा रहा हूँ। लेकिन उससे पहले, मैं तुम्हारे साथ यह वक्त बिताना चाहता था।' कबीर ने अहाना के हाथ को थोड़ा और भींचा। उस स्पर्श में दोनों तरफ से एक अजीब सी कशमकश थी–एक तरफ शिद्दत वाला प्यार था, तो दूसरी तरफ कुछ ऐसा जो छुपाया जा रहा था।

रात के ११:३० बज चुके थे। अहाना ने कबीर से विदा ली, 'ऑल द बेस्ट कबीर। अपना ख्याल रखना। कल सुबह मिलते हैं।'

कबीर उसे जाते हुए देखता रहा। जैसे ही अहाना की टैक्सी ओझल हुई, कबीर के चेहरे से वह आशिकों वाली मासूमियत गायब हो गई। उसकी जगह एक ठंडे, पेशेवर इनवेस्टिगेटर ने ले ली थी। उसने अपना फोन निकाला और पुलिस कमिश्नर को डायल किया, 'हेलो सर, वह जाल में फंस चुकी है। वह अपने फ्लैट की तरफ ही जा रही है।'

दरअसल, कबीर को दो दिन पहले ही पता चल चुका था कि जिस अहाना से वह बेइंतहा प्यार करता है, वही 'ब्लैक रोज़' है। यह सच जानकर कबीर का दिल टूट गया था, लेकिन उसका फर्ज और कानून के प्रति उसकी वफादारी भारी पड़ी। उसने अहाना को पकड़ने के लिए ही आज कैफे में यह पूरा नाटक रचा था ताकि वह घबराकर अपने ठिकाने पर भागे।

ठीक बारह बजे, कबीर पुलिस की एक टीम के साथ अहाना के आलीशान अपार्टमेंट का दरवाजा तोड़कर अंदर दाखिल हुआ। पूरा घर खाली था। अलमारियां खुली थीं, जैसे कोई जल्दबाजी में सब समेट कर भागा हो।

कबीर का दिल बैठ गया। क्या वह हार गया? क्या 'ब्लैक रोज़' फिर से चकमा दे गई?

तभी उसकी नजर बेडरूम की मेज पर पड़ी। वहाँ एक ब्लैक रोज़ (काले रंग का गुलाब) और एक बंद डायरी रखी थी। कबीर भारी कदमों से आगे बढ़ा। उसने डायरी खोली। डायरी के बाकी सारे पन्ने खाली थे, बस आखिरी यानी २५वें पन्ने पर अहाना की खूबसूरत हैंडराइटिंग में कुछ लिखा था। कबीर ने पढ़ना शुरू किया:

'मेरे प्यारे कबीर,

तुमने ठीक कहा था, मैं बहुत शातिर हूँ। लेकिन तुम मुझसे भी ज्यादा जीनियस निकले। तुम्हें क्या लगा, कैफे में जब तुम मुझे वह कहानी सुना रहे थे, तो मैं तुम्हारी आँखों में छुपा सच नहीं पढ़ पा रही थी? मैं तो तुम्हारी धड़कनें तक पहचानती हूँ।

हाँ, मैं 'ब्लैक रोज़' हूँ। मैंने दुनिया को लूटा क्योंकि इस दुनिया ने कभी मेरे साथ इंसाफ नहीं किया था। पैसा और धोखा ही मेरी जिंदगी बन चुके थे। लेकिन कबीर, इस खेल के बीच तुमसे मोहब्बत होना मेरी सबसे बड़ी गलती थी... या शायद मेरी जिंदगी का सबसे खूबसूरत अहसास। मैंने जिंदगी में हर चीज का ढोंग किया, पर तुमसे किया हुआ प्यार कभी झूठा नहीं था।

जब तुम यह खत पढ़ रहे होगे, मैं इस शहर की सरहद पार कर चुकी होऊंगी। मैं चाहती तो तुम्हें भी कोई नशीली चीज देकर हमेशा के लिए सुला सकती थी, लेकिन मैं अपनी मोहब्बत को नुकसान नहीं पहुँचा सकती।

मेज के दराज में एक पेन ड्राइव है, उसमें उन सभी भ्रष्ट बिजनेसमैन के काले कारनामों के सबूत हैं जिन्हें मैंने लूटा था। यह केस तुम्हारी जिंदगी का सबसे बड़ा टर्निंग पॉइंट बनेगा, तुम्हें प्रमोशन मिलेगा।

तुमने अपना फर्ज निभाया कबीर, और मैंने अपना इश्क। अगर किसी दूसरी दुनिया में कानून और पैसों की यह दीवारें नहीं हुईं, तो मैं सिर्फ तुम्हारी अहाना बनकर लौटूँगी... अलविदा।'

कबीर के हाथ से डायरी छूट गई। उसने फौरन दराज खोला। वहाँ सचमुच वह पेन ड्राइव रखी थी, जिसके साथ एक छोटा सा नोट था– 'सिंघानिया का वह हीरा तुम्हारी कोट की बाईं जेब में रख दिया है, जब तुमने कैफे में मुझे गले लगाया था। उसे पुलिस को सौंप देना।'

कबीर ने अपने कोट की जेब में हाथ डाला। उसकी उंगलियों में वह कीमती हीरा आ गया। तभी पीछे खड़े पुलिस इंस्पेक्टर ने पूछा, 'सर, क्या कुछ मिला? कहाँ है ब्लैक रोज़?' कबीर ने अपनी आँखें बंद कीं। उसके दिमाग में अहाना का वह हंसता हुआ चेहरा घूम गया। उसने एक गहरी सांस ली, हीरे और पेन ड्राइव को अपनी मुट्ठी में बंद किया, और मुड़कर बोला, 'वह निकल चुकी है इंस्पेक्टर। बोट या प्राइवेट प्लेन... हमें नए सिरे से जांच करनी होगी।'

कबीर ने अहाना को भगाने में मदद नहीं की थी, लेकिन वह उसे ढूंढने की जल्दी में भी नहीं था। उस अपराधी से उसे नफरत थी, पर उस २५वें पन्ने पर लिखे शब्दों ने कबीर के अंदर के आशिक को हमेशा के लिए अहाना का कैदी बना दिया था। - सरला सैनी

बर्मा का अचार

शर्मा जी की जिंदगी में दो ही चीजों का सबसे बड़ा खौफ था–एक उनकी धर्मपत्नी विमला देवी का गुस्सा, और दूसरा उनके पड़ोसी गुप्ता जी का 'झबरू'। झबरू कोई इंसान नहीं, बल्कि एक बेहद बदतमीज, गोल-मटोल और लालची किस्म का अल्सेशियन कुत्ता था, जो अक्सर शर्मा जी के घर के सामने ही अपनी दैनिक दिनचर्या पूरी करता था।

किस्सा उस दिन शुरू हुआ जब विमला जी ने बर्मा (म्यांमार) से आई अपनी मौसी के हाथों भेजा हुआ 'स्पेशल कटहल का अचार' धूप में सूखने के लिए आंगन की मुंडेर पर रखा। विमला जी ने कड़े शब्दों में शर्मा जी को हिदायत दी थी, 'देखिए जी, इस अचार पर अपनी गिद्ध जैसी नजरें मत डालना। इसे अगले महीने बिटिया की शादी में मेहमानों के लिए सहेज कर रखना है। अगर एक पीस भी कम हुआ, तो रात का खाना भूल जाना।'

शर्मा जी ने अपनी लार घोंटते हुए आज्ञाकारी पति की तरह सिर हिला दिया। लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था।

दोपहर में जब विमला जी सो रही थीं, शर्मा जी ने देखा कि गुप्ता जी का झबरू मुंडेर के पास मँडरा रहा है। इससे पहले कि शर्मा जी उसे भगाते, झबरू ने छलांग लगाई और अचार की पूरी बरनी नीचे गिरा दी। बरनी टूटी नहीं, लेकिन उसका ढक्कन खुल गया और झबरू ने पलक झपकते ही आधा अचार चट कर लिया।

शर्मा जी के हाथ-पांव फूल गए। विमला जी जाग गईं तो उनका 'अचार-विस्फोट' पूरे मोहल्ले को ले डूबेगा। उन्होंने आनन-फानन में झबरू को डांटा, 'हट पापी!' झबरू ने उन्हें एक ऐसी सुस्ती भरी नजर से देखा जैसे कह रहा हो–'मसाला थोड़ा कम था, अगली बार नमक तेज रखना'– और वहां से टहलते हुए निकल गया।

अब शर्मा जी के सामने यक्ष प्रश्न था–बरनी को वापस कैसे भरा जाए? उन्होंने अपनी अक्ल के घोड़े दौड़ाए। वे चुपके से रसोई में गए, बाजार से लाया हुआ आम का सस्ता अचार निकाला, उसमें थोड़ा गरम मसाला और सिरका मिलाया, और उसे बर्मा वाले कटहल के अचार के साथ मिक्स करके बरनी में ठूंस दिया। ऊपर से ढक्कन बंद करके ऐसे रख दिया जैसे कुछ हुआ ही न हो।

विमला जी ने उन्हें घूरकर देखा, पर बात

शाम को विमला जी जागीं। उन्होंने मुंडेर पर जाकर बरनी देखी। वे कुछ बुदबुदाईं, 'अजी सुनते हो, इस बर्मा के अचार का रंग थोड़ा बदला-बदला क्यों लग रहा है? और इसमें आम की गुठली कहाँ से आई? कटहल के अचार में आम?' शर्मा जी के माथे पर पसीना आ गया, पर उन्होंने एक मंझे हुए वकील की तरह पासा फेंका, 'अरे भाग्यवान! तुम्हें बर्मा के भूगोल का अंदाज़ा नहीं है। वहाँ ग्लोबल वार्मिंग की वजह से कटहल के पेड़ पर ही आम उगने लगे हैं। इसे 'हाइब्रिड अचार' कहते हैं। तुम भी न, बस शक करती रहती हो।'

आई-गई हो गई। असली ट्विस्ट अगली सुबह आया।

गुप्ता जी रोते-बिलखते शर्मा जी के घर आए। उनकी आँखों में आंसू थे। 'शर्मा भाईसाहब! अनर्थ हो गया। हमारा झबरू... वह अब इस दुनिया में नहीं रहा। कल रात से ही वह सुस्त था, और आज सुबह उसने दम तोड़ दिया।'

यह सुनते ही शर्मा जी के पैरों तले जमीन

MONAD UNIVERSITY
Established by UP State Govt. Act 23 of 2010
& U/S 2 (f) of U.G.C. Act 1956
Recognized & Approved by : UGC | UP Govt. | PCI | BCI | NCTE | AIU
आज़ादी का अमृत महोत्सव
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

शिक्षित महिला - सशक्त भारत
ADMISSIONS OPEN 2024-25

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल ऑफर के साथ

खिसक गई। उनके दिमाग में बिजली कौंधी–'हे भगवान! इसका मतलब मौसी का वह बर्मा वाला अचार असल में जहरीला था? और वही हाइब्रिड अचार कल मैंने विमला को भी चखाया था और खुद भी एक टुकड़ा खाया था!' शर्मा जी को अपनी छाती में एक हल्का सा दर्द महसूस होने लगा। उन्हें लगा कि यमराज अपनी भैंस पर बैठकर उनके लिविंग रूम में दाखिल हो चुके हैं। वे हांफते हुए सोफे पर गिर पड़े।

'क्या हुआ जी?' विमला जी दौड़कर आईं।

'विमला... मुझे माफ कर देना,' शर्मा जी ने कांपती आवाज में कहा, 'वह बर्मा का अचार... वह शापित था। झबरू उसे खाकर मर गया। और कल... कल मैंने भी उसमें से एक पीस खाया था। मेरी वसीयत... अलमारी के तीसरे दराज में...'

विमला जी ने अपना सिर पकड़ लिया, 'अरे छोड़ो वसीयत को! डॉक्टर को फोन लगाओ।'

पूरे मोहल्ले में हंगामा मच गया। गुप्ता जी झबरू के लिए रो रहे थे और शर्मा जी अपनी आने वाली मौत के गम में दहाड़ें मार रहे थे। तभी वहां मोहल्ले के आवारा लड़कों का लीडर, 'राजू' आया। राजू ने गुप्ता जी से कहा, 'अरे गुप्ता अंकल, आप झबरू के लिए क्यों रो रहे हो? कल रात को हमारी क्रिकेट की बॉल आपकी छत पर गई थी। मैंने देखा था कि झबरू ने हलवाई की दुकान से चुराया हुआ पूरा का पूरा ढाई किलो का 'शाही घेवर' अकेले ही साफ कर दिया था। डॉक्टर कह रहे हैं कि वह मरे डिप्रेशन या जहर से नहीं, 'ओवर-ईटिंग' और भयंकर शुगर अटैक से मरा है!'

माहौल में एक पल के लिए सन्नाटा छा गया।

शर्मा जी, जो अब तक मरने की एक्टिंग (या डर) में आँखें बंद किए हुए थे, उन्होंने धीरे से एक आँख खोली। 'क्या? घेवर से मरा?'

'हाँ अंकल!' राजू ने कहा।

शर्मा जी सीधे उठकर बैठ गए। उनका छाती का दर्द गायब हो चुका था। उन्होंने विमला जी की तरफ देखा, जो अब हाथ में बेलन लिए उन्हें यमराज से भी ज्यादा खौफनाक नजरों से घूर रही थीं।

'तो... ग्लोबल वार्मिंग... हाइब्रिड अचार... कटहल के पेड़ पर आम?' विमला जी की आवाज में ज्वालामुखी फटने के संकेत थे।

शर्मा जी ने एक बार फिर सूझबूझ दिखाई। वे फौरन सोफे से उठे, अपने दोनों कान पकड़े और बोले, 'भाग्यवान, झबरू तो ढाई किलो घेवर खाकर मरा, लेकिन अगर मैं यहाँ एक सेकंड और रुका, तो मैं बिना कुछ खाए ही मारा जाऊँगा।' और इससे पहले कि बेलन हवा में लहराता, शर्मा जी 'बर्मा के अचार' की रफ्तार से घर से बाहर भाग खड़े हुए।

पीछे पूरा मोहल्ला और खुद गुप्ता जी भी अपनी हंसी नहीं रोक पा रहे थे। **-आनंद गुप्ता**

विमला जी ने अपना सिर पकड़ लिया, 'अरे छोड़ो वसीयत को! डॉक्टर को फोन लगाओ।' पूरे मोहल्ले में हंगामा मच गया। गुप्ता जी झबरू के लिए रो रहे थे और शर्मा जी अपनी आने वाली मौत के गम में दहाड़ें मार रहे थे। तभी वहां मोहल्ले के आवारा लड़कों का लीडर, 'राजू' आया। राजू ने गुप्ता जी से कहा, 'अरे गुप्ता अंकल, आप झबरू के लिए क्यों रो रहे हो? कल रात को हमारी क्रिकेट की बॉल आपकी छत पर गई थी। मैंने देखा था कि झबरू ने हलवाई की दुकान से चुराया हुआ पूरा का पूरा ढाई किलो का 'शाही घेवर' अकेले ही साफ कर दिया था। डॉक्टर कह रहे हैं कि वह मरे डिप्रेशन या जहर से नहीं, 'ओवर-ईटिंग' और भयंकर शुगर अटैक से मरा है!'

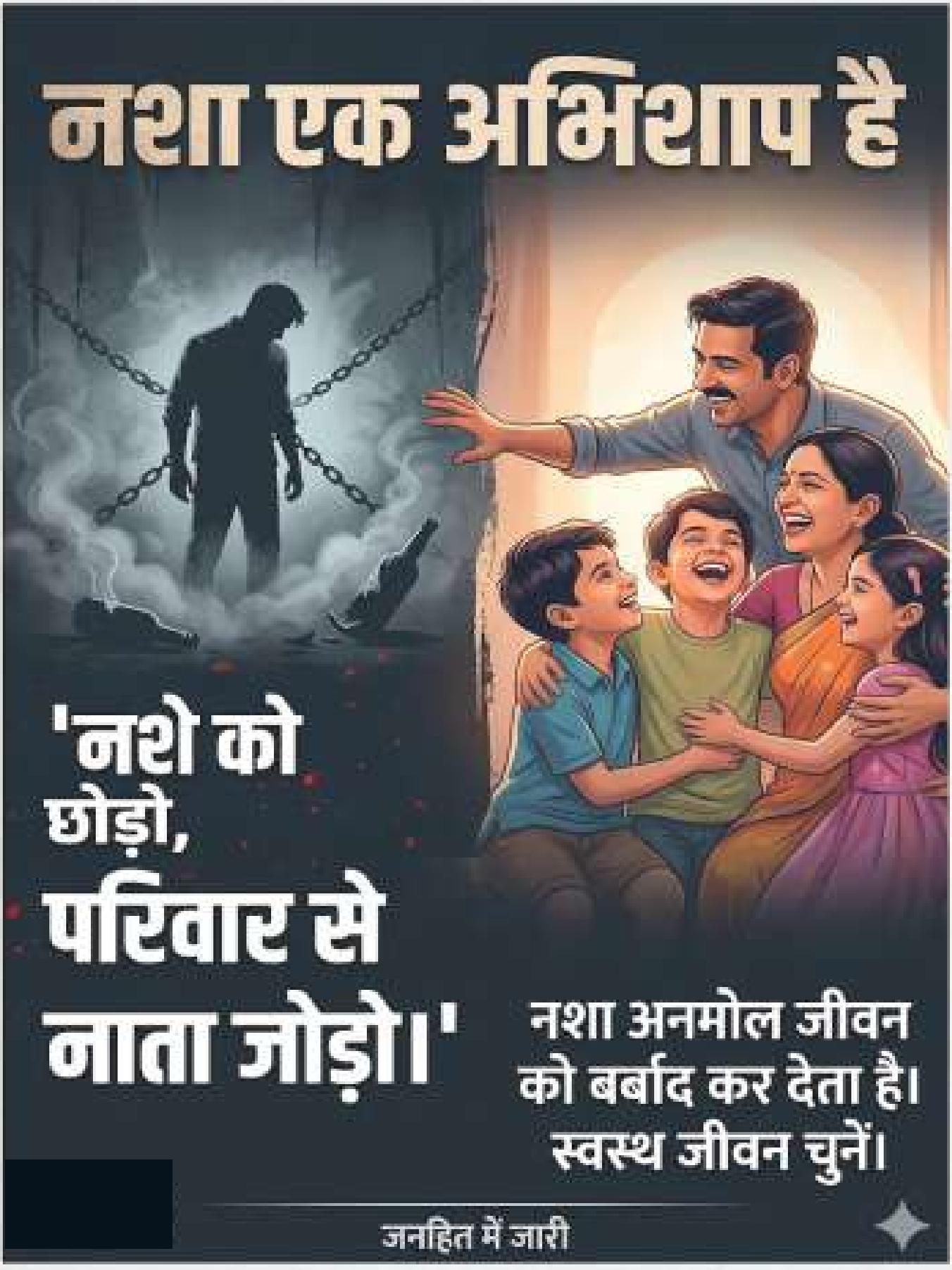
नशा एक अभिशाप है
'नशे को छोड़ो, परिवार से नाता जोड़ो।'
नशा अनमोल जीवन को बर्बाद कर देता है। स्वस्थ जीवन चुनें।
जनहित में जारी

फ्रांस में हैवानियतः

बॉयफ्रेंड ने प्रेमिका को ४८७ पुरुषों के साथ संबंध बनाने पर किया मजबूर,

फ्रांस से एक ऐसा सनसनीखेज और दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है, जिसने पूरी दुनिया को झकझोर कर रख दिया है। एक विकृत मानसिकता वाले शख्स ने प्यार के रिश्ते को कलंकित करते हुए अपनी ही प्रेमिका को पिछले ७ सालों से नरक की जिंदगी जीने पर मजबूर कर दिया। आरोपी ने कथित तौर पर अपनी प्रेमिका को नशीली दवाएं देकर ४८७ से अधिक पुरुषों के साथ शारीरिक संबंध बनाने के लिए मजबूर किया और इस घिनौने कृत्य से मोटी रकम कमाई। इस क्रूरता की कहानी जैसे ही सामने आई, फ्रांस समेत पूरी दुनिया में हड़कंप मच गया है।

लव जिहाद या केवल लालच? कैसे शुरू हुआ यह खौफनाक खेल

रिपोर्ट्स के अनुसार, पीड़िता और आरोपी पिछले कई सालों से साथ रह रहे थे। पीड़िता को अंदाजा भी नहीं था कि जिस शख्स को वह अपना हमसफर मान रही है, वही उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा दुश्मन बन जाएगा। शुरुआती जांच में सामने आया है कि आरोपी बॉयफ्रेंड ने पैसों की हवस और अपनी विकृत मानसिकता के कारण अपनी प्रेमिका का सौदा करना शुरू किया। वह इंटरनेट और डार्क वेब के जरिए पुरुषों से संपर्क करता था और अपनी प्रेमिका को उनके पास भेजता था या फिर उन्हें अपने घर बुलाता था।

केमिकल सबमिशन (Chemical Submission) का खौफनाक इस्तेमाल

इस पूरे मामले में सबसे चौंकाने वाला और डरावना पहलू 'केमिकल सबमिशन' (दवाओं के जरिए किसी को वश में करना) का है। नशीली दवाओं का ओवरडोजः आरोपी अपनी प्रेमिका को खाने और पीने की चीजों में भारी मात्रा में नशीली और बेहोशी की दवाएं मिलाकर देता था। अचेत अवस्था में शोषणः जब पीड़िता पूरी तरह से बेसुध हो जाती थी, तब आरोपी अन्य पुरुषों को बुलाकर उसका यौन शोषण करवाता था। दवाओं के इस भारी ओवरडोज के कारण पीड़िता को अक्सर यह समझ ही नहीं आता था कि उसके साथ क्या हो रहा है और अगली सुबह वह बेहद कमजोरी महसूस करती थी।

७ साल बाद ऐसे हुआ इस खौफनाक राज का पर्दाफाश

यह सिलसिला करीब ७ सालों तक यूं ही चलता रहा। पीड़िता लगातार बीमार रहने लगी थी और उसकी मानसिक स्थिति भी बिगड़ने लगी थी। मामला तब रोशनी में आया जब महिला की तबीयत हद से ज्यादा खराब हो गई और डॉक्टरों को उसकी मेडिकल रिपोर्ट में भारी मात्रा में नशीले और प्रतिबंधित ड्रग्स के अंश मिले। डॉक्टरों को कुछ गड़बड़ होने का शक हुआ, जिसके बाद पुलिस को इसकी सूचना दी गई। जब पुलिस ने सख्ती से जांच की और महिला के घर और डिजिटल डिवाइस (लैपटॉप और मोबाइल) को खंगाला, तो जो सच सामने आया उसने पुलिस अधिकारियों के भी होश उड़ा दिए। आरोपी के पास से उन सभी ४८७ पुरुषों का रिकॉर्ड और पीड़िता के आपत्तिजनक वीडियो-फोटोज मिले।

पुलिस की कार्रवाई और कानूनी शिकंजा

फ्रांसीसी पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी बॉयफ्रेंड को गिरफ्तार कर लिया है। उस पर मानव तस्करी (Human Trafficking), सामूहिक बलात्कार की साजिश रचने, बिना सहमति के नशीली दवाएं देने और गंभीर शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना के तहत मामले दर्ज किए गए हैं। 'यह केवल एक अपराध नहीं है, बल्कि मानवता के खिलाफ क्रूरता की पराकाष्ठा है। हम उन सभी ४८७ पुरुषों की पहचान कर रहे हैं जिन्होंने इस घिनौने कृत्य में हिस्सा लिया। उन सभी को सह-आरोपी बनाकर कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जाएगी।'

फ्रांस में बढ़ता 'स्लीपिंग पिल्स' के जरिए अपराध का ट्रेंड

इस घटना ने फ्रांस में हाल ही में हुए 'डोमिनिक पेलिकॉट' (Dominique Pelicot) मामले की यादें ताजा कर दी हैं, जहां एक पति अपनी पत्नी को दशकों तक नशीली दवाएं देकर अजनबियों से उसका रेप करवाता था। फ्रांस में इस तरह के मामलों को "Maniac boyfriend/husband syndrome" के रूप में देखा जा रहा है, और अब वहां की सरकार महिलाओं की सुरक्षा और नशीली दवाओं की बिक्री को लेकर सख्त कानून बनाने पर विचार कर रही है। फिलहाल पीड़िता को एक सुरक्षित स्थान पर रखा गया है, जहां मनोचिकित्सक और डॉक्टर्स की टीम उसकी काउंसलिंग और इलाज कर रही है। पूरा फ्रांस इस समय पीड़िता के लिए न्याय की मांग कर रहा है।

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-109

सभी के लिए सुनहरा

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

प्रश्नः आइरिस के मध्य वाले छोटे छेद को क्या कहते हैं?

प्रश्नः मनुष्य के स्वस्थ आंख में प्रतिबिंब कहां बनता है?

प्रश्नः 'फैदोमीटर' का उपयोग किसे मापने के लिए किया जाता है?

प्रश्नः किसका दृष्टि क्षेत्र सबसे बड़ा होता है?

प्रश्नः प्रकाश वर्ष किसकी माप है?

प्रश्नः लंबाई की सबसे छोटी माप कौन सी है?

प्रश्नः कार्य करने की क्षमता को क्या कहते हैं?

प्रश्नः फैराड किसका माप है?

प्रश्नः भारत की सबसे पुरानी सभ्यता कौन सी थी?

प्रश्नः प्रसिद्ध प्राचीन भारतीय ग्रंथ, आर्थशास्त्र, किसने लिखा था?

प्रश्नः वेदिक सभ्यता से जुड़ी कौन सी नदी है?

प्रश्नः महल में स्थित 'ग्रेट बाथ' कहां है?

प्रश्नः विश्व युद्ध घ्ध के दौरान पहला परमाणु बम किस शहर पर गिराया गया था?

प्रश्नः प्रसिद्ध कला कृति 'मोना लीसा' किसने बनाई थी?

प्रश्नः भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज किसने की थी?

प्रश्नः संयुक्त राज्य अमेरिका के पहले राष्ट्रपति कौन थे?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website: swarnimumbai.com

नामः .....

पूरा पताः .....

.....

.....

फोन नं.: .....

ई-मेलः .....

क्या सच में तकनीक ने बचपन छीन लिया?

रात के दस बजे हैं।

एक घर में पिता मोबाइल पर ऑफिस का काम देख रहे हैं।

मां रील्स स्क्रॉल कर रही है।

और उनका दस साल का बेटा हेडफोन लगाकर ऑनलाइन गेम खेल रहा है।

तीनों एक ही कमरे में हैं।

लेकिन तीनों अपनी-अपनी दुनिया में बंद हैं।

यहीं से सवाल उठता है –

क्या सच में तकनीक ने बचपन छीन लिया?

इस सवाल का जवाब सीधा 'हां' या 'नहीं' में देना आसान नहीं। क्योंकि तकनीक ने बच्चों से बहुत कुछ छीना भी है और बहुत कुछ दिया भी है। असल समस्या तकनीक नहीं, बल्कि उसका अनियंत्रित और अंधाधुंध इस्तेमाल है।

एक समय था जब बचपन का मतलब होता था – धूल में खेलना, साइकिल दौड़ाना, पेड़ों पर चढ़ना, चोट लगना, फिर उठकर दौड़ पड़ना।

मोहल्ले ही बच्चों की दुनिया होते थे।

शाम होते ही मैदान भर जाते थे।

आज मैदान खाली हैं।

लेकिन बच्चे गायब नहीं हुए।

क्या सच में तकनीक ने बचपन छीन लिया? इस सवाल का जवाब सीधा 'हां' या 'नहीं' में देना आसान नहीं। क्योंकि तकनीक ने बच्चों से बहुत कुछ छीना भी है और बहुत कुछ दिया भी है। असल समस्या तकनीक नहीं, बल्कि उसका अनियंत्रित और अंधाधुंध इस्तेमाल है।

वे अब मोबाइल स्क्रीन के अंदर कैद हो गए हैं।पहले बच्चे 'दोस्तों के साथ' खेलते थे।

अब 'ऑनलाइन खिलाड़ियों' के साथ खेलते हैं। पहले हारने पर दोस्त हंसते थे और बच्चा अगली बार बेहतर खेलना सीखता था।

अब हारने पर मोबाइल पटक दिया जाता है।

यानी तकनीक ने सिर्फ खेल नहीं बदले, बच्चों की सहनशक्ति और व्यवहार भी बदल दिए हैं। आज का बच्चा जानकारी में तेज है।

वह मोबाइल चलाना जानता है, इंटरनेट पर चीजें खोज सकता है, से सवाल पूछ सकता है।

लेकिन दूसरी तरफ वही बच्चा कई बारः

अकेले बैठ नहीं पाता,

जल्दी बोर हो जाता है,

छोटी बात पर चिड़चिड़ा हो जाता है,

और असली दुनिया से ज्यादा वर्चुअल दुनिया में सहज महसूस करता है।

यह बदलाव अचानक नहीं आया।

इसके पीछे परिवार, समाज और आधुनिक जीवनशैली तीनों जिम्मेदार हैं।

आज माता-पिता के पास समय कम है।

व्यस्त जीवन में मोबाइल 'डिजिटल खिलौना' बन गया है।

बच्चा रो रहा है? मोबाइल दे दो।

खाना नहीं खा रहा? कार्टून चला दो।

शांत बैठाना है? गेम दे दो।

शुरुआत में यह आसान समाधान लगता है।

लेकिन धीरे-धीरे यही आदत निर्भरता बन जाती है।

सबसे खतरनाक असर बच्चों की कल्पनाशक्ति पर पड़ा है।

पहले बच्चे कहानी सुनकर अपने मन में दृश्य बनाते थे। एक राजा, एक जंगल, एक परी – सब दिमाग में बनता था।

अब सबकुछ स्क्रीन पर तैयार मिलता है।

जब दिमाग को कल्पना करने की जरूरत ही नहीं पड़ती, तो उसकी रचनात्मकता कमजोर होने लगती है।

यही कारण है कि आज कई बच्चेः

किताबों से जल्दी ऊब जाते हैं,

लंबे समय तक ध्यान नहीं लगा पाते,

और हर चीज 'इंस्टेंट' चाहते हैं।

तकनीक ने बच्चों का धैर्य कम कर दिया है।

क्योंकि मोबाइल की दुनिया में सबकुछ तुरंत मिलता है –

वीडियो तुरंत, मनोरंजन तुरंत, जवाब तुरंत।

लेकिन असली जिंदगी 'लोडिंग स्क्रीन' की तरह नहीं चलती।

यहां इंतजार करना पड़ता है, हारना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है।

और शायद यही वजह है कि आज कई बच्चे छोटी असफलता भी सहन नहीं कर पाते।

हालांकि पूरी गलती तकनीक की भी नहीं है।

सच्चाई यह है कि तकनीक ने बच्चों को सीखने के नए अवसर भी दिए हैं।

आज गांव का बच्चा भीः

ऑनलाइन पढ़ सकता है,

नई भाषा सीख सकता है,

दुनिया की जानकारी पा सकता है,

अपनी कला दुनिया तक पहुंचा सकता है।

समस्या वहां शुरू होती है जहां तकनीक 'जरूरत' से निकलकर 'लत' बन जाती है।

एक और बड़ा बदलाव रिश्तों में आया है।

पहले बच्चे दादा-दादी से कहानियां सुनते थे। अब वही समय भ्दल्ऊलं और ध्ऊऊ खा गए हैं। घर में बातचीत कम हुई है।

साथ बैठना कम हुआ है।

परिवार एक छत के नीचे जरूर है, लेकिन मानसिक रूप से अलग-अलग स्क्रीन में बंट चुका है। आज कई बच्चे अपने माता-पिता से कम और मोबाइल से ज्यादा जुड़े हुए हैं।

यह स्थिति भविष्य में भावनात्मक दूरी पैदा कर सकती है।

स्कूलों पर भी इसका असर दिख रहा है।

शिक्षक लगातार शिकायत करते हैं कि बच्चों का ध्यान जल्दी भटकता है।

लंबा पढ़ना या शांत बैठना अब कई बच्चों के लिए मुश्किल हो गया है।

यानी तकनीक ने सिर्फ आदतें नहीं बदलीं, दिमाग की कार्यप्रणाली भी बदलनी शुरू कर दी है। लेकिन यहां एक महत्वपूर्ण सवाल भी है –

क्या तकनीक हटाकर समस्या हल हो जाएगी?

नहीं।

आज की दुनिया डिजिटल है।

मोबाइल और इंटरनेट से बच्चों को पूरी तरह दूर रखना भी अव्यावहारिक है। असल जरूरत 'प्रतिबंध' नहीं, 'संतुलन' की है।

अगर बच्चा दिनभर स्क्रीन पर है और परिवार के पास उसके लिए समय नहीं, तो दोष केवल मोबाइल का नहीं है। बच्चों को जरूरत हैः

मैदान की,

असली दोस्तों की,

किताबों की,

परिवार के समय की,

और बिना डर अपनी बात कहने की आजादी की।

तकनीक तब तक खतरा नहीं बनती जब तक वह इंसानी रिश्तों की जगह नहीं लेने लगती।

आज सबसे बड़ी चुनौती यही है –

बच्चों को डिजिटल दुनिया सिखाते-सिखाते कहीं हम उन्हें असली दुनिया से दूर तो नहीं कर रहे? अगर बचपन सिर्फ स्क्रीन, नोटिफिकेशन और ऑनलाइन दुनिया में सिमट गया, तो आने वाली पीढ़ी तकनीकी रूप से तेज जरूर होगी, लेकिन भावनात्मक रूप से कमजोर भी हो सकती है।

इसलिए सवाल यह नहीं कि तकनीक अच्छी है या बुरी। सवाल यह है कि हम उसे बच्चों के जीवन में कितनी जगह दे रहे हैं। क्योंकि बचपन वापस नहीं आता। और अगर वही खो गया, तो सबसे बड़ा नुकसान किसी मशीन का नहीं, इंसानियत का होगा।

रोंगटे खड़े कर देने वाली घरेलू हिंसा वारदात बहाने से पत्नी को मुरगा बनाकर दी यातनाएं

मुंबई के चेंबूर (आरसीएफ पुलिस थाना क्षेत्र) से घरेलू हिंसा और प्रताड़ना का एक बेहद हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहाँ एक शख्स ने अपनी ही पत्नी को बंधक बनाकर चार घंटे तक बेरहमी से पीटा और उसे जबरन 'मुरगा' बनाकर रखा। पुलिस ने मुस्तैदी दिखाते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। मिली जानकारी के मुताबिक, आरोपी ने अपनी २५ वर्षीय पत्नी को मायके से नए कपड़े और इत्र दिलाने के बहाने चेंबूर स्थित घर पर बुलाया था। जैसे ही महिला घर पहुंची, आरोपी ने उसे बंधक बना लिया। आरोपी ने महिला को जान से मारने और तेजाब फेंकने की धमकी देकर करीब चार घंटे तक प्रताड़ित किया। इस दौरान उसने महिला को जबरन 'मुरगा' (कोंबडा) की पोजीशन में खड़े रहने पर मजबूर किया। रात के समय जब आरोपी की आंख लगी, तो पीड़िता किसी तरह अपनी जान बचाकर वहां से भाग निकली और सीधे अपने मायके पहुंची। हालांकि, आरोपी को जैसे ही भनक लगी, वह चाकू लेकर उसके मायके पहुंच गया। उसने सरेराह पीड़िता

पर चाकू से हमला कर दिया। जब स्थानीय लोग महिला की मदद के लिए आगे आए, तो आरोपी ने बीच सड़क पर चाकू लहराकर भीड़ को भी डराने की कोशिश की, जिससे इलाके में दहशत का माहौल बन गया।

पुलिस जांच में सामने आया है कि गिरफ्तार आरोपी का नाम अरबाज अन्वरअली सय्यद (३०) है। पुलिस के अनुसार, आरोपी एक आदतन अपराधी है और उसके खिलाफ पहले से ही विभिन्न थानों में १८ आपराधिक मामले दर्ज हैं। गंभीर अपराधों में संलिप्तता के कारण प्रशासन ने आरोपी को दिसंबर २०२५ से अगले १२ महीनों के लिए इलाके से तड़ीपार (जिला बदर) किया हुआ था। इसके बावजूद वह अवैध रूप से क्षेत्र में रह रहा था। घटना की जानकारी मिलते ही आरसीएफ पुलिस की टीम तुरंत मौके पर पहुंची और आरोपी अरबाज को हथियार समेत हिरासत में ले लिया। गंभीर रूप से घायल महिला को तुरंत नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसका इलाज चल रहा है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ तड़ीपार आदेश के उल्लंघन, घरेलू हिंसा और जानलेवा हमले की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है।

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

महाराष्ट्र में ८९ हजार करोड़ का निवेश

क्या सच में बदलेगी महाराष्ट्र की तस्वीर?

महाराष्ट्र सरकार ने एक बार फिर बड़े-बड़े निवेश और हजारों नौकरियों का सपना दिखाया है। करीब ८९ हजार करोड़ रुपये के पांच बड़े औद्योगिक प्रोजेक्ट्स को मंजूरी दी गई है और दावा किया गया है कि इससे लगभग २० हजार रोजगार पैदा होंगे। खबर सुनने में शानदार लगती है। टीवी डिबेट्स में इसे 'महाराष्ट्र की औद्योगिक क्रांति' कहा जाएगा, अखबारों में 'ऐतिहासिक फैसला' लिखा जाएगा, लेकिन असली कहानी हमेशा प्रेस कॉन्फ्रेंस के पीछे छिपी होती है।

सरकार जिन प्रोजेक्ट्स को ला रही है, वे पुराने जमाने की फैक्ट्रियां नहीं हैं। इसमें सोलर सेल, इलेक्ट्रिकल स्टील, कोल गैसीफिकेशन, सिंथेटिक ग्रेफाइट और हाई-टेक मैन्युफैक्चरिंग जैसे सेक्टर शामिल हैं। मतलब साफ है–महाराष्ट्र अब सिर्फ मिलों और ऑटोमोबाइल तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि भविष्य की इंडस्ट्री पर दांव लगा रहा है। सरकार का लक्ष्य है कि राज्य को देश का सबसे बड़ा हाई-टेक इंडस्ट्रियल हब बनाया जाए।

लेकिन यहां सवाल शुरू होता है।

भारत में 'निवेश' और 'रोजगार' दो ऐसे शब्द हैं जिनका राजनीतिक इस्तेमाल सबसे ज्यादा होता है। हर कुछ महीनों में हजारों करोड़ के श्दळ साइन होते हैं, फोटो खिंचती है, नेताओं के बयान आते हैं, मगर जमीन पर कई प्रोजेक्ट सालों तक शुरू ही नहीं होते। कुछ फाइलों में दब जाते हैं, कुछ पर्यावरण मंजूरी में अटक जाते हैं और कुछ कंपनियां बाजार बदलते ही पीछे हट जाती हैं।

२० हजार रोजगार का दावा भी सुनने में बड़ा लगता है, लेकिन उसका मतलब समझना जरूरी है। सरकारें अक्सर अस्थायी मजदूर, कॉन्ट्रैक्ट स्टाफ और अप्रत्यक्ष रोजगार को भी इसी आंकड़े में जोड़ देती हैं। असली स्थायी नौकरियां कितनी होंगी, यह कभी साफ नहीं बताया जाता। और अगर नौकरियां बन भी गईं, तो क्या वे महाराष्ट्र के स्थानीय युवाओं को मिलेंगी? क्योंकि आज की हाई-टेक इंडस्ट्री को मशीन ऑपरेटर नहीं, बल्कि स्किल्ड इंजीनियर, ऑटोमेशन एक्सपर्ट और टेक्निकल प्रोफेशनल चाहिए। राज्य के कई छ्रढ्ढ और कॉलेज अभी भी पुराने सिलेबस पर चल रहे हैं। ऐसे में डर यही है कि बड़े पद बाहरी प्रोफेशनल्स ले जाएंगे और स्थानीय युवक सिक्योरिटी गार्ड या कॉन्ट्रैक्ट वर्कर बनकर रह जाएंगे।

सरकार इन कंपनियों को आकर्षित करने के लिए भारी रियायतें भी दे रही है–सस्ती जमीन, टैक्स में छूट, बिजली सब्सिडी और तेज मंजूरियां। सरकार का तर्क है कि अगर निवेश चाहिए तो कंपनियों को सुविधाएं देनी पड़ेंगी। लेकिन आम आदमी यही पूछ रहा है कि जब कॉरपोरेट्स के लिए हजारों करोड़ की राहत संभव है, तो किसानों के कर्ज, छोटे व्यापारियों या बेरोजगार युवाओं के लिए वही उदारता क्यों नहीं दिखाई जाती?

सबसे ज्यादा असर विदर्भ और मराठवाड़ा जैसे इलाकों में दिखने की बात कही जा रही है। विडंबना यह है कि यही वे क्षेत्र हैं जहां किसान आत्महत्या, बेरोजगारी और पलायन सबसे

ज्यादा चर्चा में रहे हैं। इसलिए सरकार इस निवेश को 'क्षेत्रीय विकास' का नाम दे रही है। लेकिन लोगों को पुराने वादे भी याद हैं। विदर्भ में पहले भी कई बड़े प्रोजेक्ट घोषित हुए थे, जिनमें से कई सिर्फ भाषणों तक सीमित रह गए।

एक और बड़ा मुद्दा पर्यावरण का है। कोल गैसीफिकेशन और भारी उद्योगों का मतलब है ज्यादा पानी, ज्यादा बिजली और ज्यादा प्रदूषण। जंगल वाले इलाकों में जमीन अधिग्रहण का विवाद भी खड़ा हो सकता है। भारत में विकास और विस्थापन अक्सर साथ-साथ चलते हैं, और इसका सबसे बड़ा बोझ गांव और किसान उठाते हैं। असल में यह खबर सिर्फ ८९ हजार करोड़ की नहीं है। यह उस नए भारत की तस्वीर है जहां राज्य सरकारें अब एक-दूसरे से निवेश छीनने की दौड़ में लगी हैं। गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र–सब चाहते हैं कि बड़ी कंपनियां उनके यहां आएं। इसलिए अब राजनीति सिर्फ भाषणों की नहीं, बल्कि 'कौन ज्यादा निवेश ला सकता है' की हो गई है।

लेकिन जनता के लिए अंतिम सवाल अब भी वही है– क्या यह विकास आम लोगों की जिंदगी बदलेगा? या फिर यह भी कुछ साल बाद सिर्फ पुरानी अखबारी हेडलाइन बनकर रह जाएगा?

खाड़ी देशों से डिपोर्टेशन का महासंकटः ५ साल, १.५ लाख पाकिस्तानी बाहर; जानें आखात में क्यों मची है खलबली

पिछले पांच वर्षों में सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात (UAE) जैसे प्रमुख खाड़ी देशों से १,५०,००० से अधिक पाकिस्तानी नागरिकों को वापस उनके देश भेज दिया गया है, जिसने पाकिस्तान सरकार की चिंताओं को बढ़ा दिया है। इस बड़े पैमाने पर हुई हकालपट्टी के पीछे कई गंभीर सामाजिक, आर्थिक और सुरक्षात्मक कारण शामिल हैं। खाड़ी देशों का आरोप है कि बड़ी संख्या में पाकिस्तानी नागरिक उमराह या टूरिस्ट वीजा पर वहां आते हैं और फिर जेद्दा तथा मक्का जैसे पवित्र शहरों में भीख मांगने वाले संगठित गिरोहों और जेब कतरी जैसी अवैध गतिविधियों में शामिल हो जाते हैं। इसके अलावा, कई लोग वीजा की अवधि समाप्त होने के बाद भी अवैध रूप से वहां रह रहे थे और वहां के स्थानीय प्रवासन नियमों का उल्लंघन कर रहे थे।

इस संकट का दूसरा पहलू भू-राजनीतिक सुरक्षा से जुड़ा है। पश्चिम एशिया में चल रहे मौजूदा तनाव और ईरान के साथ बढ़ते संघर्ष के बीच, संयुक्त अरब अमीरात सहित अन्य अरब राष्ट्रों ने अपनी आंतरिक सुरक्षा को बेहद सख्त कर दिया है। इस दौरान सोशल मीडिया पर की जाने वाली आपत्तिजनक टिप्पणियों, संदिग्ध गतिविधियों और स्थानीय कानूनों के उल्लंघन को लेकर पाकिस्तानी प्रवासियों पर कड़ी कार्रवाई की गई है। इस बड़े निष्कासन का सीधा और गहरा असर पाकिस्तान की पहले से बदहाल अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा, क्योंकि देश का विदेशी मुद्रा भंडार काफी हद तक खाड़ी देशों से आने वाले पैसों (रेमिटेंस) पर निर्भर है। साथ ही, अचानक डेढ़ लाख से ज्यादा लोगों के वतन लौटने से देश में बेरोजगारी का संकट और अधिक गंभीर होने की आशंका है, हालांकि पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय का दावा है कि वे इन नियमों के उल्लंघन को लेकर खाड़ी देशों के अधिकारियों के साथ लगातार संपर्क में हैं।

अमेरिका-ईरान ऐतिहासिक समझौता: ₹२५ लाख करोड़ का रीकंस्ट्रक्शन फंड और ट्रम्प का दावा

१. अमेरिका डायरेक्ट कैश नहीं देगा
२. खाड़ी देश उठाएंगे २५ लाख करोड़ का खर्च
३. ट्रम्प का परमाणु डील पर दावा बनाम ईरान का इनकार
४. ६० दिनों का सीजफायर और आगे की राह

अमेरिका और ईरान के बीच महीनों से चल रहा तनाव अब एक बड़े समझौते की तरफ बढ़ता दिख रहा है। न्यू यॉर्क टाइम्स और वैश्विक मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दोनों देशों के राजनयिकों ने एक ऐसे शांति समझौते (MOU) का मसौदा तैयार किया है, जिसके तहत ईरान को युद्ध के बाद अपने देश को दोबारा खड़ा करने के लिए ३०० बिलियन डॉलर (करीब २५ लाख करोड़ रुपये) का भारी-भरकम रीकंस्ट्रक्शन और इन्वेस्टमेंट फंड मिल सकता है। इस समझौते का मुख्य उद्देश्य फारस की खाड़ी में स्थित 'स्ट्रेट ऑफ होर्मुज' (Strait of Hormuz) के समुद्री रास्ते को व्यापार के लिए पूरी तरह सुरक्षित और टैक्स-फ्री खोलना है। हालांकि, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और ईरानी प्रशासन के बयानों में परमाणु कार्यक्रम को लेकर अभी भी भारी विरोधाभास देखने को मिल रहा है, जिससे इस डील पर सस्पेंस बना हुआ है।

इस समझौते की सबसे दिलचस्प बात यह है कि अमेरिका इस २५ लाख करोड़ रुपये के फंड में सीधे तौर पर अपनी जेब से कोई नकद (Direct Cash) मदद नहीं देगा। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने सलाहकारों और व्हाइट हाउस की सिचुएशन रूम मीटिंग में साफ कर दिया है कि अमेरिका ईरान को सीधे कोई पैसा ट्रांसफर नहीं करेगा। दरअसल, ट्रम्प पहले की ओबामा सरकार द्वारा ईरान को दिए गए 'कैश' की आलोचना करते रहे हैं, इसलिए इस बार उन्होंने एक नया रास्ता निकाला है। इस योजना के तहत सऊदी अरब, यूएई, कतर और तुर्की जैसे अमीर खाड़ी देशों (Gulf Countries) को मिलाकर एक 'इंटरनेशनल इन्वेस्टमेंट फंड' बनाया जाएगा, जो ईरान में बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण के लिए निवेश करेगा। इसके अलावा कतर और ओमान जैसे देशों में फ्रीज (जब्त) पड़े ईरान के करीब १२ बिलियन डॉलर (९६,००० करोड़ रुपये) भी जारी किए जा सकते हैं, जिसका इस्तेमाल ईरान केवल दवाइयां और मानवीय जरूरत का सामान खरीदने के लिए कर सकेगा।

इस पूरी डील के बीच सबसे बड़ा विवाद दोनों देशों के बयानों को लेकर खड़ा हो गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सोशल मीडिया (Truth Social) पर दावा किया है कि ईरान के साथ शांति समझौते की शर्तों को लगभग अंतिम रूप दे दिया गया है और ईरान को अपने परमाणु हथियार कार्यक्रम को पूरी तरह बंद करना होगा और अपने अत्यधिक संवर्धित यूरेनियम (Highly Enriched Uranium) का भंडार अमेरिका या अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों को सौंपना होगा। ट्रम्प का कहना है कि वे 'अमेरिका फर्स्ट' की नीति के तहत ही कोई डील साइन करेंगे। दूसरी तरफ, ईरान के विदेश मंत्रालय ने ट्रम्प के इन दावों को खारिज करते हुए कहा है कि अभी तक किसी भी अंतिम मसौदे को मंजूरी नहीं दी गई है। ईरान का कहना है कि उसका परमाणु कार्यक्रम और मिसाइलें उसकी संप्रभुता का हिस्सा हैं और वे इस पर कोई समझौता नहीं करेंगे।

फिलहाल, इस प्रस्तावित समझौते के तहत दोनों देशों के बीच ६० दिनों के लिए एक अस्थायी सीजफायर (युद्धविराम) लागू किया जाएगा। इस दौरान ईरान को स्ट्रेट ऑफ होर्मुज से सभी समुद्री बारूदी सुरंगों (Mines) को हटाना होगा और अंतरराष्ट्रीय जहाजों से कोई टैक्स नहीं वसूलने का वादा करना होगा। बदले में अमेरिका अपनी नौसेना की नाकेबंदी को धीरे-धीरे हटाएगा और ईरान को तेल बेचने के लिए प्रतिबंधों में कुछ ढील देगा। यह ६० दिनों का समय दोनों देशों के लिए एक टेस्टिंग पीरियड होगा, जिसमें यदि ईरान परमाणु हथियारों से दूरी बनाने की शर्तों को पूरा करता है, तभी उसे २५ लाख करोड़ रुपये के अंतरराष्ट्रीय निवेश फंड का लाभ मिलना शुरू होगा। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने इस बातचीत को सकारात्मक बताया है, लेकिन अंतिम फैसला राष्ट्रपति ट्रम्प की अंतिम मुहर के बाद ही होगा। ■

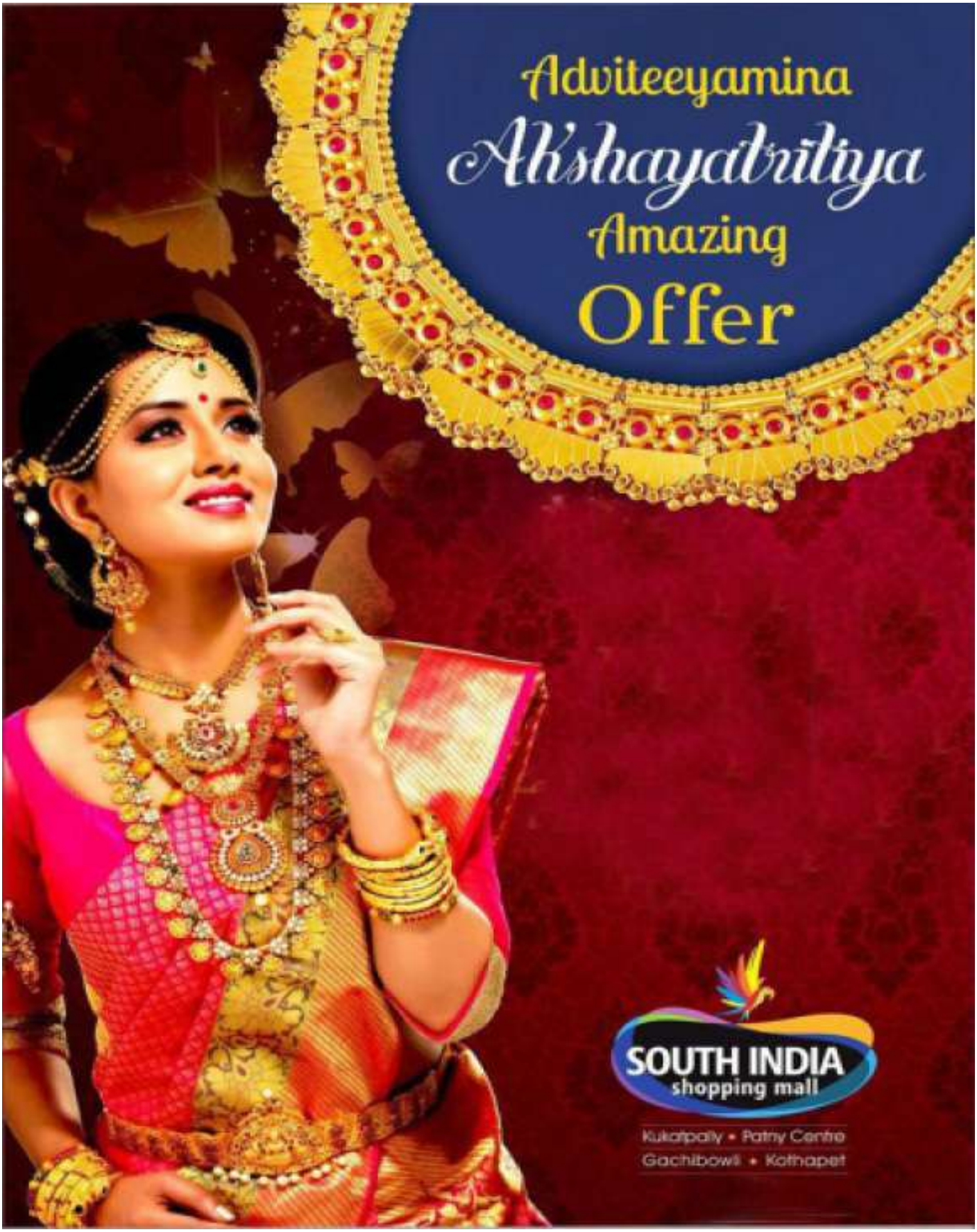
Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall
Kukatpally • Patny Centre
Gachibowli • Kothapet

अरबी की खेती

कम लागत, अधिक मुनाफा

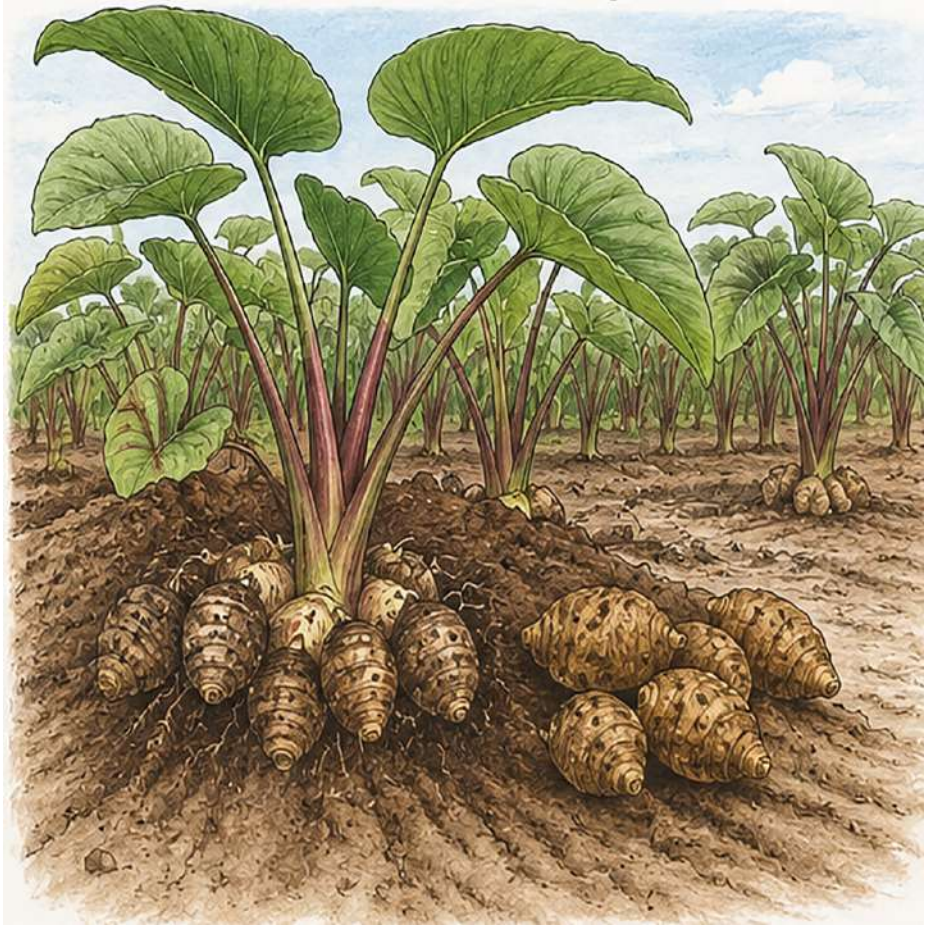

भारत की खेती इस समय एक बड़े बदलाव के दौर से गुजर रही है। एक तरफ पारंपरिक फसलें बढ़ती लागत, मौसम की अनिश्चितता और घटते मुनाफे के कारण किसानों को परेशान कर रही हैं, तो दूसरी तरफ नकदी और सब्जी फसलों की ओर झुकाव तेजी से बढ़ रहा है। इसी बदलाव के बीच अरबी की खेती एक ऐसे विकल्प के रूप में सामने आई है जिसे अब केवल 'घरेलू सब्जी' मानकर नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

कुछ साल पहले तक अरबी को सीमित बाजार वाली साधारण फसल समझा जाता था, लेकिन अब तस्वीर बदल चुकी है। शहरों में बढ़ती आबादी, होटल-रेस्टोरेंट उद्योग का विस्तार, फास्ट फूड और प्रोसेस्ड फूड सेक्टर की मांग ने इसकी खपत बढ़ा दी है। कई राज्यों में अरबी के चिप्स, फ्रोजन उत्पाद और पैकेज्ड सब्जियों का बाजार धीरे-धीरे तैयार हो रहा है।

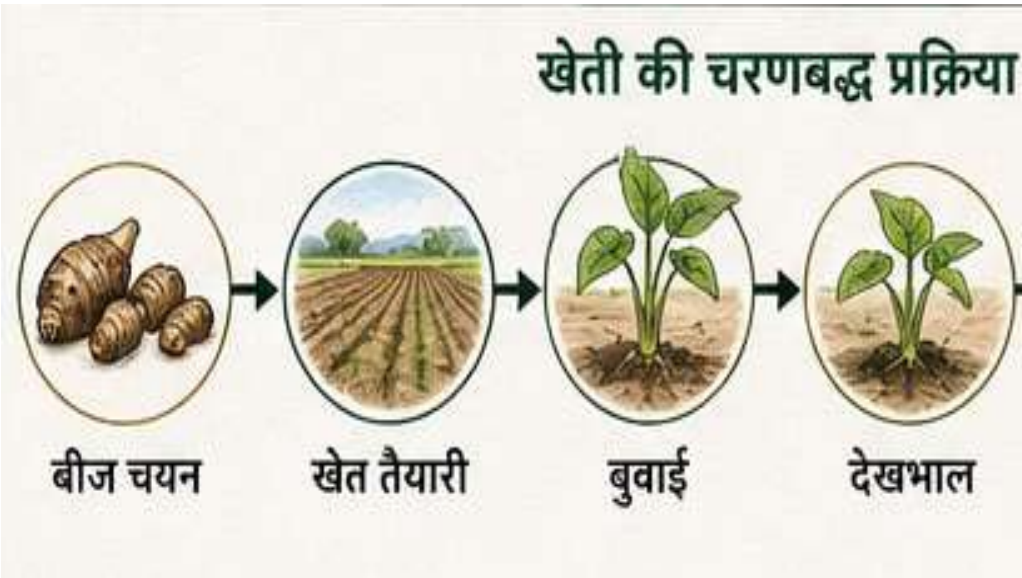

यानी अरबी अब सिर्फ खेत की फसल नहीं रही, बल्कि 'एग्री-बिजनेस' का हिस्सा बनती जा रही है।

आखिर किसान अरबी की खेती की ओर क्यों बढ़ रहे हैं?

इसका जवाब सीधा है –

कम समय, अपेक्षाकृत कम जोखिम और बेहतर नकद आय।

जहां गेहूं या धान जैसी पारंपरिक फसलों में किसान कई महीनों तक फंसे रहते हैं और MSP या मंडी व्यवस्था पर निर्भर हो जाते हैं, वहीं अरबी जैसी सब्जी फसलें सीधे बाजार से जुड़ने का मौका देती हैं।

कई छोटे किसान अब समझ चुके हैं कि सिर्फ अधिक उत्पादन से कमाई नहीं बढ़ती। असली खेल बाजार मांग का है। अगर बाजार में मांग स्थिर हो और फसल जल्दी बिक जाए, तो कम जमीन वाला किसान भी अच्छा मुनाफा निकाल सकता है। अरबी इसी कारण आकर्षण का केंद्र बन रही है।

मिट्टी और मौसमः खेती की सफलता की पहली शर्त

अरबी की खेती हर जगह सफल नहीं होती। यही वह सच्चाई है जिसे कई किसान नजरअंदाज कर देते हैं। इसके लिए अच्छी जल निकासी वाली दोमट या बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है।

अगर खेत में पानी रुकता है, तो कंद सड़ने लगते हैं और पूरी फसल प्रभावित हो सकती है।

भारत में अक्सर किसान 'जो खेत खाली मिला उसमें फसल लगा दो' वाली मानसिकता से काम करते हैं। यही वजह है कि कई बार लागत निकलना भी मुश्किल हो जाता है।

अरबी ऐसी फसल है जिसमें मिट्टी की तैयारी और खेत का चुनाव सीधे उत्पादन तय करते हैं।

मौसम की बात करें तो हल्की गर्म और नम जलवायु इसकी बढ़वार के लिए बेहतर रहती है। अधिक ठंड या लगातार जलभराव दोनों नुकसानदायक हैं।

खेत की तैयारीः यहीं से तय होता है उत्पादन

बहुत से किसान बीज और खाद पर ध्यान देते हैं, लेकिन खेत की संरचना पर नहीं।

असल में अरबी की खेती में खेत की तैयारी सिर्फ औपचारिकता नहीं बल्कि उत्पादन की नींव है। खेत की २ से ३ गहरी जुताई करनी चाहिए ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाए। इसके बाद सड़ी हुई गोबर खाद या कम्पोस्ट मिलाना लाभदायक रहता है।

यहां एक बड़ा अंतर समझना जरूरी है –

रासायनिक खाद फसल को तेजी से बढ़ा सकती है, लेकिन लगातार उन्हीं पर निर्भर रहने से मिट्टी कमजोर होती जाती है।

जैविक पदार्थों की कमी वाली मिट्टी में कंद का आकार और गुणवत्ता दोनों प्रभावित होते हैं।

आज भारत की बड़ी कृषि समस्या यही है कि किसान 'तुरंत उत्पादन' के चक्कर में मिट्टी की सेहत खराब कर रहे हैं।

बीज चयनः किसान की सबसे बड़ी गलती

अरबी की खेती में बीज ही भविष्य तय करता है।

फिर भी कई किसान बाजार से सस्ता और बचा हुआ कंद खरीदकर बुवाई कर देते हैं।

परिणाम?

कम अंकुरण, रोग और कमजोर उत्पादन।

स्वस्थ, रोगमुक्त और मध्यम आकार के कंद ही लगाने चाहिए।

एक हेक्टेयर में लगभग १५ से १८ क्विंटल बीज की आवश्यकता होती है।

बीज उपचार को आज भी गांवों में कई किसान 'फालतू खर्च' मानते हैं, जबकि यही छोटा कदम

हजारों रुपये का नुकसान बचा सकता है।

सिंचाईः ज्यादा पानी भी दुश्मन, कम पानी भी

अरबी की खेती का सबसे जटिल हिस्सा सिंचाई प्रबंधन है। कई किसान सोचते हैं कि सब्जी फसल है तो ज्यादा पानी चाहिए। यही सबसे बड़ी गलती बन जाती है। अत्यधिक नमी से कंद सड़ने लगते हैं और फफूंद रोग तेजी से फैलते हैं। दूसरी तरफ लंबे समय तक सूखा रहने पर कंद का विकास रुक जाता है। इसलिए संतुलित सिंचाई बेहद जरूरी है। अगर बारिश अधिक हो रही हो तो खेत से पानी निकालने की व्यवस्था पहले से करनी चाहिए।

खरपतवार और रोगः असली नुकसान यहीं होता है

भारत में खेती का एक बड़ा संकट यह भी है कि किसान रोकथाम पर कम और इलाज पर ज्यादा खर्च करते हैं। अरबी की फसल में पत्ती झुलसा रोग, कंद सड़न और फफूंद संक्रमण आम समस्याएं हैं। इनका मुख्य कारण खराब जल निकासी और संक्रमित बीज होते हैं।

कई बार किसान तब तक इंतजार करते रहते हैं जब तक बीमारी पूरी फसल में फैल नहीं जाती। फिर दवा पर खर्च बढ़ता है लेकिन परिणाम सीमित मिलता है।

अगर समय पर निगरानी की जाए, जैविक घोलों का प्रयोग किया जाए और खेत को साफ रखा जाए तो नुकसान काफी कम किया जा सकता है।

बाजार की सच्चाईः उत्पादन नहीं, बिक्री तय करती है कमाई

यहीं सबसे बड़ा भ्रम टूटता है।

भारत में किसान अक्सर यह सोचते हैं कि ज्यादा उत्पादन मतलब ज्यादा मुनाफा।

लेकिन वास्तविकता यह है कि बाजार तक पहुंच और सही समय पर बिक्री ज्यादा महत्वपूर्ण है। अरबी का भाव मौसम और मांग के अनुसार तेजी से बदल सकता है।अगर एक ही समय में बहुत ज्यादा फसल बाजार में पहुंच गई, तो दाम गिर जाते हैं। यानी खेती सिर्फ खेत तक सीमित नहीं रही। अब किसान को बाजार, भंडारण, सप्लाई चेन और ग्राहक की मांग भी समझनी होगी।

जो किसान सीधे स्थानीय बाजार, होटल, सब्जी विक्रेताओं या ऑनलाइन सप्लाई चैन से जुड़ रहे हैं, वे ज्यादा लाभ कमा रहे हैं।

क्या अरबी की खेती हर किसान के लिए सही है?

नहीं।

यह सच सुनना जरूरी है।

अगर किसान के पासः

जल निकासी की सही व्यवस्था नहीं है,

बाजार तक पहुंच कमजोर है,

नियमित निगरानी का समय नहीं है,

या वह सिर्फ 'दूसरे किसान को देखकर' खेती करना चाहता है, तो नुकसान भी हो सकता है।

भारत में कई किसान ट्रेंड देखकर फसल बदलते हैं, लेकिन बाजार का अध्ययन नहीं करते। परिणामस्वरूप कुछ वर्षों बाद वही फसल घाटे का सौदा बन जाती है। अरबी की खेती यह संकेत देती है कि आने वाला समय विविध खेती और बाजार-आधारित कृषि का होगा।

अब सिर्फ मेहनत करने वाला किसान नहीं, बल्कि योजना बनाने वाला किसान आगे बढ़ेगा।

जो किसान मिट्टी, मौसम, बाजार और तकनीक – इन चारों को साथ लेकर चलेगा, वही टिक पाएगा। अरबी जैसी फसलें छोटे किसानों को अवसर जरूर देती हैं, लेकिन बिना योजना के की गई खेती अवसर से ज्यादा जोखिम भी बन सकती है। खेती अब केवल हल और बीज का काम नहीं रही। यह अब पूरी तरह आर्थिक रणनीति का हिस्सा बन चुकी है। ■

उत्पादन और लाभ (प्रति हेक्टेयर)

• उत्पादन	200–250 क्विंटल
• लागत	60,000 – 80,000 रु.
• औसत विक्रय मूल्य	12 – 20 रु./किग्रा.
• संभावित आय	2,40,000 – 4,00,000 रु.
• शुद्ध लाभ	1,60,000 – 3,20,000 रु.

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें। आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा। किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount
1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

साइबर ठगी से बचें!

आपकी सुरक्षा
हमारी जिम्मेदारी

सतर्क रहें, सुरक्षित रहें

याद रखें

- अपना OTP, PIN, पासवर्ड किसी के साथ साझा न करें।
- किसी अनजान लिंक पर क्लिक न करें।
- बैंक अधिकारी बनकर कॉल करने वालों पर भरोसा न करें।
- सिर्फ आधिकारिक वेबसाइट और ऐप का ही उपयोग करें।

ठगी का शिकार हो गए?
तुरंत कॉल करें

राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन
1930

शिकायत दर्ज करें: www.cybercrime.gov.in

एक छोटी सी सावधानी, आपको बड़ी नुकसान से बचा सकती है

जनहित में जारी